प्रेमचन्द

सुभाषित और सूक्तियाँ

सम्पादक

श्री शरण

प्रकाशक

नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्ज

दरीबा कलाँ, दिल्ली

दो शब्द

हिन्दी जगत स्रष्टा, उपन्यास सम्राट्, साम्यवाद के सन्देशवाहक भारत के गोर्की, साहित्य के गाँधी, ग्राम्य जीवन के अनूठे चित्रकार, और आदर्श कहानीकार, प्रेमचन्द जी के विचार, गगन मे टिमटिमाते तारा-गणों के समान असंख्य और सागर के समान गहरे है। उनका संकलन करना उतना ही दुस्साध्य है जितना उनकी तह तक पहुँचना। यही थी एक भीषण समस्या मेरे सन्मुख।

इस समस्या का समाधान हुआ यह पुस्तक लिखकर। प्रेमचन्द साहित्य जितना गहन और गम्भीर है, उतना ही विस्तृत भी। लगभग एक दर्जन उपन्यास, तीन सौ कहानियाँ, तीन नाटक और अनेक अनुवाद तथा जीवनियाँ एवं निबन्धों में लेखक की भावनायें, विचार और उद्‌गार यत्र-तत्र कोने-कोने में छिपे-छिपे झाँकते हैं। उनको उक्त स्थानो से निकाल कर एक स्थान पर संकलन करना ही पुस्तक का ध्येय है।

प्रेमचन्द की सुभाषित और सूक्तियो मे ही वास्तविक प्रेमचन्द बोलता है। ऐसा केवल मैंने ही अनुभव नहीं किया अपितु आप सब भी इस पुस्तक का अवलोकन कर इसी मत से सहमत होंगे। जहाँ तक हो सका है, इन विचार-कलियों को भिन्न भिन्न शीर्षक-मालाओ मे पिरोने का प्रयत्न मैंने किया है।

जीवन की विविध झाँकियों मे बचपन से लेकर बुढ़ापे तक, मनो-वृत्तियों में दया और क्षमा से लेकर भय और संकोच तक, पक्ष-विपक्ष के विचारों में सत्य और मिथ्या से लेकर प्रेम और वासना तक, नारी के

विभिन्न रूपों में विधवा और परित्यक्ता से लेकर वेश्या तक, समाज के भिन्न-भिन्न चित्रों में भाई-बन्धु से लेकर दुनियाँ तक, पृथक्-पृथक् व्यवसायियो में किसान और क्लर्क से लेकर सिपाही और सम्पादक तक, रीति-रिवाजो में दान-दहेज से लेकर विवाह प्रथा तक, शिक्षा के क्षेत्र में स्त्री शिक्षा से लेकर सहशिक्षा तक, आवश्यक मानवीय वस्तुओं में भोजन से लेकर आभूषण तक, विभिन्नवाद एवं सघर्षो में साम्यवाद से लेकर, आदर्शवाद तक और ऐसे ही असंख्य फुटकर विचार-क्षेत्रो में प्रेमचन्द ने पदार्पण किया है, जिसका मूर्तरूप उनके यह सुभाषित और सूक्तियाँ हैं।

इनका चयन अभिव्यक्ति चातुर्य को ध्यान मे रखकर स्वेच्छा से वर्ण-क्रमानुसार किया गया है। जिज्ञासु-बन्धुओं की सुविधा के लिए इनका उद्-गम स्थल नीचे दे दिया गया है। फिर भी हो सकता है कि मेरे इस चयन से किसी कारणवश, किसी बन्धु का मत भेद हो, उनका परामर्श लेने के लिए सदैव तत्पर हूँ।

३/५ लोथियन रोड, कश्मीरी गेट दिल्ली। —शरण

अनुक्रमणिका

अंधे

भारत मे अघे आदमियो के लिए न नाम की ज़रूरत है, न काम की, सूरदास उनका बना बनाया नाम है, और भीख माँगना बना बनाया काम। उनके गुण और स्वभाव भी जगत प्रसिद्ध हैं—गाने बजाने मे विशेष रुचि, हृदय मे विशेष अनुराग, अध्यात्म और भक्ति मे विशेष प्रेम उनके स्वाभाविक लक्षण है। बाह्य दृष्टि बंद और अतर्दृष्टि खुली हुई।

—रंगभूमि

चचल प्रकृति बालको के लिए अघे विनोद की बात हुआ करते हैं।

—रंगभूमि

अंधो की आँखे न खुले, पर मन तो खुल सकता है। —रंगभूमि

अघे पेट के बडे गहरे होते है, इन्हे बडी दूर की सूझती है।

—रंगभूमि

अधो मे मुरौवत नही होती। —रंगभूमि

अघे को कुएँ मे गिरने से बचाना हरेक प्राणी का धर्म है।

—कायाकल्प

नई बीवी पाकर आदमी अधा हो जाता है। —निर्मला

अपना-पराया

दूसरो के लिए कितना ही मरो, तो भी अपने नही होते। पानी तेल मे कितना ही मिले; फिर भी अलग रहेगा।

—मानसरोवर-स्वामिनी

अपना अपना ही है। दूसरा अपना हो जाये, तो अपनो के लिए कोई क्यो रोये ?

—मानसरोवर-लांछन

दूसरो को उपदेश करना सहज है। जब अपने सिर पडती है, तो आँखें खुलती हैं।

—रंगभूमि

हम दूसरो का अहित करते हुए जरा भी नही झिझकते; किन्तु जब दूसरो के हाथो हमे कोई हानि पहुँचती है, तो हमारा खून खौलने लगता है।

—रगभूमि

जो अपने घर मे ही सुधार न कर सका हो, उसका दूसरो को सुधारने की चेष्टा करना बडी भारी धूर्तता है।

—सेवासदन

जो अपने है, वे न भी पूछे, तो भी अपने ही रहते हैं।

—मानसरोवर-स्वामिनी

जो मनुष्य अपनो का पालन न कर सका, वह दूसरो की किस मुँह से मदद करेगा।

—कायाकल्प

जिसे अपना समझो, वह अपना है, जिसे गैर समझो, वह गैर है।

—मानसरोवर-अलग्योझा

अपमान

अपमान अन्याय से अच्छा है। —रंगभूमि

अपमान को निगल जाना चरित्र पतन की अंतिम सीमा है। —रंगभूमि

पुरुष का अपमान एक साधारण बात है। स्त्री का अपमान करना, आग मे कूदना है। —प्रतिज्ञा

अपराध और दंड

अपराध और दंड मे कारण और कार्य का सम्बन्ध है। —रंगभूमि

कर्म का दण्ड कर्म से कही भयंकर होता है। —कायाकल्प

अगर दड का विधान संसार से उठ जाए, तो यहाँ रहे कौन? सारी पृथ्वी रक्त से लाल हो जाये, हत्यारे दिन दहाडे लोगो का गला काटने लगें। दंड ही से समाज की मर्यादा कायम है। जिस दिन दड न रहेगा, संसार न रहेगा। और किसी विचार से नही तो मर्यादा की रक्षा के लिए दंड अवश्य देना चाहिए। —मानसरोवर-खुचड

जो नुकसान करता है, उसे उसका दंड भोगना पडता है। —मानसरोवर-खुचड़

जिस प्रकार विरले ही दुराचारियों को अपने कुकर्मो का दड मिलता है उसी प्रकार सज्जनता का दंड पाना अनिवार्य है। उसका चेहरा,

उसकी आँखें, उसके आकार प्रकार सब जिह्वा बन बन कर उसके प्रतिकूल साक्षी देते हैं। उसकी आत्मा स्वय अपना न्यायाधीश बन जाती है।

—सेवासदन

हृदय की दुर्बलता हमारे अपराधो का ईश्वरीय दड है।

—प्रेमाश्रम

जिसकी सूरत से लोगो को घृणा है, उसे मारने पर भी अगर कठोर दड दिया जाए तो मैं यही कह सकता हूँ कि ईश्वर के घर में भी न्याय का नाम नही है।

—मानसरोवर-धिक्कार

आत्मा-सेवा से कडा दूसरा अपराध नही। —गोदान

दड अपराध के अनुकूल होना चाहिए, नही तो यह अन्याय है।

—मानसरोवर-दंड

अभिमान

अभिमान हमेशा नीचता से दूर भागता है। —सेवासदन

अभिमानी मनुष्य को कृतघ्नता से जितना दुःख होता है उतना और किसी बात से नही होता। वह चाहे अपने उपकारो के लिए कृतज्ञता का भूखा न हो, चाहे उसने नेकी करके दरिया ही मे डाल दी हो, पर उपकार का विचार करके उसको अत्यन्त गौरव का आनन्द प्राप्त होता है।

—सेवासदन

आदमी और जो कुकर्म करे, पर अभिमान न करे, इतराये नही, अभिमान किया और दीन दुनिया दोनो से गया।

—मानसरोवर-बड़े भाई साहब

आदमी का सबसे बड़ा दुश्मन गरूर है।

—मानसरोवर-दिल की रानी

अभिमान अपने अपमान को नही भूलता। —सेवासदन

सिपाही को अपनी लाल पगडी पर, सुन्दरी को अपने गहनो पर और वैद्य को अपने सामने बैठे हुए रोगियो पर जो घमण्ड होता है, वही किसान को अपने खेतो को लहराते हुए देख कर होता है।

—मानसरोवर-मुक्ति मार्ग

अशिक्षित

गँवारो की धर्म पिपासा ईट पत्थर पूजने से शात हो जाती है, भद्र जनो की भक्ति सिद्ध पुरुषो की सेवा से। उन्हे प्रत्येक दीवाना पूर्व-जन्म का कोई ऋषि मालूम होता है। उसकी गालियाँ सुनते हैं, उसके झूठे बर्तन धोते है, यहाँ तक कि उसके धूल-धूसरित पैरो को धोकर चरणामृत लेते हैं, क्योकि उन्हे उसकी काया मे कोई देवात्मा बैठी हुई मालूम होती है।

—रंगभूमि

गँवारो को हवा का रुख पहचानते देर नही लगती।

—कायाकल्प

आग

बाहर की आग केवल देह का नाश करती है, जो स्वयं नश्वर है, भीतरी आग अनन्त आत्मा का सर्वनाश कर देती है। —रंगभूमि

आग मे पिघल कर सभी धातुएँ एक सी हो जाती है। —कायाकल्प

आग आग से नही पानी से शात होती है। —कर्मभूमि

हमारे सामाजिक दुराचार अग्नि के समान हैं और ये अभागिन

रमणियाँ तृण के समान है। अगर अग्नि को शात करना चाहते हैं तो तृण को उससे दूर कर दीजिए, तब अग्नि आप ही शात हो जायेगी।

—सेवासदन

आत्म-सम्मान

अपना आदर करने वालो के सामने अपना अपमान कई गुण असह्य हो जाता है। —रंगभूमि

मैं भारी विडम्बनाएँ सह लूँगी, लोक निंदा की मुझे चिंता नही है मगर अपनी नज़रो मे गिरकर मैं ज़िदा नही रह सकती। यदि यही मान लूँ कि मेरे लिए चारो तरफ से द्वार बंद है तो भी मैं अपनी आत्मा को बेचने की अपेक्षा भूखो मर जाना अच्छा समझता हूँ। —रंगभूमि

जिसकी अपने घर मे इज्जत नही, उसकी बाहर भी इज्जत नही होती। —रंगभूमि

जी से जहान है, जब आबरू ही न रही, तो जीने पर धिक्कार है।

—रगभूमि

आवरू का बनाने-बिगाड़नेवाला आदमी नही है, भगवान है। उन्ही की निगाह मे आवरू बनी रहनी चाहिए। आदमियो की निगाह मे आवरू की परख कहाँ है। जब सूद खाने वाला बनिया, घूँस लेने वाला हाकिम और झूठ बोलने वाला गवाह बे आवरू नही समझा जाता, लोग उसका आदर मान करते हैं तो यहाँ सच्ची आवरु की कदर करने वाला कोई है ही नही। —रंगभूमि

प्रेम की भाँति मान भी घनिष्टता से उत्पन्न होता है। —रंगभूमि

संसार मे कोई ऐसी वस्तु भी है, जो संतान से भी अधिक प्रिय होती है? वह है आत्मगौरव। —रंगभूमि

आत्म सम्मान की रक्षा के लिए बाहुबल के सिवा कोई साधन नही ।

—कायाकल्प

आत्मसम्मान की रक्षा करना हमारा सबसे पहला धर्म है । आत्मा की हत्या करके अगर स्वर्ग भी मिले, तो वह नरक है ।

—कायाकल्प

आदर और सम्मान की भूख बडे आदमियो को ही होती है, किन्तु दीन दशा वाले प्राणियों को इसकी भूख और भी अधिक होती है क्योकि उनके पास इसके प्राप्त करने का कोई साधन नही होता । वे इसके लिए चोरी, छल कपट सब कुछ कर बैठते हैं । आदर मे वह सतोष है जो धन और भोग विलास मे भी नही ।

—सेवासदन

वह ज़हन किस काम का, जो हमारे गौरव की हत्या कर डाले ।

—मानसरोवर-बड़े भाई साहब

मान सम्मान उसी वक्त तक है, जब तक किसी के सामने मदद के लिए हाथ नही फैलाया जाय । यह आन टूटी. फिर कोई बात भी न पूछेगा ।

—गबन

आदर मे वह सतोष है जो धन और भोग विलास मे नही है ।

—वरदान

बेइज्जत होकर जीने से मर जाना अच्छा है ।

—प्रेमाश्रम

आबरू के सामने जान की कोई हकीकत नही ।

—मानसरोवर-हिंसा परमो धर्म:

सुख भोग की लालसा आत्म-सम्मान का सर्वनाश कर देती है ।

—मानसरोवर-परिश्रम

आत्मा

आत्मा की आयु दीर्घ होती है। उसका गला कट जाए, पर प्राण नही निकलते।
—रंगभूमि

रस्मरिवाज से विवश होकर मनुष्य को बहुधा अपनी आत्मा के विरुद्ध आचरण करना पडता है।
—रंगभूमि

बालू से मोती नही निकलते, भौतिक ज्ञान से आत्मा को ज्ञान नही प्राप्त होता।
—कायाकल्प

आत्मा पर विजय पाने का आशय निर्लज्जता या विषय कामना नहीं बल्कि इच्छाओ का दमन करना और कुवृत्तियो को रोकना है।
—कायाकल्प

अगर अपनी आत्मा की हत्या करके हमारा उद्धार भी होता हो तो हमे आत्मा की हत्या नही करनी चाहिए।
—कायाकल्प

आत्मा को आत्मा ही की आवाज़ जगा सकती है। —कायाकल्प

आत्मा कुछ न कुछ जरूर कहती है, उसकी सलाह मानना तुम्हारा धर्म है।
—कायाकल्प

आत्मा की हत्या करके अगर स्वर्ग भी मिले, तो वह नरक है।
—कायाकल्प

आत्माएँ एक जन्म का अधूरा काम पूरा करने के लिए फिर उसी घर मे जन्म लेती है।
—कायाकल्प

आत्मा का सन्तोष जीवन का तत्व है, मूल्य है।
—मानसरोवर-दो सखियां

आत्मा तर्क से परास्त हो सकती है, परिणाम का भय तर्क से नही होता। वह पर्दा चाहता है।
—सेवासदन

जिस देह मे पवित्र और निष्कलक आत्मा रहती है, वह देह भी पवित्र और निष्कलंक रहती है। —कायाकल्प

निर्लज्जता सब कष्ट से दुःसह है। और कष्टो से शरीर को दु.ख होता है, इस कष्ट से आत्मा का सहार हो जाता है। —सेवासदन

आत्मोन्नति के लिए कठिनाइयो से बढकर कोई विद्यालय नही, कठिनाइयो ही मे ईश्वर के दर्शन होते है, और हमारी उच्चतम शक्तियाँ विकास पाती है। जिसने कठिनाइयो का अनुभव नही किया, उनका चरित्र बालू की भीत है, जो वर्षा के पहले ही झोके मे गिर पडती है। उस पर विश्वास नही किया जा सकता। महान आत्माये कठिनाइयो स्वागत किया करती है, उनसे घबराती नही क्योकि यहाँ आत्मोत्कर्ष के जितने मौके मिलते है, और उतने किसी दिशा मे नही मिल सकते।

—कायाकल्प

दासत्व के दारुण निर्दय आघातो से आत्मा का भी ह्रास हो जाता है। —प्रेमाश्रम

मनुष्य मे एक ही साथ दो भिन्न भिन्न प्रवृत्तियो का समावेश नही हो सकता, एक आत्मा दो रूप नही धारण कर सकती।

—प्रेमाश्रम

आत्मा ऋद्धि लालसा के नीचे दब कर निर्जीव हो जाती है।

—प्रेमाश्रम

परमात्मा से आत्मा का जो घनिष्ट सम्बन्ध है, उसके सामने मानव कृत सम्बन्ध की कोई हस्ती नही हो सकती। —प्रेमाश्रम

वर्षों की चिन्ता, दुःख, ईर्ष्या और नैराश्य के सताप से जर्जर शरीर आत्मा के रहने योग्य नही रहता। —कायाकल्प

हमारी आत्मा ब्रह्म का ज्योति स्वरुप है, उसे मैं देश तथा इच्छाओ और चिन्ताओ से मुक्त रखना चाहता हूँ। आत्मा के लिए पूर्ण अखण्ड स्वतत्रता सर्वश्रेष्ठ वस्तु है। —प्रेमाश्रम

परमात्मा बड़ा दयालु और करुणाशील है। आत्मा अपने को भूल

लोगो को भोजन का ठिकाना नही, वे भी गहनो के पीछे प्राण देते है। ·· ·· जहाँ धन शृंगार मे खर्च होता है उससे, उन्नति और उपकार की जो महान शक्तियाँ है, उन दोनो का ही अन्त हो जाता है। बस यही समझ लो कि जिस देश के लोग जितने ही मूर्ख होगे, वहाँ जेवरो का प्रचार भी उतना ही अधिक होगा। —गबन

वह धन जो भोजन मे खर्च होना चाहिए, बाल-बच्चो का पेट काट कर गहनो की भेट कर दिया जाता है। बच्चो को दूध न मिले कोई परवाह नही। पर देवी जी गहना जरूर पहनेंगी और स्वामी जी गहने जरूर बनवायेंगे यह गुलामी पराधीनता से कही बढकर है। इसके कारण हमारा कितना आत्मिक, नैतिक, दैहिक, आर्थिक और धार्मिक पतन हो रहा है, इसका अनुमान ब्रह्मा भी नही कर सकते! —गबन

अलकार भावो के अभाव का आवरण है। —कायाकल्प

गहने ही स्त्री की सम्पत्ति होते है। पति की और किसी सम्पत्ति पर उसका अधिकार नही होता। इन्ही का उसे वल और गौरव होता है। एक एक गहना मानो विपत्ति और बाधा से बचाने के लिए एक एक रक्षास्त्र है। —निर्मला

स्त्री का गहना ईख का रस है, जो पेरने ही से निकलता है।

—मानसरोवर-बेटी का धन

आभूषणो से आत्मा ऊँची नही हो सकती।

—मानसरोवर-ब्रह्म का स्वाग

गहनो से कुछ लाभ नही, एक तो धातु अच्छी नही मिलती, उस पर सोनार रुपये के आठ-आठ आने कर देता है, और सबसे बड़ी बात यह है कि घर मे गहने रखना चोरो को नेवता देना है। घडी भर के शृंगार के लिए इतनी विपत्ति सिर पर लेना मूर्खों का काम है।

—मानसरोवर-कौशल

आय

पसीने की कमाई खाने वालो का दिवाला नही निकलता, दिवाला उन्ही का निकलता है जो दूसरो की कमाई खा खा कर मोटे होते है। वे सभी पापी हैं जो औने पौने करके इधर सौदा उधार बेचकर अपना पेट पालते है। सच्ची कमाई उन्ही की है जो छाती फाड़कर धरती से धन निकालते है। —रंगभूमि

धर्म की कमाई मे बल होता है। —रंगभूमि

लूट की कमाई को हराम समझने के लिये शरा का पाबन्द होने की जरुरत नही है। —गोदान

हराम की कमाई हराम मे जायगी। —गोदान

मासिक वेतन तो पूर्णमासी का चाँद है, जो एक दिन दिखाई देता है और घटते घटते लुप्त हो जाता है। ऊपरी आय बहता हुआ स्त्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है। वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमे वृद्धि नही होती। ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसी से उस मे बरकत होती है। —मानसरोवर-नमक का दारोगा

आमदनी पर सबकी निगाह रहती है, खर्च कोई नही देखता

—मानसरोवर-बैर का अंत

आवेग और संयम

आवेग मे हम उद्दिष्ट स्थान से आगे निकल जाते है। वह सयम कहाँ है जो शत्रु पर विजय पाने के बाद तलवार को म्यान मे कर दे।

—रंगभूमि

सयम शील पुरुष बडी मुश्किल से फिसलते है, मगर जब एक बार फिसल गये तो किसी प्रकार नही सँभल सकते, उनकी कुंठित वासनाएँ, उनकी पिजरबद्ध इच्छाएँ, उनकी सयत प्रवृत्तियाँ बडे प्रबल वेग से प्रतिकूल दिशा की ओर चलती है। —रंगभूमि

बडे २ महान सकल्प आवेग मे ही जन्म लेते है। —निर्मला

सयम वह मित्र है, जो जरा देर के लिए चाहे आँखो से ओझल हो जाय, पर धारा के साथ वह नही सकता, सयम अजेय है, अमर है,

—कायाकल्प

आँसू

स्त्रियो के आँसू पानी हैं, वे धैर्य और मनोबल के ह्रास के सूचक है।

—प्रेमाश्रम

अश्रु-प्रवाह तर्क और शब्द योजना के लिये निकलने का कोई मार्ग नही छोडता। —रंगभूमि

छलके हुए दूध पर आंसू बहाना व्यर्थ है। —कायाकल्प

आशा-निराश

आशा उस घास की भाँति है जो ग्रीष्म के ताप से जल जाती है, भूमि पर उसका निशान तक नही रहता, धरती ऐसी उज्जवल हो जाती है, जैसे टकसाल का नया रुपया , लेकिन पावस की बूँद पडते ही फि जली हुई जडे पनपने लगती हैं, और उसी शुष्क स्थल पर हरियाल लहराने लगती है ।
—रंगभूमि

आशा जड की ओर ले जाती है, निराशा चैतन्य की ओर । आश आँखे बन्द कर देती है, निराशा आँखे खोल देती है । आशा सुलाने वाल थपकी है, निराशा जगाने वाला चाबुक ।
—रंगभूमि

आशावादी परमात्मा का भक्त होता है, पक्का ज्ञानी, पूर्ण ऋषि उसे चारो ओर परमात्मा ही की ज्योति दिखाई देती है । इसी से उ भविष्य पर अविश्वास नही होता ।
—रंगभूमि

आशा निर्बलता से उत्पन्न होती है, पर उसके गर्भ से शक्ति का जन्म होता है ।
—रंगभूमि

आशा उत्साह की जननी है, आशा मे तेज है, बल है, जीवन है आशा ही ससार की सचालक शक्ति है । मानसरोवर—सवा सेर गे

जीवन मे ऐसे अवसर भी आते हैं, जब निराशा मे भी आशा होती है ।
—गब

नैराश्य के सताप से व्यक्ति कर्त्तव्य पर ध्यान नही देता है ।
—निर्मल

युवाकाल की आशा पुआल की आग है जिसके जलने और बुझने मे देर नही लगती ।
—सेवासदन

निराशा असम्भव को सम्भव बना देती है।

मानसरोवर—बैंक का दिवाला

आशा मे ही सुधा का वास है। **—गोदान**

धनहीन प्राणी को जब कष्ट निवारण का कोई उपाय नही रह जाता तो वह लज्जा को त्याग देता है। निस्सन्देह नैराश्य ने यह भीषण रूप धारण कर लिया है। सामान्य दिशाओ मे नैराश्य अपने यथार्थ रूप मे आता है पर गर्वशील प्राणियो मे वह परिमार्जित रूप ग्रहण कर लेता है। वहाँ वह हृदयगत कोमल भावो का अपहरण कर लेता है– चरित्र मे अस्वाभाविक विकास उत्पन्न कर देता है—मनुष्य लोक लाज और उपहास की ओर से उदासीन हो जाता है, नैतिक बन्धन टूट जाते है। यह नैराश्य की अंतिम अवस्था है। **मानसरोवर—नैराश्य लीला**

आशाओ के बाग लगाने में हम कितने कुशल है। यहाँ हम रक्त के बीज बोकर सुधा के फल खाते है। अग्नि से पौधो को सीचकर शीतल छाँह मे बैठते है। **मानसरोवर—माता का हृदय**

ईर्ष्या और द्वेष

ईर्ष्या मे गुण ग्राहकता नही होती। **—रंगभूमि**

ईर्ष्या की व्यापकता ही साम्यवाद की सर्वप्रियता का कारण है।

—रंगभूमि

ईर्ष्या मे तम ही तम नही होता, कुछ सत भी होता है। **—रंगभूमि**

ईर्ष्या से कल्पनाशक्ति उर्वर हो जाती है। **—रगभूमि**

ईर्ष्या काल-क्रीडाओ को भी कपटनीति समझती है। **—रगभूमि**

द्वेष की अग्नि द्वेष्टा की उन्नति और सुदशा के साथ साथ तीव्र और प्रज्वलित होती है और उसी समय शात होती है जब द्वेष्टा के जीवन

का दीपक बुझ जाता है । —वरदान

ईर्ष्या कानो की पुतली होती है। प्रतियोगी के विषय मे वह सब कुछ सुनने को तैयार रहती है। —प्रतिज्ञा

ईर्ष्या भी मानव स्वभाव का एक अंग ही है, चाहे वह कितना ही अवहेलनीय क्यो न हो ? —प्रेमाश्रम

ऐसा कौन सा प्राणी होगा जो ईर्ष्या की क्रीड़ा का आनन्द न उठाना चाहे ? —प्रेमाश्रम

द्वेष की कानाफूसी शायद मधुर गान से अधिक शोकहारी होती है। —प्रेमाश्रम

वैमनस्य में अन्धविश्वास की चेष्टा होती है। —सेवासदन

द्वेष की आँखो मे गुण और भी भयंकर हो जाता है। —मानसरोवर-प्रायश्चित्त

गरीबों मे अगर ईर्ष्या या बैर है तो स्वार्थ के लिए या पेट के लिए। ऐसी ईर्ष्या और वैर को मे क्षम्य समझता हूँ। हमारे मुँह की रोटी कोई छीन ले, तो उसके गले मे उँगली डालकर निकालना हमारा धर्म हो जाता है। अगर हम छोड दे, तो देवता हैं। वडे आदमियो की ईर्ष्या और वैर केवल आनन्द के लिए हैं। गोदान

द्वेष का मायाजाल वडी मछलियो को ही फँसाता है। छोटी मछलियाँ या तो उसमे फँसती ही नही या तुरन्त निकल जाती है। उनके लिए घातक जाल क्रीड़ा की वस्तु है, भय की नही। —गोदान

ईर्ष्या अग्नि है; परन्तु अग्नि का गुण उसमे नही। वह हृदय को फैलाने के वदले और भी संकीर्ण कर देती है। मानसरोवर—मौत

जिस सुख योग से प्रारब्ध हमे वंचित कर देता है, उससे हमे द्वेष हो जाता है। गरीव आदमी इसीलिए तो अमीरो से जलता है और धन की निंदा करता है। —मानसरोवर-नैराश्य लीला

यह एक रहस्य है कि भलाइयो मे जितना द्वेष होता है, बुराइयो मे उतना ही प्रेम। विद्वान विद्वान को देखकर, साधु साधु को देखकर, और

कवि कवि को देखकर जलता है । एक दूसरे की सूरत देखना नहीं चाहता । पर जुआरी जुआरी को देखकर, शराबी शराबी को देखकर, चोर चोर को देखकर सहानुभूति दिखाता है, सहायता करता है । एक पंडित जी अगर अन्धेरे मे ठोकर खाकर गिर पडें, तो दूसरे पडित जी उन्हे उठाने के वदले दो ठोकरें और लगावेंगे कि वह फिर उठ ही न सकें । पर एक चोर पर आफत आई देख दूसरा चोर उसकी आकर खबर लेता है । बुराई से सब घृणा करते हैं, इसलिए बुरो मे परस्पर प्रेम होता है । भलाई की सारा ससार प्रशसा करता है, इसलिए भलो मे विरोध होता है । चोर को मारकर चोर क्या पावेगा ? घृणा ! विद्वान का अपमान करके विद्वान क्या पावेगा ? यश ।

—मानसरोवर-मुक्ति मार्ग

उदासीनता

उदासीनता बहुधा अपराध से भी भयकर होती है । —रंगभूमि

उदासीनता वैराग्य का एक सूक्ष्म स्वरूप है जो थोडी देर के लिए मनुष्य को अपने जीवन पर विचार करने की क्षमता प्रदान कर देती है । उस समय पूर्व स्मृतियाँ हृदय मे क्रीडा करने लगती है । —सेवासदन

उद्दण्डता

उद्दण्डता सरलता का केवल उग्र रूप है । —रंगभूमि

बाल्यवस्था के पश्चात् ऐसा समय आता है, जब उद्दण्डता की धुन

सिर पर सवार हो जाती है। उसमे युवाकाल की सुनिश्चित इच्छा नहीं होती। उसकी जगह एक विशाल आशावादिता है, जो दुर्लभ को सरल और असाध्य को मुँह का कौर समझती है। भाँति-भाँति की मृदु कल्पनाएँ चित्त को आन्दोलित करती रहती है। सैलानीपन का भूत सा चढा रहता है।·· ···अपनी क्षमता पर ऐसा विश्वास होता है कि बाधाएँ ध्यान मे भी नही आती, ऐसी सरलता जो अलाउद्दीन के चिराग को ढूँढ निकालना चाहती है। इस काल मे अपनी योग्यताओ की सीमाएँ अपरिमित होती हैं। —प्रेमाश्रम

उद्दण्डता ने उसके प्रतिवाद की उत्सुकता को सहानुभूति के रूप मे परिणित कर दिया। —सेवासदन

ऋण

देनदारो के लिए हिसाब का कागज यमराज का परवाना है। वे उसकी ओर ताकने का साहस नही कर सकते, हिसाब देखने का मतलब है, रुपये अदा करना। देनदार ने हिसाव का चिट्ठा हाथ मे लिया, और पानेवाले का हृदय आशा से विकसित हुआ। हिसाब का परत हाथ मे लेकर फिर कोई हीला नही किया जा सकता। यही करण है कि देनदार को खाली हाथ हिसाब देखने का साहस नही होता —रगभूमि

देनदारो को हिसाव के दिन का उतना ही भय होता है, जितना पापियो को। वे 'दो चार' 'बहुत जल्द' 'आजकल मे' आदि अनिश्चयात्मक शब्दो की आड लिया करते हैं। ऐसे वादे पूरे किए जाने के लिए नही, केवल पाने वालो को टालने के लिए किए जाते हैं। —रगभूमि

लिपी वद्ध ऋण अमर होता है, वचन वद्ध ऋण निर्जीव और नश्व । एक अरबी घोड़ा है जो एड नही सह सकता; या तो सवार का अत कर

देगा या अपना। दूसरा लद्दू टट्टू है जिसे उसके पैर नही; कोड़े चलाते है; कोडा टूटा या सवार का हाथ रुका और टट्टू बैठा, फिर नही उठ सकता। —रंगभूमि

कर्ज़ और फर्ज़ के रूप मे तो केवल थोडा सा अन्तर है; पर अर्थ मे ज़मीन और आसमान का फर्क है। —कायाकल्प

पुत्र माता के रिन से सौ जन्म लेकर भी उरिन नही हो सकता, लाख जन्म लेकर उरिन नही हो सकता, करोड जन्म लेकर भी नही।

—गोदान

ऋण चुकाने के दिन ज्यो २ पास आते जाते है, त्यो त्यो उसका ब्याज बढता जाता है। —मानसरोव-गरीब को हाय

कर्ज़ इस श्रेणी के मनुष्यो का आभूषण है।

—मानसरोवर दफ्तरी

क्लर्क

दफ्तर का बाबू एक बेज़बान जीव है। मज़दूर को आँखें दिखाओ तो वह त्योरियाँ बदल कर खडा हो जायेगा। कुली को एक डाँट बताओ, तो सिर से बोझ फेंककर अपनी राह लेगा। किसी भिखारी को दुत्कारो तो वह तुम्हारी ओर गुस्से की निगाह से देखकर चला जायेगा। यहाँ तक कि गधा भी कभी २ तकलीफ पाकर दो-लत्तियाँ झाडने लगता है, मगर बेचारे दफ्तर के बाबू को आप चाहे आँखे दिखायें, डाँट बताये, दुत्कारें, या ठोकरें मारें, उसके माथे पर बल न आयेगा। उसे अपने विकारो पर जो अधिपत्य होता है, वह किसी संयमी साधु मे भी न हो। सन्तोष का पुतला, सब्र की मूर्ति, सच्चा आज्ञाकारी, गरज उसमे तमाम मानवी अच्छाइयाँ मौजूद होती हैं। खँडहर के भी एक दिन

भाग्य जागते हैं, दीवाली के दिन उस पर भी रौशनी होती है, वरसात मे उस पर हरियाली छाती है, प्रकृति को दिलचस्पियो मे उसका भी हिस्सा है मगर इस गरीब बाबू के नसीब कभी नही जागते। इसकी अँधेरी तकदीर मे रोशनी का जलवा कभी नही दिखाई देता। इसके पीले चेहरे पर कभी मुस्कुराहट की रोशनी नजर नही आती। इसके लिए सूखा सावन है, कभी भरा भादो नही। —मानस-रोवर इस्तीफा

काम

काम उतना ही करना चाहिए, जितना आराम से हो सके। प्राण देकर थोडे ही काम किया जाता है। तुम आराम से रहोगे तो रुपये बहुत मिलेगे। —निर्मला

बाधाओ पर विजय पाना और अवसर देखकर काम करना ही मनुष्य का कर्तव्य है। —निर्मला

यह वर का धर्म है कि यदि वह स्वार्थ के हाथो बिलकुल विक नहीं गया है तो अपने आत्मबल का परिचय दे। अगर वह ऐसा नही करता तो वह लोभी है और कायर भी। —निर्मला

जब हम कोई काम करने की इच्छा करते हैं, तो शक्ति आप ही आ जाती है। —गबन

आदमी उतना काम करे, जितना हो सके। यह नही कि रुपये के लिए जान ही दे दे। —मानसरोवर-अलग्योझा

किसी को चाम नही प्यारा होता, काम प्यारा होता है।

—मानसरोवर-घासवाली

कार्यकुशल आदमी की सभी जगह जरुरत होती है।

—कायाकल्प

काम करके कुछ उपार्जन करना शर्म की बात नही। दूसरो का मुँह ताकना शर्म की बात है। —कर्मभूमि

आदमी उसी काम मे सफल होता है, जिसमे उसका जी लगता हो। —कर्मभूमि

किसी कठिन कार्य मे सफल हो जाना आत्म विश्वास के लिए सजीवनी के समान है। —कायाकल्प

मनुष्य जिस काम को हृदय से बुरा नही समझता, उसके कुपरिणाम का भय एक गौरव पूर्ण धैर्य की शरण लिया करता है। —प्रेमाश्रम

हर काम के लिए एक अवसर होता है। दान के अवसर पर दान देना चाहिए, नाच के अवसर पर नाच। बेजोड बात कभी नही लगती। — सेवासदन

मानसिक बोझ हल्का करने के लिए शारीरिक श्रम से बढकर और कोई उपाय नही है। —वरदान

जिस काम का आरम्भ ही अमंगल से हो, उसका अन्त मगलमय नही हो सकता। —निर्मला

बहुधा किसी काम को अच्छा समझकर भी हम उसमे हाथ लगाते हुए डरते है, नक्कू बन जाने का भय लगा रहता है। हम बडे आदमियो के आ मिलने की रहा देखा करते हैं। ज्योही किसी ने रास्ता खोला हमारी हिम्मत बँध जाती है, हमे हँसी का डर नही रहता। अकेले हम अपने घर मे भी डरते है। दो होकर जगलो मे भी निर्भय रहते हैं। —सेवासदन

कार्य क्षेत्र मे कुछ दिन रह जाने और संसार के कडवे अनुभव हो जाने के बाद हमारी प्रवृति मे ढीलापन आ जाता है। —कर्मभूमि

सार्वजनिक काम करने के लिए कही भी क्षेत्र की कमी नही, केवल मन मे नि स्वार्थ सेवा का भाव होना चाहिए। —कायाकल्प

अपना काम तो दिन भर करना ही है, एक क्षण भगवान का काम भी तो करना चाहिए। —मानसरोवर-सुजानभगत

काम करने वाले को रोटियो की कमी नही ।

—मानसरोवर-सुहाग का शव

हम वह काम करना चाहते हैं जिसमे हमारा नाम प्राणी मात्र की जिह्वा पर हो, कोई ऐसा लेख अथवा ग्रंथ लिखना चाहते है, जिसकी लोग मुक्तकठ से प्रशंसा करे, और प्राय: हमारे इस स्वार्थ प्रेम का कुछ न कुछ बदला भी हमको मिल जाता है । लेकिन जनता के हृदय मे हम घर नही कर सकते । —सेवासदन

अच्छे कामो की सिद्धि मे बडी देर लगती है, पर बुरे कामो की सिद्धि मे यह बात नही होती । —मानसरोवर-पच परमेश्वर

किसी को भी दूसरे के श्रम पर मोटे होने का अधिकार नही है । उपजीवी होना घोर लज्जा की बात है । कर्म करना प्राणी मात्र का धर्म है । —गोदान

बुरे कामो मे ही सहयोग की जरुरत नही होती । अच्छे कामो के लिए भी सहयोग उतना ही जरुरी है । —गोदान

वही काम बडे-बडे करते है, मुदा उनसे कोई नही बोलता, उन्हे कलक ही नही लगता । वही काम छोटे आदमी करते हैं, तो उनकी मर-जाद बिगड जाती है, नाक कट जाती है । —गोदान

काम सबको प्यारा होता है, चाम नही प्यारा होता । —गोदान

बुरा काम करोगे तो दुनिया बुरा कहेगी । —गोदान

खाली पेट मेहनत कैसे हो ? —गोदान

लोगो को अपने कारबार के सिवा, न दीन से गरज है न दुनिया से, न मुल्क से, न कौम से । —मानसरोवर-ग्रौड़म

सत्कर्म के लिए ससार मे स्थान नही ।—मानसरोवर-माता का हृदय

जिस काम के लिए परदे की जरुरत है, चाहे उसका उद्देश्य कितना ही पवित्र क्यो न हो, वह अपमान जनक है । —रंगभूमि

कायरता

शीतल विचार कायरता का दूसरा नाम है। —रंगभूमि

प्राण-भय से दबक जाना कायरो का काम है। —रंगभूमि

विजय के सन्मुख पहुँचकर कायर भी वीर हो जाते हैं, जैसे घर के समीप पहुँचकर थके हुए पथिक के पैरो मे भी पर लग जाते हैं।

—कायाकल्प

डरपोक प्राणियो मे सत्य भी गूँगा हो जाता है। —गोदान

कवि और कविता

कविता सच्ची भावनाओ का चित्र है और सच्ची भावनाएँ चाहे वे दुख की हो या सुख की, उसी समय सम्पन्न होती है जब हम दुःख या सुख का अनुभव करते है। कवि वह सपेरा है जिसकी पिटारी मे सर्पो के स्थान पर हृदय बन्द होते हैं। —वरदान

काव्य वही था, पर अलकार विहीन, इसलिए सरल और मार्मिक।

—सेवासदन

जिसे ससार दुःख कहता है, वहाँ कवि के लिए सुख है। धन और ऐश्वर्य, रूप और बल, विद्या और बुद्धि, ये विभूतियाँ ससार को चाहे कितनी ही मोहित कर ले, कवि के लिए यहाँ ज़रा भी आकर्षण नही है, उसके मोद और आकर्षण की वस्तु तो बुझी हुई आशाएँ और मिटी हुई स्मृतियाँ और टूटे हुए हृदय के आँसू हैं। जिस दिन इन विभूतियो मे

उसका प्रेम न रहेगा, उस दिन वह कवि न रहेगा। दर्शन जीवन के इन रहस्यो से केवल विनोद करता है, कवि उनमे लय हो जाता है।

—गोदान

किसान-खेती

मैं किसानो को कुली बनाने का कट्टर विरोधी हूँ। मैं नही चाहता कि वह लोभ के वश अपने बाल-बच्चो को छोडकर कम्पनी की छावनियो मे जाकर रहे और आचरण भ्रष्ट करे। अपने गाँव मे उनकी एक विशेष स्थिति होती है। उनमे आत्म-प्रतिष्ठा का भाव जाग्रत रहता है। बिरादरी का भय उन्हे कुमार्ग से बचाता है। कम्पनी की शरण मे जाकर वह अपने घर के स्वामी नही, दूसरो के गुलाम हो जाते हैं, और विरादरी के बन्धनो से मुक्त होकर नाना प्रकार की बुराइयाँ करने लगते है।

—प्रेमाश्रम

किसानो को विडम्बनाएँ इसलिए सहनी पडती है कि उनके लिए जीविका के और सभी द्वार बन्द है। निश्चय ही उनके लिए जीवन निर्वाह के अन्य साधनो का अवतरण होना चाहिए, नही तो उनका पारस्परिक द्वेष और सघर्ष उन्हे हमेशा जमीदारो का गुलाम बनाये रखेगा; चाहे कानून उसकी कितनी ही रक्षा और सहायता क्यो न करे; किन्तु यह साधन ऐसे होने चाहिए, जो उनके आचार व्यवहार को भ्रष्ट न करे। उन्हे घर से निर्वासित करके दुर्व्यसनो के जाल मे न फँसाये, उनके आत्माभिमान का सर्वनाश न करे और यह उसी दशा मे हो सकता है। जब घरेलू शिल्प प्रचार किया जाए और वह अपने गाँव मे कुल और विरादरी की तीव्र दृष्टि के सम्मुख अपना-अपना काम करते रहे।

—प्रेमाश्रम

नैतिक बन्धनो के होते हुए भी जमीदार कृषको पर नाना प्रकार के अत्याचार करते हैं और कृषको की जीविका का और कोई द्वार हो, तो वह इन आपत्तियो को कभी न झेल सके। —प्रेमाश्रम

वे हमारे दीन कृषक हैं जो अपने पसीने की कमाई खाते है, अपने जातीय भेष, भाषा और भाव का आदर करते है और किसी के सामने सिर नही झुकाते। —सेवासदन

कृषक के जीवन का तो तगादा प्रसाद है। —गोदान

यदि किसान न हो तो सारा ससार क्षुधा-पीडा से व्याकुल हो जाये। —मानसरोवर-पशु से मनुष्य

खेती की हालत अनाथ बालक की सी है। जल और वायु अनुकूल हुए तो नाज के ढेर लग गये। इनकी कृपा न हुई तो लहलहाते हुए खेत कपटी मित्र की भाँति दगा दे गये। ओला और पाला, सूखा और बाढ, टिड्डी और लाही, दीमक और आँधी से प्राण बचे, तो फसल खलिहान मे आयी। और खलिहान से आग और बिजली दोनो ही का वैर है। इतने दुश्मनो से बची तो फसल, नही तो फँसला।

—मानसरोवर-मुक्ति धन

केले का काटना भी इतना आसान नही, जितना किसान से बदला लेना। उसकी सारी कमाई खेतो मे रहती है, या खलिहानो मे। कितनी ही दैविक और भौतिक आपदाओ के बाद कही अनाज घर मे आता है। और जो कही इन आपदाओ के साथ विद्रोह ने भी सधि कर ली, तो बेचारा किसान कही का नही रहता। —मानसरोवर-मुक्ति मार्ग

किसान

किसान को ऊख या जौ-गेहूँ से कोई प्रेम नही होता । वह जिस जिस के पैदा करने मे अपना लाभ देखेगा, वही पैदा करेगा ।

—रंगभूमि

देहातियो को जो लोभ सरल कहते हैं, बडी भूल करते हैं। इन से ज्यादा चालाक आदमी मिलना मुश्किल है । —रंगभूमि

गर्मियो मैं किसान वर्षा का नही, ताप का भूखा होता है ।

—रंगभूमि

किसान को अपने बैल अपने लडको की तरह प्यारे होते है । वह उन्हे पशु नही अपना मित्र और सहायक समझता है ।

—मानसरोवर-सभ्यता का रहस्य

मौरूसी किसान मजदूर कहलाने का अपमान नही सह सकता है ।

—मानसरोवर-सभ्यता का रहस्य

सीधे-सादे किसान धन हाथ आते ही धर्म और कीर्ति की ओर झुकते हैं । दिव्य समाज की भांति घे पहले अपने भोग विलास की ओर नही दौडते । —मानसरोवर-सुजान भगत

किसान पक्का स्वार्थी होता है, इसमे सन्देह नही । उसकी गांठ से रिश्वत के पैसे बडी मुश्किल से निकलते हैं, भावताव मे भी वह चौकस होता है, ब्याज की एक एक पाई छुडाने के लिए वह महाजन की घटो चिरोरी करता है, जब तक पक्का विश्वास न हो जाय, वह किसी के फुसलाने मे नही आता, लेकिन उसका सम्पूर्ण जीवन प्रकृति मे स्थायी सहयोग है । वृक्षो मे फल लगते है, उन्हे जनता खाती है, खेती मे अनाज

होता है, वह ससार के काम आता है, गाय के थन मे दूध होता है, वह खुद पीने नही जाती, दूसरे ही पीते है मेघो से वर्षा होती है, उससे पृथ्वी तृप्त होती है, ऐसी संगति मे कुत्सित स्वार्थ के लिए कहाँ स्थान ?

—गोदान

किसानो का जन्म इसीलिए हुआ है कि अपना रक्त बहाये और बडो का घर भरे।

- गोदान

कार्तिक के महीने मे किसानो के बैल मर जाये, तो उसके दोनो हाथ कट जाते है।

—गोदान

किसान और किसान के बैल को जमराज ही पिंसिन* दे सकते हैं।

—गोदान

क़ैदी

बैल अनाज पैदा करता है, तो अनाज का भूसा खाता है। कभी कभी खली चोकर और दाना भी उसके कंठ के तले पहुँच जाता है। मगर कैदी बैल से भी गया गुजरा है। वह नाना प्रकार के शाक भाजी और फल फूल पैदा करता है, पर उसकी गन्ध भी उसे नही मिलती। नित्य प्रति सब्जी, फल और फूलो से भरी हुई डालियाँ हुक्काम के बँगलो पर पहुँच जाती हैं। कैदी देखता है और किस्मत ठोक कर रह जाता है।

—कायाकल्प

उम्रभर कैदी कहाँ तक रोयेगा ? रोये भी तो कौन देखता है ? किसे उसपर दया आती है। रोने से काम मे हर्ज होने के कारण उसे और यातनाये ही तो सहनी पडती है।

—निर्मला

---

* पेंशन

क्रोध और व्यंग

क्रोध के आवेश मे नेकियाँ बहुत याद आती है।

—रंगभूमि

क्रोध अत्यन्त कठोर होता है। वह देखना चाहता कि मेरा एक वाक्य निशाने पर बैठता है या नही, वह मौन को सहन नही कर सकता। उसकी शक्ति अपार है, ऐसा कोई घातक से घातक शस्त्र नही है, जिससे बढकर काट करने वाले यत्र उसकी शस्त्रशाला मे न हो, लेकिन मौन वह मत्र है, जिसके आगे उसकी सारी शक्ति विफल हो जाती है। मौन उसके लिये अजेय है। —रंगभूमि

क्रोध निरुत्तर होकर पानी हो जाता है। या यूँ कहिए कि आँसू अव्यक्त भावो ही का रूप है। —कायाकल्प

क्रोध को विनय निगल सकता है। —कायाकल्प

व्यग्य और क्रोध मे आग और तेल का सम्बन्ध है। व्यग्य हृदय को इस प्रकार विदीर्ण कर देता है जैसे छैनी बर्फ के टुकडे को।

- सेवासदन

निर्बंध क्रोध उदार हृदय मे करुणा का भाव उत्पन्न कर देता है।

—सेवासदन

अनुचित क्रोध मे सोई हुई आत्मा को जगाने का विशेष अनुराग होता है। —सेवासदन

व्याघात शाब्दिक कलह की चरम सीमा है। उसका प्रतिकार मुँह से नही हाथ से होता है। —प्रेमाश्रम

क्रोध मे मधुर स्मृतियो का लोप हो जाता है।

—मानसरोवर-लाइन

स्त्री हो या पुरुष, गुण और स्वभाव ही उसमे मुख्य वस्तु है। इस के सिवा और सभी बाते गौण है। —कायाकल्प

पुरुषो मे यह बडा अवगुण है कि हास्य और विनोद को कुवृत्तियो से अलग नही रख सकते। इसका पवित्र आनन्द उठाना उन्हे आता ही नही। — प्रेमाश्रम

गुणियो की जात-पात नही देखी जाती। —कायाकल्प

गुन तो आदमी उसमे देखता है; जिसके साथ जनम भर निर्वाह करना हो। —गोदान

स्पष्टवादिता मनुष्य का एक उच्च गुण है।

—मानसरोवर-ज्वालामुखी

घर

घर टपकता हो तो उसकी मरम्मत की जाती है, गिर जाये तो उसे छोड दिया जाता है। —रंगभूमि

लडकियो का घर कही नही होता। —निर्मला

आदमी बाहर से थका मॉंदा आता है तो उसे घर मे आराम मिलता है। —निर्मला

आज तक कोई ऐसा बालक या वृद्ध नही मरा, जिसके घरवालो को उसके दवा दर्पन की लालसा पूरी हो गई हो। —निर्मला

पहले घर मे दिया जलाकर तब मसजिद मे जलाते हैं।

—मानसरोवर-झांकी

जो कमाता है उसी का घर मे राज होता है, यही दुनियाँ का दस्तूर है। —मानसरोवर-सुजान भगत

अब तक जिस घर मे राज्य किया हो, उसी घर मे वह पराधीन

बन कर नही रह सकता। उसे श्रद्धा की चाह नहीं, सेवा की भूख नही। उसे अधिकार चाहिए। वह अपने घर पर दूसरो का अधिकार नही देख सकता। —मानसरोवर-सुजान भगत

आदमी घर वालो ही के लिए धन कमाता है कि और किसी के लिए ? अपना पेट तो सुअर भी पाल लेता हैं। —गोदान

जिस घर मे कोई नही रहता उसमे चमगादड़ बसेरा लेते हैं।
—मानसरोवर-नैराश्य लीला

चिन्ता

चिंता त्याग मूलक है। निश्चितता का आमोद विनोद से मेल है।
—रंगभूमि

चिंता रोग का मूल है। —रंगभूमि

पिछले पहर चिंता भी थककर सो जाती है। सारी रात करवटे बदलने वाला प्राणी भी इस समय निद्रा मे मग्न हो जाता है—कायाकल्प

भविष्य की भीषण चिंता आन्तरिक सद्भावो का सर्वनाश कर देती है। —निर्मला

चिंता एक काली दीवार की भाँति चारो ओर से घेर लेती है, जिस मे से निकलने की फिर कोई गली नही सूझती। —गोदान

जब अपनी चिंताओ से हमारे सिर मे दर्द होने लगता है तो विश्व की चिंता सिर पर लाद कर कोई कैसे प्रसन्न रह सकता है। —गोदान

जनता

जनता की दृष्टि मे एक बार विश्वास खोकर फिर जमाना मुश्किल है।
—रंगभूमि

जनता क्रोध मे अपने को भूल जाती है, मौत पर हंसती हैं।
—रगभूमि

जनता शासको से दबती है, उनकी शक्ति का ज्ञान उस पर अंकुश जमाता रहता है जहाँ उस शक्ति का भय नही होता, वहाँ वह आपे से बाहर हो जाती है।
—रंगभूमि

जनता अत्यन्त क्षमाशील होती है।
—रगभूमि

लोकमत पर विजय पाने का अर्थ है, अपने सद्विचारो और सत्कर्मो से जनता का आदर और सम्मान प्राप्त करना।
—कायाकल्प

जनता सहनशील होती है, जब तक प्याला भर न जाये, वह ज़बान नही खोलती।
— कायाकल्प

जनता उत्तेजित होकर आदर्शवादी हो जाती है।
— कायाकल्प

जन-समूह विचार से नही, आवेश से काम करता है। समूह मे ही अच्छे कामो का नाश होता है और बुरे कामो का भी।
—प्रतिज्ञा

असतोप को भड़का कर आप प्रजा को शात नही कर सकते। हाँ, कायर बना सकते हैं। अगर आप उन्हे कर्महीन, बुद्धिहीन, पुरुषार्थहीन मनुष्य का तन धारण करने वाले सियार और सुअर बनाना चाहते हैं तो बनाइए पर इससे न आपकी कीर्ति होगी, न ईश्वर प्रसन्न होगे और न आपकी आत्मा सन्तुष्ट होगी।
— कायाकल्प

जनता की दृष्टि मे विद्या, बुद्धि और प्रतिभा का उतना मूल्य नही होता, जितना चरित्र बल का।
—सेवासदन

जनता को अधिकारी वर्ग से एक नैसर्गिक द्वेष होता है।

—मानसरोवर-प्रारब्ध

जेल

जेल शासन का विभाग नही, पाशविक व्यवसाय है, आदमियो से काम लेने का बहाना, अत्याचार का निष्कपट साधन। दो रुपये का काम लेकर, दो आने का खाना खिलाना ऐसा अन्याय है, जिसकी कही नजीर नही मिल सकती। जिस परिश्रम से एक कुनबे का पालन होना हो वह अपना पेट भी नही भर सकता। इन्साफ तो तब जाने, जब अपराधी को दण्ड दीजिए, उससे खूब काम लीजिए, लेकिन उसकी मेहनत के पैसे उसके घर पहुँचा दीजिए। अपराधी के साथ उसके घरवालो की प्राण हत्या न कीजिये। अगर यह कहिये कि अपराधी घरवालो की सलाह से अपराध करता है, तो उसका प्रमाण दीजिए। बहुत से कुकर्म ऐसे होते हैं जिनकी घरवालो को गन्ध तक नही मिलती। ऐसी दशा मे घरवालो को क्यो दण्ड दिया जाये ? फिर नाबालिगो का क्या दोष ? वह तो कुकर्म मे शरीक नही होते। उनका क्यो खून करते हो ? आदि से अन्त तक सारा व्यापार घृणित, जघन्य, पैशाचिक और निंद्य है। अनीति की भी अक्ल यहाँ दंग है, दुष्टता भी यहाँ दातो तले उँगली दबाती है।

—कायाकल्प

जेल के विधाताओ मे चाहे कितने अवगुण हो ; पर वे मनोविज्ञान के पण्डित होते हैं। किस दण्ड से आत्मा को अधिक से अधिक कष्ट हो सकता है, इसका उन्हे सम्पूर्ण ज्ञान होता है। मनुष्य के लिए बेकारी से बडा कोई कष्ट नही है, इसे वे खूब जानते हैं। — कायाकल्प

जेल मानवी पशुता की सबसे क्रूर लीला, सबसे उज्ज्वल कीर्ति

है। वह जादू है जो मनुष्य को आँखे रहते अन्धा, कान रहते बहरा, जीभ रहते गूँगा बना देती है। कहाँ है सूर्य की वे किरणे, जिन्हे देखकर आँखो को अपने होने का विश्वास हो, कहाँ है वह वाणी, जो कानो को जगाये ? गन्ध है, किन्तु ज्ञान तो भिन्नता मे है। जहाँ दुर्गन्ध के सिवा और कुछ नही, वहाँ गन्ध ज्ञान कैसे हो, बस शून्य है, अन्धकार है। वहाँ पंच भूतो का अस्तित्व ही नही। कदाचित ब्रह्मा ने इस अवस्था की कल्पना ही न की होगी, कदाचित उनमे यह सामर्थ्य ही न थी। मनुष्य की आविष्कार शक्ति कितनी विलक्षण है। धन्य हो देवता, धन्य हो।

—कायाकल्प

जेल एक नई दुनियाँ है, जहाँ मनुष्य ही मनुष्य है, ईश्वर नही।

—कायाकल्प

जेल सम्मान और भक्ति एक रेखा है, जिसके भीतर शैतान कदम नही रख सकता। मैदान मे जलता हुआ अलाव वायु मे अपनी उष्णता को खो देता है, लेकिन इंजन मे बन्द होकर वही आग सचालन शक्ति का अखण्ड भण्डार बन जाती है। —मानसरोवर-जेल

दया और क्षमा

क्षमा वदले के भय से नही माँगी जाती। भय से आदमी छिप जाता है, दूसरो की मदद माँगने दौडता है, क्षमा नही माँगता। क्षमा आदमी उसी वक्त माँगता है जब उसे अपने अन्याय और बुराई का विश्वास हो जाता है और जब उसकी आत्मा उसे लज्जित करने लगती है।

—रंगभूमि

क्षमा मानवी भावो मे सर्वोपरि है। दया का स्थान इतना ऊँचा नही। दया वह दाना है, जो पोली धरती पर उगता है इसके प्रतिकूल

क्षमा वह दाना है, जो कांटों में उगता है। दया वह धारा है, जो समतल भूमि पर बहती है, क्षमा कंकरो और चट्टानो मे बहने वाली धारा है। दया का मार्ग सीधा और सरल है, क्षमा का मार्ग टेढा और कठिन है।

—रंगभूमि

निर्बलो के प्रति स्वभावत: करुणा उत्पन्न हो जाती है। —रंगभूमि

अपनी भूल स्वीकार करने मे जो गौरव है, वह अन्याय को चिरायु रखने मे नही है। अधीश्वरो के लिए क्षमा ही शोभा देती है।

—रंगभूमि

दया कभी नियम विरुद्ध नही होती। —रगभूमि

दयालुता दो प्रकार की होती है—एक मे नम्रता होती है, दूसरी मे आत्म प्रशसा। —कायाकल्प

सम्मान और भक्ति दया की अपेक्षा प्रेम से कही निकटतर है।

—कायाकल्प

क्षमा से व्यथित होकर एक आदमी अपना ईमान खो सकता है, दूसरा मर जायेगा पर किसी के सामने हाथ नही फैलायेगा।

—मानसरोवर-दो कब्रें

जो प्राणी धर्म के नाम पर विजय वासना और विषपान को स्तुत्य समझता हो, वह यदि दूसरो की धार्मिक प्रवृत्तियो को पाखण्ड समझे तो क्षम्य है। —प्रेमाश्रम

दया मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। —मानसरोवर-मूठ

जहाँ घृणा है वहाँ दया नही हो सकती। —मानसरोवर-निर्वासन

दहेज

दहेज बुरा रिवाज है, बेहद बुरा ! बस चले तो दहेज लेने वालो और दहेज देने वालो दोनो ही को गोली मार दी जाए, फिर चाहे फाँसी ही क्यो न हो जाय ! पूछो, आप लडके का विवाह करते हैं कि उसे बेचते हैं ? अगर आप लडके की शादी मे दिल खोलकर खर्च करने का अरमान है तो शौक से खर्च कीजिए लेकिन जो कुछ कीजिए, अपने बल पर। यह क्यो कि कन्या के पिता का गला रेतिए। नीचता है, घोर नीचता ! बस चले, तो इन पाजियो को गोली मार दी जाए।

—निर्मला

लडकी रूपवती है, गुणशीला है, चतुर है, कुलीन है, तो हुआ करे; दहेज ही तो सारे दोष गुण है। प्राणो का कोई मूल्य नही, केवल दहेज का मूल्य है। कितनी विषम भाग्य लीला !

—निर्मला

जब तक समाज की यह व्यवस्था कायम है और युवती कन्या का अविवाहित रहना निन्दास्पद है, तब तक यह दहेज प्रथा मिटने की नही।

—मानसरोवर-गिला

जब लडको की तरह लड़कियो को शिक्षा और जीविका की सुविधाएँ निकल आयेंगी, तो दहेज प्रथा भी विदा हो जायगी।

—मानसरोवर-गिला

दान

दान ने हमारी जाति मे जितने आलसी आदमी पैदा कर दिए हैं उतने सब नशो ने मिल कर भी न पैदा किए होंगे। —रंगभूमि

दान आलस्य का मूल है और आलस्य सब पापो का मूल है। इसलिए दान ही सब पापो का मूल है, कम से कम पोषक तो अवश्य ही है। दान नही, अगर जी चाहता हो, तो मित्रो को एक भोज दे दो।

—रगभूमि

सच्चा दानी प्रसिद्धि का अभिलाषी नही होता। —रगभूमि

कन्यादान महादान है। जिसने यह दान न दिया, उसका जन्म ही वृथा गया। —मानसरोवर-भूत

दान पौरुष हीन, कर्महीन या पाखण्डियो का आधार है। —गबन

कीर्ति का इच्छुक जब दान करता है तो चाहता है कि नाम हो, यश मिले। दान का अपमान उससे नही सहा जाता। —कायाकल्प

दाम्पत्य-जीवन

दाम्पत्य जीवन स्वार्थ परता का पोषक है। इसके लिए प्रमाण की आवश्यकता नही, और इस अधोगति की दशा मे जब कि स्वार्थ हमारी नसो मे कूट-कूट कर भरा हुआ है, जबकि हम बिना स्वार्थ के कोई काम या कोई बात नही करते, यहां तक कि माता-पुत्र सम्बन्ध मे, गुरु शिष्य

सम्बन्ध मे, पत्नी पुरुष सम्बन्ध मे, स्वार्थ का प्राधान्य हो गया है ।
—रंगभूमि

दाम्पत्य मनुष्य के सामाजिक जीवन का मूल है । —रगभूमि

गार्हस्थ्य को ऋषियो ने सर्वोच्च धर्म कहा है। —रगभूमि

दया, सहानुभूति, सहिष्णुता, उपकार त्याग आदि देवोचित गुणो के विकास के जैसे सुयोग गार्हस्थ्य जीवन मे प्राप्त होते है, और किसी अवस्था मे नही मिल सकते । —रंगभूमि

जिन कृत्यो ने मानव जाति का मुख उज्ज्वल कर दिया है, उनका श्रेय योगियो को नही, दाम्पत्य सुख योगियो को है । —रंगभूमि

मैं स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध को दो हृदयो के सयोग का सबसे उत्तम रूप नही सकभती, मैं सहानुभूति और सहवास को वासनामय सम्बन्ध से कही महत्त्वपूर्ण समझती हूँ । —रंगभूमि

स्त्री मे कितने ही गुण हो, लेकिन यदि उसकी सूरत पुरुष को पसद न आयी, तो वह उसकी नजरो से गिर जाती है, और उनका दाम्पत्य जीवन दु:खमय हो जाता है । —कायाकल्प

पुरुप को स्त्री पसन्द न आयी, यह और शादियाँ कर सकता है। स्त्री को पुरुप पसन्द न आया तो उसकी सारी उम्र रोते ही गुजरेगी ।
—कायाकल्प

जब किसी पुरुप का एक स्त्री के साथ पति पत्नी का सा सम्बन्ध हो जाये, तो पुरुप का धर्म है कि जब तक स्त्री की ओर से कोई विरुद्ध आचरण न देखे, उस सम्बन्ध को निवाहे । —कायाकल्प

हम अपने गार्हस्थ्य जीवन की ओर से कितने बे सुध हैं, उसके लिए किसी तैयारी, किसी शिक्षा की जरूरत नही समझते । गुडियाँ खेलने वाली बालिका, सहेलियो के साथ विहार करने वाली युवती, गृहिणी बनने योग्य समझी जाती है । अल्हड बछडे के कंधे पर भारी जुआ रख दिया जाता है । ऐसी दशा मे यदि हमारा गार्हस्थ्य जीवन आनन्दमय न हो तो कोई आश्चर्य नही । —सेवासदन

दाम्पत्य जीवन चित्त की शाति का एक प्रधान साधन है ।

—प्रेमाश्रम

यह गृहस्थी जी का जजाल है, सोने की हँसिया, जिसे न उगलते बनता है, न निगलते ।

—गोदान

वैवाहिक जीवन के प्रभात मे लालसा अपनी गुलाबी मादकता के साथ उदय होती है और हृदय के सारे आकाश को अपने माधुर्य की सुनहरी किरणो से रजित कर देती है। फिर मध्यान्ह का प्रखर ताप आता है, क्षरण-क्षरण पर बगूले उठते है और पृथ्वी काँपने लगती है। लालसा का सुनहरा आवरण हट जाता है और वास्तविकता अपने नग्न रूप मे सामने आ जाती है। उसके बाद विश्राममय सध्या आती है, शीतल और शात, जब हम थके हुए पथिको की भाँति दिन भर की यात्रा का वृत्तान्त कहते और सुनते हैं, तटस्थ भाव से, मानो किसी ऊँचे शिखर पर जा बैठे है, जहाँ नीचे का जनरव हम तक नही पहुँचता। —गोदान

दाम्यत्य सुख के लिए स्त्री-पुरुष के स्वभाव मे मेल होना आवश्यक है।

—मानसरोवर-सुहाग की साड़ी

सम्वन्ध मे, पत्नी पुरुष सम्वन्ध मे, स्वार्थ का प्राधान्य हो गया है ।

—रंगभूमि

दाम्पत्य मनुष्य के सामाजिक जीवन का मूल है । —रगभूमि

गार्हस्थ्य को ऋषियो ने सर्वोच्च धर्म कहा है। —रगभूमि

दया, सहानुभूति, सहिष्णुता, उपकार त्याग आदि देवोचित गुणो के विकास के जैसे सुयोग गार्हस्थ्य जीवन मे प्राप्त होते है, और किसी अवस्था मे नही मिल सकते । —रंगभूमि

जिन कृत्यो ने मानव जाति का मुख उज्ज्वल कर दिया है, उनका श्रेय योगियो को नही, दाम्पत्य सुख योगियो को है । —रगभूमि

मै स्त्री और पुरुष के सम्बन्ध को दो हृदयो के सयोग का सबसे उत्तम रूप नही सकझती, मैं सहानुभूति और सहवास को वासनामय सम्वन्ध से कही महत्त्वपूर्ण समझती हूँ । —रंगभूमि

स्त्री मे कितने ही गुण हो, लेकिन यदि उसकी सूरत पुरुष को पसद न आयी, तो वह उसकी नजरो से गिर जाती है, और उनका दाम्पत्य जीवन दु खमय हो जाता है । —कायाकल्प

पुरुष को स्त्री पसन्द न आयी, यह और शादियाँ कर सकता है। स्त्री को पुरुष पसन्द न आया तो उसकी सारी उम्र रोते ही गुजरेगी ।

—कायाकल्प

जब किसी पुरुष का एक स्त्री के साथ पति पत्नी का सा सम्वन्ध हो जाये, तो पुरुष का धर्म है कि जब तक स्त्री की ओर से कोई विरुद्ध आचरण न देखे, उस सम्वन्ध को निवाहे । --कायाकल्प

हम अपने गार्हस्थ्य जीवन की ओर से कितने वे सुध हैं, उसके लिए किसी तैयारी, किसी शिक्षा की जरूरत नही समझते । गुडियाँ खेलने वाली वालिका, सहेलियो के साथ विहार करने वाली युवती, गृहिणी बनने योग्य समझी जाती है । अल्हड बछडे के कंधे पर भारी जुआ रख दिया जाता है । ऐसी दशा मे यदि हमारा गार्हस्थ्य जीवन आनन्दमय न हो तो कोई आश्चर्य नही । —सेवासदन

दाम्पत्य जीवन चित्त की शाति का एक प्रधान साधन है।

—प्रेमाश्रम

यह गृहस्थी जी का जजाल है, सोने की हँसिया, जिसे न उगलते बनता है, न निगलते। —गोदान

वैवाहिक जीवन के प्रभात मे लालसा अपनी गुलाबी मादकता के साथ उदय होती है और हृदय के सारे आकाश को अपने माधुर्य की सुनहरी किरणो से रजित कर देती है। फिर मध्यान्ह का प्रखर ताप आता है, क्षण-क्षण पर बगूले उठते हैं और पृथ्वी कांपने लगती है। लालसा का सुनहरा आवरण हट जाता है और वास्तविकता अपने नग्न रूप मे सामने आ जाती है। उसके बाद विश्राममय संध्या आती है, शीतल और शात, जब हम थके हुए पथिको की भांति दिन भर की यात्रा का वृत्तान्त कहते और सुनते हैं, तटस्थ भाव से, मानो किसी ऊँचे शिखर पर जा बैठे है, जहां नीचे का जनरव हम तक नही पहुँचता। —गोदान

दाम्पत्य सुख के लिए स्त्री-पुरुष के स्वभाव मे मेल होना आवश्यक है। —मानसरोवर-सुहाग की साड़ी

यंत्रणा मे सहानुभूति पैदा करने की शक्ति होती है।

—मानसरोवर-सच्चाई का उपहार

दुनियाँ

दुनियाँ अपना ही फायदा देखती है। अपना कल्यान हो, दूसरे जिएँ या मरें। —रंगभूमि

संसार शाति भूमि नही, समरभूमि है। यहाँ वीरो और पुरुषार्थियो की विजय होती है, निर्बल और कायर मारे जाते हैं। —रगभूमि

संसार की भी क्या लीला है कि होम करते हाथ जलते हैं।

—रंगभूमि

अधा संसार तो किसी की नियत नही दीखता। —रंगभूमि

ससार इसी माया-मोह का नाम है। —रंगभूमि

दुनियां केवल पेट पालने की जगह नही है। —रंगभूमि

दुनिया का दस्तूर है कि पहले अपने घरमे दिया जलाकर तब मस्जिद मे दिया जलाऐ है। —कायाकल्प

संसार को मनुष्य ने नही बनाया है, ईश्वर ने बनाया है।

—कायाकल्प

दुनियां मे कोई किसी का नही होता। —कायाकल्प

क्या ऐसी पृथ्वी न बन सकती थी, जहाँ सभी मनुष्य, सभी जातियां प्रेम और आनन्द के साथ ससार मे रहती? यह कौन सा इन्साफ है कि कोई तो दुनियां के मजे उडायें। कोई धक्के खाये। एक जाति दूसरी जाति का रक्त चूसे और मूँछो पर ताव दे। दूसरी कुचली जाये और खाने को तरसे? ऐसा अन्यायमय संसार ईश्वर की सृष्टि नही हो मकता है।

—कायाकल्प

संसार मे कुछ ऐसे भी महात्मा होते है, जो अपना पेट चाहे न भर सके, पर पडोसियो को नेवता देते फिरते हैं।

—मानसरोवर-प्रेम का उदय

संसार के रहस्य को कौन समझ सकता है? क्या हममे से बहुतो का यह अनुभव नही कि जिस दिन हमने बेईमानी करके कुछ रकम उडाई, उसी दिन उस रकम का दुगना नुकसान हो गया।

—मानसरोवर-मृतक का भोज

कानून के सिवा सारा सँसार मिथ्या है। —मानसरोवर-भूत

ससार तो व्यवहारो को ही देखता है, मन की बात कौन किसकी जानता है? —सेवासदन

सारा संसार नृत्य शाला है। उसमे लोग अपना अपना नाच-नाच रहे है। —सेवासदन

ससार के व्यवहार मे वकालत से काम नही चलता। —सेवासदन

सँसार मे रहकर संसार की चाल चलनी पडती है। —सेवासदन

यदि हम किसी निरपराध पर झूठा अभियोग लगाये, तो संसार हमको बदनाम नही करता, वह इस अकर्म मे हमारी सहायता करता है, हमको गवाह और वकील देता है। हम किसी का धन दबा बैठे, किसी की जायदाद हडप ले तो ससार हमको कोई दड नही देता, देता भी है तो बहुत कम, लेकिन ऐसे कुकर्मो के लिए वह हमे बदनाम करता है, हमारे माथे पर सदा के लिए कलक का टीका लगा देता है। —सेवासदन

ससार बुरो के लिए बुरा है और अच्छो के लिए अच्छा है।

—मानसरोवर-आत्माराम

ससार मे छोटे बडे हमेशा रहेगे, और उन्हे हमेशा रहना चाहिए। इसे मिटाने की चेष्टा करना मानव जाति के सर्वनाश का कारण होगा।

—गोदान

मैं इसे मानता ही नही कि त्याग और प्रेम से संसार ने उन्नति की।

ससार ने उन्नति की पौरुष से, अराक्रम से, बुद्धि बल से, तेज से ।

—गोदान

संसार कर्म क्षेत्र है, मीमासा क्षेत्र नही ।

—मानसरोवर-पशु से मनुष्य

ससार मे रहकर तो ससार की सी करनी ही पडेगी ।

—मानसरोवर-नैराश्यलीला

ससार को तो उन लोगो की प्रशसा करने मे आनन्द आता है, जो अपने घर को भाड मे भोक रहे हो, गैरो के पीछे अपना सर्वनाश किए डालते हो । जो प्राणी घर वालो के लिए मरता है, उसकी प्रशसा संसार वाले नही करते । वह तो उनकी दृष्टि मे स्वार्थी है कृपण है, संकीर्ण हृदय है, आचार भ्रष्ट है । —मानसरोवर-गिला

दुनिया का काम मुरौवत और रवादारी से चलता है । अगर हम किसी से खिचे रहे, तो कोई कारण नहीं कि वह भी हमसे न खिचा रहे । —मानसरोवर-गिला

यह ज़माना खुशामद और सलामी का है तुम विद्या के सागर बने बैठे रहो, कोई सेत भी न पूछेगा । —कायाकल्प

ससार मे जिधर देखो, ईर्ष्या और द्वेप, आघात और प्रत्याघात का साम्राज्य है, भाई भाई का वैरी है, बाप बेटे का वैरी है, पुरुप स्त्री का वैरी है, जायदाद के लिए, धन के लिए। —प्रेमाश्रम

दुनिया कामयाबी का नुसखा है । —प्रेमाश्रम

ससार ईश्वर का विराट स्वरूप है । जिसने ससार को देख लिया, उसने ईश्वर के विराट स्वरूप का दर्शन कर लिया । यात्रा अनुभूत ज्ञान प्राप्त करने का सर्वोत्तम साधन है । —प्रेमाश्रम

ससार मे सब प्राणी अपने कर्मानुसार सुख दुःख भोगते हैं ।

—प्रेमाश्रम

दुनिया मे कुछ ऐसे लोग भी होते हैं जो किसी के नौकर न होते हुए सबके नौकर होते है, जिन्हे कुछ अपना खास काम न होने पर भी सिर

उठाने की फुरसत नही होती ।   —मानसरोवर-हिंसा परमो धर्मः

यह सारा जगत उस परम पिता का विराट रूप है। प्रत्येक जीव मे उसी परमात्मा की ज्योति आलोकित हो रही है। केवल इसी भौतिक परदे ने हमे एक दूसरे से पृथक् कर दिया है। यथार्थ मे हम सब एक हैं। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश अलग-अलग घरो मे जाकर भिन्न नही हो जाता, उसी प्रकार ईश्वर की महान् आत्मा पृथक्-पृथक् जीवो मे प्रविष्ट होकर विभिन्न नही होती ।   —मानसरोवर-ब्रह्म का स्वांग

ससार मे सबसे आसान काम करने को धोखा देना है।

—मानसरोवर-दीक्षा

धन और सम्पत्ति

धन ही पाप, द्वेष और अन्याय का मूल है।   —कायाकल्प

धन ही सुख और कल्याण का मूल है।   —कायाकल्प

ससार मे धन सर्व प्रधान वस्तु है, इसके बिना धर्म भी नही हो सकता ।   — कायाकल्प

हमे ससार मे रहना है, तो धन की उपासना करनी पडेगी, इसी से लोक परलोक मे हमारा उद्धार होगा ।   —कायाकल्प

धन और मरतबा अपने पौरुष से मिलता है। लडकी बेचकर धन नही कमाया जाता। यह नीचो का काम है, भले मानुषो का नही ।

—कायाकल्प

धन मे धर्म है, दया है, उदारता है, लेकिन इसके साथ ही गर्व भी है, जो इन गुणो को मटियामेट कर देता है।   —कायाकल्प

धन केवल भोग की वस्तु नही है, उससे यश और कीर्ति भी मिलती है।   —कायाकल्प

धन मे यही बुराई है कि इससे विलासिता बढ़ती है, लेकिन इसमे परोपकार करने की सामर्थ्य भी है। —कायाकल्प

सम्पत्ति मिलने पर ही रक्षको की आवश्यकता पड़ती है।

—कायाकल्प

लक्ष्मी बिना बुलाये नही आती। उपासक का हृदय अव्यक्त रूप से नित्य उसकी कामना करता ही रहता है। वह मुँह से कुछ न कहे; पर रोम रोम से आह्वान के शब्द निकलते रहते हैं। —कायाकल्प

सम्पत्ति की अट्टालिका तक पहुँचने मे दूसरो की जिन्दगी ही जीनो का काम देती है। आप उन्हे कुचल कर ही लक्ष्यो तक पहुँच सकते है।

—मानसरोवर-प्रेरणा

हमारे यहाँ लक्ष्मी को चचला कहा है, वह बराबर चलती रहती है। आज मेरे घर कल तुम्हारे यहाँ। —मानसरोवर-तगादा

पैसे वाले पैसे की कदर क्या जाने ? पैसे की कदर तब होती है, जब हाथ खाली हो जाता है। तब आदमी एक-एक कौडी दाँत से पकडता है।

—मानसरोवर-सती

जिस युग मे धन ही सर्व प्रधान हो, मर्यादा, कीर्ति, यश—यहाँ तक कि विद्या भी धन से खरीदी जा सके, उस युग मे स्वाँग करना एक लाज़िमी बात हो जाती है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

केवल धन से कोई बडा थोडे ही हो जाता है। धर्म का महत्त्व धन से कही बढकर है। —सेवासदन

मान-मर्यादा धन से नही होती। —सेवासदन

लक्ष्मी अगर रक्त और मांस की भेट लेकर आती है तो उसका न आना ही अच्छा। —निर्मला

धन सुख भोग के लिए है, उसका और कोई उद्देश्य नही है। मैं धन को अपनी इच्छाओ का गुलाम समझता हूँ, उसका गुलाम बनना नही चाहता। —प्रेमाश्रम

घर की जायदाद प्राणो से भी प्रिय होती है और उसकी रक्षा प्राणो

से भी अधिक की जाती है। —प्रेमाश्रम

पुरुषार्थी लोग दूसरो की सम्पत्ति पर मुँह नही फैलाते। अपने बाहु-बल का भरोसा करते है। —प्रेमाश्रम

हम धन-सम्पत्ति के पीछे इतने हो रहे हैं, कि धर्म और विवेक को पैरो तले कुचल डालते है। —प्रेमाश्रम

दौलत की हवस औलाद के लिए होती है। —प्रेमाश्रम

आदमी वाक् चतुर हो, जरा मर्दम शनास हो और जरा गिरह बाज हो, बस उसकी चाँदी है। दौलत उसके घर की लौंडी है। —प्रेमाश्रम

रुपये लेते समय तो लोग सगे बन जाते है, पर देने की बारी आती है तो कोई सीधे मुँह बात नही करता। —प्रेमाश्रम

माया बडी कठोर हृदया होती है। —कायाकल्प

रईसो का मिजाज आसमान पर होता।

—मानसरोवर-बैंक का दिवाला

धन सम्पत्ति श्रेष्ठ प्रसाद नही, ईश्वर का प्रकोप है जो मनुष्य के हृदय से दया और प्रेम के भावो का सहारा मिटा देता है, यह वह मेघ है, जो चित्त के प्रकाशित तारो पर छा जाता है।

—मानसरोवर-बैंक का दिवाला

हम परिस्थितियो के शिकार बने हुए है। यह परिस्थिति ही हमारा सर्वनाश कर रही है और जब तक सम्पत्ति की यह बेडी हमारे पैरो से न निकलेगी, जब तक यह अभिशाप हमारे सिर पर मडराता रहेगा, हम मानवता का वह पद न पा सकेंगे, जिसपर पहुँचना ही जीवन का अंतिम लक्ष्य है। —गोदान

सम्पत्ति बडी तपस्या से मिलती है। —गोदान

आदमी वह है जिनके पास धन है, अख्तियार है, इलम है, हम लोग तो बैल है और जुतने के लिए पैदा हुए हैं। —गोदान

दौलत से आराम और तकल्लुफ के कितने सामान जमा किये जा सकते है, मगर यह भी जानता हूँ कि दौलत इंसान को कितना खुदगरज

बना देती है, कितना ऐश-पसन्द, कितना मक्कार, कितना बेगैरत ।

—गोदान

बड़े आदमियों का क्रोध पूरा समर्पण चाहता है । अपने खिलाफ एक शब्द भी नहीं सुन सकता ।

—गोदान

जिसके पास पैसे हैं, वही बड़ा आदमी है, वही भला आदमी है। पैसे न हों, तो उस पर सभी रोब जमाते हैं ।

—गोदान

रुपये हों तो न हुक्का-पानी का काम है, न जात बिरादरी का। दुनियाँ पैसे की है, हुक्का पानी कोई नहीं पूछता—

—गोदान

रुपये की गर्मी उन्हें होती है, जो एक के दस लेते हैं। हम तो मजदूर हैं। हमारी गर्मी पसीने के रास्ते बह जाती है ।

—गोदान

दौलत से आदमी को जो सम्मान मिलता है, वह उसका सम्मान नहीं, उसकी दौलत का सम्मान है। आप निर्धन रहकर भी मित्रों के विश्वास पात्र रह सकते हैं और शत्रुओं के भी; बल्कि तब कोई आपका शत्रु रहेगा ही नहीं ।

—गोदान

हमारी सारी आत्मिक, बौद्धिक और शारीरिक शक्तियों के सामंजस्य का नाम धन है।

—गोदान

धन से मनुष्य को कितना प्रेम होता है । धन अपनी जान से भी ज्यादा प्यारा होता है, विशेषकर बुढ़ापे में ।

—मानसरोवर-गरीब की हाय

धन की प्रधानता ने समस्त समाज को उलट पलट दिया है ।

—मानसरोवर-पशु से मनुष्य

सूम का धन शैतान खाता है ।

—मानसरोवर-मूठ

रुपये का लोभ आदमी को शक्की बना देता है, —मानसरोवर मूठ

लक्ष्मी का आकार तो बहुत बड़ा नहीं, और वह भी समयानुसार छोटा-बड़ा होता रहता है । यहाँ तक कि कभी वह अपना विराट् आकार समेट कर उसे कागज के चन्द अक्षरों में छिपा लेती है । कभी-कभी मनुष्य की जिह्वा पर जा बैठती है, आकार का लोप हो जाता है।

किन्तु उनके रहने को बहुत स्थान की जरूरत होती है। वह आयी, और घर बढने लगा। छोटे घर मे उससे नही रहा जाता।

—मानसरोवर-मुक्तिमार्ग

घन से घन की भूख बढती है, तृप्ति नही होती।

—मानसरोवर-डिक्री के रुपये

धर्म और बुद्धि

मै धर्म को बुद्धि से बिल्कुल अलग समझता हूँ। धर्म को तोलने के लिए बुद्धि उतनी ही अनुपयुक्त है, जितना कि बैंगन तोलने के लिए सुनार का कांटा। धर्म धर्म है बुद्धि बुद्धि। या तो धर्म का प्रकाश इतना तेजमय है कि बुद्धि की आंखे चौंधिया जाती हैं, या इतना घोर अधकार है कि बुद्धि को कुछ नजर ही नही आता। —रगभूमि

इन्हे उन सद्भापी और पवित्र आदेशो के व्यक्त करने का क्या अधिकार है, जिनका आधार आतमदर्शन और अनुभव पर न हो। —रगभूमि

धर्म का फल इस जीवन मे नही मिलता। हमे आंखे बंद करके नारायन पर भरोसा रखते हुए धर्म मार्ग पर रहना चाहिए।

—रगभूमि

संकट मे ही धैर्य और धर्म की परीक्षा होती है। —रगभूमि

धर्म का मुख्य स्तम्भ भय है। अनिष्ट की शका को दूर कर दीजिए, फिर तीर्थ यात्रा, पूजापाठ, स्नान ध्यान, रोजा नमाज, किसी का निशान मात्र भी न रहेगा। मस्जिदें खाली नजर आयेगी और मन्दिर वीरान।

—रंगभूमि

धर्म-भीरुता मे जहां अनेक गुण हैं, वहां एक अवगुण भी है, वह सजा होती है। पाखडियों का दांव उस पर सहज ही मे चल

जाता है। धर्म भीरु प्राणी तार्किक नही होता । उसकी विवेचनाशक्ति शिथिल हो जाती है।

—रंगभूमि

धर्म भीरुता जडवादियो की दृष्टि मे हास्यपद वन जाती है। विशेषतः एक जवान आदमी मे तो यह अक्षभ्य समझी जाती है।

—रंगभूमि

धर्म और व्यापार को एक तराजू मे तो तोलना मूर्खता है । धर्म धर्म है, व्यापार व्यापार, परस्पर कोई सम्बन्ध नही। ससार मे जीवित रहने के लिए किसी व्यापार की जरूरत है, धर्म की नही। धर्म तो व्यापार का श्रृंगार है । वह धनाधीशो ही को शोभा देता है। खुदा आपको समाई दे, अवकाश मिले , घर मे फालतू रुपये हो, तो नमाज़ पढिए हज कीजिए, मस्जिद वनवाइए, कुएँ खुदवाइए, तव मजहव है, खाली पेट खुदा का नाम लेना पाप है।

—रंगभूमि

वदनामी के डर से जो आदमी धर्म से मुँह फेर ले, वह आदमी नही।

—रगभूमि

आदमी का धर्म है कि किसी को दुःख मे देखे तो उसे तसल्ली दे। अगर अपना धर्म पालने मे भी कलंक लगता है तो उसे लगने दे।

—रंगभूमि

विगडी हुई आँखो के सदृश विगडे हुए ईमान मे प्रकाश-ज्योति प्रवेश नही करती।

—सेवासदन

ईमान का सबसे वड़ा शत्रु अवसर है।

—मानसरोवर-ईश्वरीय न्याय

हमारी चीज कोई छीन ले तो हमारा धर्म है कि उससे यथाशक्ति लड़ें, हार कर बैठ रहना कायरो का काम है।

—मानसरोवर-ईश्वरीय न्याय

हमारे सोये हुए धर्म ज्ञान की सारी सम्पत्ति लुट जाए तो उसे खबर नही होती, परन्तु ललकार सुनकर वह सचेत हो जाता है । फिर उसे कोई जीत नही सकता।

—मानसरोवर-पच परमेश्वर

अपना धर्म यह नही है कि मित्रो का गला दवाएँ। —गोदान

प्रतिभा तो गरीबी ही मे चमकती है, दीपक की भाँति, जो अँधेरे ही मे अपना प्रकाश दिखाता है। —गोदान

बुद्धि तब भी राज करती थी, अब भी करती है और हमेशा करेगी। —गोदान

बुद्धि अगर स्वार्थ से युक्त हो तो हमे उसकी प्रभुता मानने मे कोई आपत्ति नही। समाजवाद का यही आदर्श है। —गोदान

बुद्धि के बगैर किसी समाज का संचालन नही हो सकता। हम केवल इस बिच्छू का डंक तोड़ देना चाहते हैं। —गोदान

हमारा धर्म है हमारा भोजन। भोजन पवित्र रहे फिर हमारे धर्म पर कोई आँच नही आ सकती। रोटियाँ ढाल वन कर अधर्म से हमारी रक्षा करती है। —गोदान

आदमी का धरम है, जिसकी बाँह पकडे, उसे निभाये। यह क्या कि एक आदमी की जिन्दगानी खराब कर दी और आप दूसरा घर ताकने लगे। —गोदान

धर्म ईश्वरीय कोप है, दैवी वज्र है, जो मानव जाति के सर्वनाश के लिए अवतरित हुआ है। —रंगभूमि

ऐश्वर्य पाकर बुद्धि भी मंद हो जाती है। —रंगभूमि

ईमान है तो सब कुछ है। —रंगभूमि

धर्म परायणता को सहिष्णुता से वैर है। —रंगभूमि

बाप की आज्ञा मानना पुत्र का धर्म होता है, लेकिन जब बाप अन्याय करने लगे तो लडका उसका अनुयायी बनने के लिए बाध्य नही। —रंगभूमि

कुलियो के लिए धार्मिक भोजन शारीरिक भोजन से कम आवश्यक नही। —रंगभूमि

वह धर्म केवल जत्थे बन्दी है, जहाँ अपनी बिरादरी से बाहर विवाह करना वर्जित हो, क्योकि इससे उसकी क्षति होने का भय है। धर्म और

ज्ञान, दोनों एक है, और इस दृष्टि से संसार में केवल एक धर्म है।

—रंगभूमि

धर्म परायणता छल और कुटिलता का दूसरा नाम है। —रंगभूमि

ईमान दुरुस्त रखना हो, तो इंसान को चाहिये कि फकीर हो जाये।

—रंगभूमि

धर्म हमारी रक्षा और कल्याण के लिए है। अगर वह हमारी आत्मा को शाति और देह को सुख नही प्रदान कर सकता, तो मैं उसे पुराने कोट की भाँति उतार फेकना पसन्द करूँगा। —रंगभूमि

जो धर्म हमारी आत्मा का बन्धन हो जाये उससे जितनी जल्दी हम अपना गला छुडालें उतना ही अच्छा है। —रंगभूमि

धर्म से ज्यादा द्वेष पैदा करने वाली वस्तु ससार मे नही।

—कायाकल्प

अलौकिक बातो को समझाने के लिए अलौकिक बुद्धि चाहिए।

—कायाकल्प

ससार के धर्म ग्रन्थ, उपनिषदो से लेकर कुरान तक उन लोगो के रचे हुए है जो रोटियो को भी मोहताज थे। उन्होने अगूर खट्टे समझ कर धन की निन्दा की तो कोई आश्चर्य की बात नही। —कायाकल्प

वह ज्ञान जो मानवता को पीस डाले, ज्ञान नही है। —गोदान

ससार मे इलम की कदर नही ईमान की कदर है। —गोदान

माँ-बाप का धरम सोलहो आना लडको के साथ है। लडको का माँ-बाप के साथ एक आना भी धरम नही है। जो जाता है उसे असीस देकर विदा कर दे। —गोदान

धरम का बंधन वडा कडा होता है। जिस समाज मे जन्मे और पले, उसकी मर्यादा का पालन तो करना ही पडता है। और किसी जाति का धरम बिगड़ जाए, उसे कोई विशेष हानि नही होती; बाम्हन का धरम बिगड जाय, तो वह कही का नहीं रहता। उसका धरम ही उसके

पूर्वजो की कमाई है। उसी की वह रोटी लाता है। इस परासचित* के पीछे हमारे तीन सौ बिगड गये। तो जब वेधरम होकर ही रहता है, तो फिर जो कुछ करना है परतच्छ† करूँगा। समाज के नाते आदमी का अगर कुछ धरम है, तो मनुष्य के नाते भी तो उसका कुछ धरम है। समाज-धरम पालने से समाज आदर करता है; मगर मनुष्य धरम पालने से तो ईश्वर प्रसन्न होता है। —गोदान

पति व्रत धरम विचित्र वन्धन है, रहे तो जन्म जन्मान्तर तक रहे, टूटे तो क्षण भर मे टूट जाए। —मानसरोवर-निर्वासन

धर्म निष्ठा नारियो का स्वाभाविक गुण है।

—मानसरोवर-नैराश्य लीला

आत्मा की रक्षा के सिवा कोई धर्म नही।

—मानसरोवर-नैराश्यलीला

बुद्धि की मदता वहुधा सामाजिक अनुदारता के रूप मे प्रकट होती है। मानसरोवर—स्वर्ग की देवी

मै तो नीति ही को धर्म समझता हूँ और सभी सम्प्रदायो की नीति एक-सी है। अगर अतर है तो वहुत थोडा। हिन्दू मुसलमान, ईसाई, वौद्ध, सभी सत्कर्म और सद्विचार की शिक्षा देते है। हमे कृष्ण, राम, ईसा, मुहम्मद, वुद्ध सभी महात्माओ का समान आदर करना चाहिए। ये मानव-जाति के निर्माता है। जो इनमे से किसी का अनादर करता है, या उनकी तुलना करने वैठता है, वह अपनी मूर्खता का परिचय देता है। वुरे हिन्दु से अच्छा मुसलमान उतना ही अच्छा है, जितना वुरे मुसलमान से अच्छा हिन्दू। देखना यह चाहिए कि वह कैसा आदमी है न कि यह वह किस धर्म का आदमी है। ससार का भावी धर्म सत्य, न्याय और प्रेम के आधार पर वनेगा। हमे अगर संसार मे जीवित रहना है तो अपने हृदय मे इन्ही भावो का सचार करना पडेगा।

—कायाकल्प

---

* प्रायश्चित्त † प्रत्यक्ष

मज़हव रुहाना तसकीन और निजात का जरिया है, न कि दुनियाँ के कमाने का ढकोसला।

—प्रेमाश्रम

मजहव दिल की तस्कीन के लिए है, दुनिया कमाने के लिए नहीं, मुल्की हकूक हासिल करने के लिए नही। वह आदमी जो मजहव की आड मे दौलत और इज्जत हासिल करना चाहता है, अगर हिन्दू है तो मलेच्छ है, मुसलमान है तो काफिर है, हाँ काफिर है, मजदूर है, रुसियाह है।

—प्रेमाश्रम

धर्म तत्व सब एक हैं। हजरत मुहम्मद को खुदा का रसूल मानने मे मुझे कोई आपत्ति नही। जिस सेवा, त्याग, दया, आत्मबुद्धि पर हिन्दू धर्म की बुनियाद कायम है उसी पर इस्लाम की बुनियाद भी कायम है। इस्लाम मुझे बुद्ध और कृष्ण और राम की ताजीम करने से नही रोकता। मैं इस वक्त अपनी इच्छा से हिन्दू नही हूँ, वल्कि इसलिए कि हिन्दू घर मे पैदा हुआ हूँ। तब भी मैं अपनी इच्छा से मुसलमान न हूँगा, वल्कि इसलिए कि सकीना की मरजी है। मेरा अपना ईमान यह है, कि मजहव आत्मा के लिए वन्धन है।

—कर्मभूमि

इस्लाम की निगाह मे सब वरावर है। सभी पक्ति मे खडे हो जाते है। कितना सुन्दर सचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था। लाखो सिर एक साथ सिजदे मे झुक जाते है, फिर सव-के-सव एक साथ खडे हो जाते हैं। एक साथ झुकते है और एक साथ घुटनो के वल वैठ जाते हैं। समाज की, सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार की अनन्तता, हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानन्द से भर देती है, मानो भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओ को एक लडी मे पिरोये हुए है।

—मानसरोवर-ईदगाह

मजहव खिदमत का नाम है, लूट और कत्ल का नही।

—मानसरोवर-दिल की रानी

किसी को मजाज नही कि कोई दूसरे मजहव वालो से उनके ईमान

का तावान ले। कोई मजाज नही है; अगर मस्जिद मे अजान होती है, तो कलीसा मे घण्टा क्यो न बजे? घण्टे की आवाज मे कुफ्र नही है। काफिर वह है जो दूसरो का हक छीन ले, जो गरीबो को सताये, दगाबाज हो, खुदगरज हो। काफिर वह नही जो मिट्टी या पत्थर के टुकडो मे खुदा का नूर देखता हो, जो नदियो और पहाड़ो मे, दरख्तो और झाडियो मे खुदा का जलवा पाता हो। वह हमसे और तुझसे ज्यादा खुदापरस्त है जो मस्जिद मे खुदा को बन्द समझते हैं। किसी को काफिर समझना कुफ्र है। हम सब खुदा के बन्दे है, सब।

—मानसरोवर-दिल की रानी

धर्म द्रोहियो को मारना अधर्म नही है? —कायाकल्प

इस्लाम ने कभी दूसरे मजहब वालो की दिलजारी नही की। उसने हमेशा दूसरो के जजबात का एहतराम किया है। बगदाद और रूम, स्पेन और मिश्र की तारीखें उस मजहबी आजादी की शाहिद है, जो इस्लाम ने उन्हे अता की थी। —कायाकल्प

प्रेम बन्धन न हो, पर धर्म तो बन्धन है। —कायाकल्प

बुद्धि एक प्रकार का नजला है, जब दिमाग मे नही समाती तो जिस्म मे आ जाती है। —मानसरोवर-सत्याग्रह

कोई पढा लिखा आदमी दिल से मजहब को नही मानता। मजहब पढे लिखे आदमियो के लिए नही है। उनके लिए तो (Ethics) काफी है। जब कोई पढा-लिखा आदमी मजहबी बातचीत करे, तो फौरन समझ लो कि वह कोई साजिश करना चाहता है। धर्म के साथ राजनीति बहुत खतरनाक हो जाती है। —कायाकल्प

अपने गुरू का सम्मान करना शिष्य का धर्म है। —कायाकल्प

नारी बुद्धि तीक्ष्ण होती है। —कायाकल्प

धरम करना हँसी खेल नही है। धरम वह करता है, जिने भगवान् ने माना हो। —मानसरोवर-प्रेम का उदय

आजकल धर्म तो धूर्तो का अड्डा बना हुआ है। इस निर्मल सागर

मे एक से एक मगरमच्छ पडे हुए हैं। भोले भाले भक्तो को निगल जाना उनका काम है। लम्बी-लम्बी जटाएँ, लम्बे-लम्बे तिलक-छापे और लम्बी-लम्बी दाढ़ियाँ देखकर लोग धोखे मे आ जाते हैं, पर वे सब के सब महा पाखण्डी, धर्म के उज्ज्वल नाम को कलंकित करने वाले, धर्म के नाम पर टका कमाने वाले, भोग विलास करने वाले पापी हैं।

—सेवासदन

धर्म की क्षति जिस अनुपात से होती है, उसी अनुपात से आडम्बर की वृद्धि होती है। —कर्मभूमि

नागरिको की रक्षा करना पुरुषो का धर्म है। —प्रेमाश्रम

इस्लाम औरतों के हक का जितना लिहाज करता है, उतना और कोई मजहब नही करता। —मानसरोवर-हिंसा परमो धर्म.

मजहब का नाम सहानुभूति, प्रेम और सौहार्द है, घृणा नही।

—मानसरोवर-हिंसा परमो धर्मः

हमको अपने धार्मिक विचारो पर, अपनी सामाजिक रीतियो पर एक अभिमान सा होता है। हमे उनमे कोई त्रुटि दिखाई नही देती। जब हम अपने धर्म के विरुद्ध कोई प्रमाण या दलील सुनने का साहस नही कर सकते, जब हममे क्या-और क्यो का विकास नही होता है।

—सेवासदन

ज्ञान भी जब सीमा से बाहर हो जाता है, तो नास्तिकता के क्षेत्र मे जा पहुँचता है। —मानसरोवर-दीक्षा

इस्लाम का प्रचार तलवार के बल से हुआ है, सेवा के बल से नही। —मानसरोवर-दीक्षा

इस्लाम की शक्ति उसका आंतरिक भ्रातृत्व और साम्य है, तलवार नही। —मानसरोवर-क्षमा

न्याय और कर्त्तव्य

कर्त्तव्य कभी आग और पानी की परवाह नही करता। —रंगभूमि

न्याय और कर्त्तव्य के सामने पिता, पुत्र या पति का पक्षपात न किया जाये, तो कोई लज्जा की बात नही है। —रंगभूमि

एक राजा का सम्मान एक क्षुद्र न्याय से कही ज्यादा महत्त्व की वस्तु है। —रंगभूमि

राजा कितना ही सबल हो, पर न्याय का गौरव रखने के लिए कभी कभी राजा को भी सिर झुकाना पडता है। —रगभूमि

न्याय करना उतना कठिन नही है, जितना अन्याय का शमन करना। —रगभूमि

कर्त्तव्य के सामने माता-पिता की इच्छा का मूल्य नही है। —कायाकल्प

कर्त्तव्य ही ऐसा आदर्श है, जो कभी धोखा नही दे सकता। —कायाकल्प

न्याय, धर्म और परोपकार सब बहुत अच्छी बातें हैं, लेकिन हर काम के लिए एक अवसर होता है। —कायाकल्प

कर्त्तव्य का पालन ही चित्त की शाति का मूल यंत्र है। —कायाकल्प

किसी प्राणी के प्रति अपने कर्त्तव्य का ध्यान हमे उसके मरने के बाद ही आता है। —कायाकल्प

मानव का कर्त्तव्य यही है कि वह अपने सिद्धान्त का पालन करे। —सेवासदन

कर्त्तव्य का आदर्श बहुत ऊँचा है। —कायाकल्प

यदि सुशिक्षित और उदार पुरुष विरोध और भय के कारण कर्त्तव्य और न्याय से मुँह मोडे, तो फिर उसका उद्धार हो चुका। —कायाकल्प

न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं, इन्हे वह जैसे चाहती है नचाती है। —मानसरोवर-नमक का दारोगा

किसी प्राणी के प्रति अपने कर्त्तव्य का ध्यान हमे उसके मरने के बाद आता है। —कायाकल्प

सौजन्य और शालीनता निजके कामो मे चाहे कितनी ही सराहनीय हो, लेकिन शासन-कार्य मे यह सदगुण अवगुण बन जाते है। लोग उनसे अनुचित लाभ उठाने लगते है। उन्हे अपनी स्वार्थ सिद्धि का साधन बना लेते है। अतएव न्याय और शील मे परस्पर विरोध हो जाता है।

—प्रेमाश्रम

जब हम अपने किसी कर्त्तव्य से मुँह मोडते है तो दोष से बचने के लिए ऐसी प्रबल युक्तियाँ निकालते है कि कोई मुँह न खोल सके। उस समय हम सकोच को छोडकर अपने सम्बन्ध मे ऐसी ऐसी बातें कह डालते है कि जिनसे गुप्त रहने ही मे हमारा कल्याण है। —सेवासदन

न्याय वह है जो कि दूध का दूध, पानी का पानी कर दे, यह नही कि खुद ही कागज़ो के धोखे मे आ गये, खुद ही पाखण्डियो के जाल मे फँस जाए। इसी से तो ऐसे छली, कपटी, दगाबाज और दुरात्माओ का साहस बढ़ गया है। —मानसरोवर-ईश्वरीय न्याय

हमे मनुष्य के न्याय का डर न हो, परन्तु ईश्वर के न्याय का डर प्रत्येक मनुष्य के मन मे स्वभाव से रहता है।

—मानसरोवर-गरीब की हाय

न्याय केवल धर्मान्ध मनुष्यो का मन–समझौता है, ससार मे इसका अस्तित्व नही। बाप ऋण लेकर मर जाय, लडका कौडी कौडी भरे। विद्वान लोग इसे न्याय कहते हैं, मैं इसे घोर अत्याचार समझती हूँ इस न्याय के परदे मे गाँठ के पूरे महाजन की हेकडी साफ झलक रही है। एक डाकू किसी भद्र पुरुष के घर मे डाका मारता है, लोग उसे पकडकर

कैद कर देते है। धर्मात्मा लोग इसे भी न्याय कहते हैं, किन्तु यहाँ भी वही धन और अधिकार की प्रचण्डता है। भद्र पुरुष ने कितने ही घरो को लूटा, कितनो ही का गला दवाया और इस प्रकार धन-सचय किया, किसी को भी उन्हे आँख दिखाने का साहस न हुआ। जब डाकू ने उनका गला दवाया तो वह अपने धन और प्रभुत्व के वल से उस पर वज्र प्रहार कर वैठे। मैं इसे न्याय नही कहती। ससार मे धन, छल, कपट, धूर्त्तता का राज्य है, यही जीवन सग्राम है। यहाँ प्रत्येक साधन जिससे हमारा काम निकले, जिससे हम अपने शत्रुओ पर विजय पा सके, न्यायानुकूल और उचित है। —मानसरोवर-ज्वालामुखी

नम्रता और निर्भीकता

निर्भीकता स्वतन्त्रता की पहली सीढी है। —कायाकल्प

नम्रता का जवाव सद्व्यवहार हो सकता है, स्वार्थ और त्याग नही। —प्रेमाश्रम

नम्रता पत्थर को भी मोम कर देती है। —निर्मला

नशा

नशे वालो को ऐसी आदत होती है कि न देखें तो चाहे वरसो न पिएँ, पर नशा सामने देखकर उनसे नही रहा जाता। —रंगभूमि

नशे मे हम मैदान की तरफ दौडते है, सचेत होकर हम घर मे विश्राम करते है। —रंगभूमि

जाता। किन्तु पुरुषो मे वह अवस्था कभी नही आती। उनकी कामेन्द्रियाँ क्रियाहीन भले ही हो जायँ, पर विषय वासना सम्भवतः और भी बलवती हो जाती है।
—मानसरोवर-भूत

नारी जाति बलवान पुरुष पर जान देती है, क्योकि वह निर्बल है इसलिए बलवान का आश्रय ढूँढती है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

मैं स्त्री को अबला या अपग नही समझता। वह अपनी रक्षा स्वय कर सकती है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

बेचारी भोली भाली स्त्री अपना सर्वस्व देकर खिलौने पाती है और उन्ही मे मग्न रहती है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

विलासिनी मनोरजन कर सकती है, चिर संगिनी नही बन सकती। पुरुष के गले से लिपटी हुई भी वह कोसो दूर रहती है।
—मानसरोवर-दो सखियाँ

आपत्तियो का झेलना और दुरवस्था मे स्थिर रहना यह सच्ची ब्राह्मणियो का धर्म है। —सेवासदन

ऐसी स्त्री, जो सुशिक्षित हो, विचार शील हो, अँग्रेजी रहन सहन से परिचित हो, बातचीत करने मे चतुर हो, आसानी से नही मिल सकती, मिली भी तो उसमे चरित्र दोष अवश्य रहे होगे। जहाँ ऐमी स्त्रियो को देखता हूँ, भ्रष्ट ही पाता हूँ। कोई उनकी सूरत नही देखना चाहता।
—कायाकल्प

हमारा मुँह हमारी देवियो से उज्ज्वल है और जिस दिन हमारी देवियाँ घर से निकल कर मर्यादा की हत्या करने लगेगी, उसी दिन हमारा सर्वनाश हो जायेगा। —कायाकल्प

स्त्री मे सुन्दरता ही सबसे बड़ा गुण नही होता। —कायाकल्प

ईश्वर ने स्त्रियो को निन्दा और परिहास के लिए ही रचा है।
—कायाकल्प

भ्रष्ट वह होती है जो दुर्वासना से कोई कर्म करे। —कायाकल्प

अबला के पास कौशल्य के सिवाय आत्मरक्षा का और कौन सा

साधन है। —कायाकल्प

चील को चाहे मांस की बोटी न दिखाई दे, चिउँटी को चाहे शक्कर की सुगन्ध न मिले, लेकिन रमणी का एक-एक रोयाँ पचेन्द्रियो की भाँति प्रेम के रूप, रस, शब्द, स्पर्श का अनुभव किए बिना नही रहता।
—कायाकल्प

रमणी का हृदय सेवा के सूक्ष्म परमाणुओ से बना होता है। उसका प्रेम भी सेवा है, उसका अधिकार भी सेवा है, यहाँ तक कि उसका क्रोध भी सेवा है। —कायाकल्प

स्त्रियो को हमने कामिनी, रमणी, सुन्दरी आदि विलास सूचक नाम दे देकर वास्तव मे उन्हे वीरता, त्याग और उत्सर्ग से शून्य कर दिया है। अगर सभी पुरुष वासनाप्रिय नही होते, तो सभी स्त्रियाँ क्यो वासनाप्रिय होने लगी ? —कायाकल्प

नारी के लिए पुरुष सेवा से बढकर और कोई शृंगार, कोई विलास, कोई भोग नही है। —कायाकल्प

स्त्री कभी पुरुषो का खिलौना है, कभी उनके पांव के जूती। इन्ही अवस्थाओं मे उसकी उम्र बीत जाती है। —कायाकल्प

स्त्री सतानहीन होकर भी पुरुष के लिए शाति, आनन्द का एक अविरल स्रोत है। —सेवासदन

स्त्रियाँ स्वभावतः लज्जावती होती हैं। उनमे आत्माभिमान की मात्रा अधिक होती है। निन्दा अपमान उनसे सहन नही हो सकता है।
—मानसरोवर-ईश्वरीय न्याय

स्त्री का बल और साहस, मान और मर्यादा पति तक है। उसे अपने पति के ही बल और पुरुषत्व का घमड होता है।
—मानसरोवर-बड़े घर की बेटी

बडे घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं। बिगडता हुआ काम बना लेती है। —मानसरोवर-बड़े घर की बेटी

अच्छी घरनी घर मे आ जाये, तो समझ लो लक्ष्मी आ गई। वही

आपका अधिकार हिंसा और विध्वंस मे नहीं, सृष्टि और पालन मे है।

—गोदान

नारियाँ इसलिए अधिकार चाहती हैं कि उनका सदुपयोग करे और पुरुषो को उनका दुरुपयोग करने से रोके। गोदान

हमारी बहनें पश्चिम का आदर्श ले रही हैं, जहाँ नारी ने अपना पद खो दिया है और स्वामिनी से गिरकर विलास की वस्तु बन गई है। पश्चिम की स्त्री स्वच्छन्द होना चाहती है, इसलिए कि वह अधिक से अधिक विलास कर सके। हमारी माताओ का आदर्श कभी विलास नही रहा। उन्होने केवल सेवा के अधिकार से सदैव गृहस्थी का सचालन किया है। पश्चिम मे जो चीजे अच्छी है, वह उनसे लीजिए। सस्कृति मे सदैव आदान प्रदान होता आया है, लेकिन अंधी नकल तो मानसिक दुर्बलता की लक्षण है। पश्चिम की स्त्री आज गृह स्वामिनी नही रहना चाहती। भोग की विदग्ध लालसा ने उसे उच्छृंखल बना दिया है। वह अपनी लज्जा और गरिमा को जो उसकी सबसे बडी विभूति थी, चंचलता और आमोद प्रमोद पर होम कर रही है।

—गोदान

स्त्रियो के स्वभाव के ज्ञान मे आदमी बूढा होने पर भी कोरा रह जाता है।

—निर्मला

अगर पति ने पत्नी की गोद मे कराह-कराह कर प्राण त्याग किए होते है तो उसे सतोष होता है कि मैंने उनके प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया है। शोकाकुला हृदयो को इससे ज्यादा सान्त्वना और किसी बात से नही होती। उसे इस विचार से कितना सन्तोप होता है कि मेरे स्वामी मुझ से प्रसन्न हो गये, अतिम समय तक उनके हृदय मे मेरा प्रेम बना रहा।

—निर्मला

औरतो को रूप की निंदा जितनी अप्रिय लगती है, उससे कही अधिक अप्रिय पुरुषो को अपने पेट की निंदा लगती है। —निर्मला

युवती के सामने दिल निकाल कर रख देना चाहिए, वही उसके वशीकरण का मुख्य मंत्र है।

—निर्मला

युवती अपने से अधिक आयु वाले पति को प्रेम की वस्तु नही, सम्मान की वस्तु समझती है। —निर्मला

युवती का तृषित हृदय प्रणय की ओर से निराश होकर बच्चो के अवलम्ब ही को गनीमत समझता है, उनके साथ हँसने-बोलने मे उसकी मातृ-कल्पना तृप्ति हो जाती है। —निर्मला

सदेह के कठोर पजे मे फँसी हुई अवला क्या अपने को हत्याकारिणी समझकर बहुत दिन जीवित रह सकती है? —निर्मला

कुछ भी हो, जवानी ढल जाने पर जवान औरत से विवाह करके कुछ-न-कुछ वेहयाई जरूर करनी पड़ती है। इसमे संदेह नही। स्त्री स्वभाव से लज्जाशील होती है। कुलटाओ की बात तो दूसरी है, पर साधारणतः देवियो को ऊँचे शिखर से खीचकर अपने बराबर बनाने के लिए उन पुरुषो को, जो कायर हैं, जिनमे वैवाहिक जीवन का दायित्व संभालने की क्षमता नही है, जो स्वच्छन्द काम क्रीडा की तरंगो में साँडो की भाँति दूसरो की हरी भरी खेती मे मुँह डालकर अपनी कुत्सित लालसाओ को तृप्त करना चाहते है। पश्चिम मे उनका षड्यन्त्र सफल हो गया और देवियाँ तितलियाँ बन गई। —गोदान

भूल जाइए कि नारी श्रेष्ठ है और सारी जिम्मेदारी उसी पर है, श्रेष्ठ पुरुष है और उसी पर गृहस्थी का सारा भार है। नारी मे सेवा और सयम और कर्त्तव्य सब कुछ वही पैदा कर सकता है; अगर उसमे इन बातो का अभाव है, तो नारी मे भी अभाव रहेगा। नारियो मे जो यह विद्रोह है, इसका कारण पुरुष का इन गुणो से शून्य हो जाना है। —गोदान

स्त्री जितनी क्षमाशील हो सकती है, पुरुष नही हो सकता ....।

—गोदान

जो आदर्श नारी हो सकती है, वही आदर्श पत्नी भी हो सकती है। औरत के हाथ मे बड़ी बरक्कत होती है। —गोदान

जो औरत घर का काम करती है, उसके लिए किसी व्यायाम की

जरूरत नही और जिसको घर का कोई काम नही और भोग विलास मे रत है, उसके लिए चन्दा देना अधर्म है। —गोदान

औरत घी का घडा लुढका दे, घर मे आग लगा दे, मर्द सह लेगा, लेकिन उसका कुराह चलना कोई मर्द न सहेगा। —गोदान

सतीत्व हिन्दुस्तानी तहजीब की आत्मा है। —गोदान

स्त्री पुरुष से कही अधिक संयमशील होती है। जोड का पति पाकर वह चाहे पर-पुरुष से हँसी दिल्लगी कर ले, पर उसका मन शुद्ध रहता है। बेजोड विवाह हो जाने से वह चाहे किसी की ओर आँखें उठाकर न देखे, पर उसका चित्त दुःखी रहता है। वह पक्की दीवार है, उसमे सलरी का असर नही होता, यह कच्ची दीवार है और उसी वक्त तक खडी रहती है, जब तक उस पर सलरी न चलाई जाए।— निर्मला

कुलवंती स्त्रियाँ पति की निन्दा नही करती—यह कुलटाओ का का काम है। —निर्मला

स्त्री का सप्रेम आग्रह पुरुष से क्या नही करा सकता! —गबन

ऐसी कोई स्त्री नही जिसने अपने पति की निष्ठुरता का दुखडा न रोया हो। —गबन

स्त्रियो मे बडा स्नेह होता है। पुरुषो की भाँति उसकी मित्रता केवल पान-पत्ते तक ही समाप्त नही हो जाती। —गबन

जो पुरुष तीस-चालीस रुपये महीने का नौकर हो, उसकी स्त्री अगर दो चार रुपए रोज खर्च करे, हजार-दो हजार के गहने पहनने की नीयत रखे, तो वह अपनी और उसकी तबाही का सामान कर रही है।
—गबन

कामिनी के शब्द जितनी आसानी से दीन और ईमान को गारत कर सकते है, उतनी ही आसानी से उनका उद्धार भी कर सकते है।
—मानसरोवर-घासवाली

स्त्री घर की लक्ष्मी है। घर के प्राणियो को खिलाना-पिलाना वह अपना कर्त्तव्य समझती है और चाहे यह उसका अन्याय ही क्यो न हो,

लेकिन अपनी दीन हीन दशा पर जो मानसिक वेदना उसे होती है, वह पुरुषो को नही हो सकती। —मानसरोवर-खून सफेद

पुरुष और स्त्रियो मे बडा अन्तर है। तुम लोगो का हृदय शीशे की तरह कठोर होता है और हमारा हृदय नरम। वह विरह की आँच नही सह सकता। —मानसरोवर-धर्म संकट

स्त्रियो की कोमलता पुरुषो की काव्य कल्पना है। उनमे शारीरिक सामर्थ्य न हो, पर उनमे वह धैर्य और मिठास है जिस पर काल की दुश्चिन्ताओ का जरा भी असर नही होता। —मानसरोवर-धर्म संकट

स्त्रियाँ ही कुलमर्यादा की सम्पत्ति होती हैं। मर्द उसके रक्षक होते है। जब इस सम्पत्ति पर कपट का हाथ उठे तो मर्दों का धर्म है कि रक्षा करे। इस पूँजी को अदालत का कानून, परमात्मा का भय या सद्विचार नही बचा सकता। हमको इसके लिए न्यायालय से जो दण्ड प्राप्त हो, वह शिरोधार्य है। —मानसरोवर-विस्मृति

महिलाये रहस्य की बाते करने मे बहुत अभ्यस्त होती हैं।

—मानसरोवर-नैराश्यलीला

हम गृहिणी कहलाती है, हमारा काम है अपनी गृहस्थी मे रत रहना। आमोद-प्रमोद मे दिन काटना हमारा काम नही।

—मानसरोवर-नैराश्यलीला

आहत को तडफाना उनका (महिलाओ का) उद्देश्य था। इस खुली हुई चोट ने उनके पर-पीडिन प्रेम के लिए कोई गुंजाइश नही छोडी। —मानसरोवर-नैराश्यलीला

ईर्ष्या से उन्मत्त स्त्री जो कुछ कर सकती है, उसकी आप शायद कल्पना नही कर सकते। —कायाकल्प

वह स्त्री सचमुच पिशाचनी है जो अपने पुरुष का अमंगल सोचे।

—कायाकल्प

पति-प्रेम से वंचित होकर स्त्री के उद्धार का कोई उपाय नही। पति ही स्त्री का सर्वस्व है। जिसने अपना सर्वस्व खो दिया उसे सुख

कैसे मिलेगा ?

—कायाकल्प

स्त्री बदले के लिए पुरुष की सेवा नही करती। —कायाकल्प

स्त्रियो मे आकर्षण शक्ति पुरुषो से अधिक होती है, इसका कारण ... स्त्रियो का जीवन क्षेत्र परिमित होता है और पुरुषो का विस्तृत। इसीलिए स्त्रियो की सारी शक्तियाँ केन्द्रस्थ हो जाती है और पुरुषो की विच्छिन्न।

—प्रेमाश्रम

मर्द ही स्त्रियो के आधीन होते है। स्त्रियाँ उनके जीवन की विधाता होती है देह पर उनका शासन चाहे न हो, हृदय पर उन्ही का साम्राज्य होता है।

—प्रेमाश्रम

कोई गौरवशील रमणी इतनी सहज रीति से वशीभूत नही हो सकती। अपनी सतीत्व रक्षा का विचार स्वाभावतः उसकी काम वासना कोदवा देता है। ऐसा न हो, तो भी वह अपनी उदासीनता और अनिच्छा प्रकट करने के लिए कठोरता का स्वाँग करना आवश्यक समझती है। शायद इससे उसका अभिप्राय प्रेम परीक्षा होता है। —प्रेमाश्रम

पुरुप हजार रसिया हो, हजार चतुर हो, हजार छलिया हो, हजार डोरे डाले, किन्तु सती स्त्रियो पर उसका एक मन्त्र भी नही चल सकता। वह आँख ही क्या जो एक निगाह मे पुरुप की चाल ढाल को ताड न ले। जलाना आग का गुण है, पर हरी लकडी को भी किसी ने जलते देखा है ? हया स्त्रियो की जान है, इसके बिना वह सूखी लकड़ी है, जिन्हे आग की चिन्गारी जलाकर राख कर देती है। —प्रेमाश्रम

स्त्री अपनी कुप्रवृत्ति का दोष सदैव पुरुप के सिर पर रखती है, अपने को वह दलित और आहत समझती है। —प्रेमाश्रम

जिस आग से आदमी हाथ सेंकता है, क्या काम पडने पर उससे अपने चने नही भून लेता ? स्त्रियाँ गहनो पर प्राण देती है, लेकिन अवसर पडने पर उतार भी फेकती है। —प्रेमाश्रम

औरत निर्बल है और इसीलिए उसे मान-अपमान का दुःख भी ज्यादा होता है। —कर्मभूमि

परिहास मे औरत अजेय होती है, खासकर जब वह बूढी हो।

—कर्मभूमि

सैकड़ो स्त्रियाँ जो हर रोज बाजार मे झरोखो मे बैठी दिखाई देती हैं, जिन्होने अपनी लज्जा और सतीत्व को भ्रष्ट कर दिया है, उनके जीवन का सर्वनाश करने वाले हमी लोग हैं। वह हजारो परिवार जो आये दिन इस कुवासना के भँवर मे पडकर विलुप्त हो जाते हैं, ईश्वर के दरबार मे हमारा ही दामन पकड़ेगे। जिस प्रथा से इतनी बुराइयाँ उत्पन्न हो उसका त्याग करना क्या अनुचित है ?

—सेवासदन

गाँव मे स्त्रियो के दो दल होते है—एक बहुओ का, दूसरा सासो का। बहुएँ सलाह और सहानुभूति के लिए अपने दल मे जाती है, सासे अपने दल मे। दोनो की पचायते अलग होती है।

—मानसरोवर-अलग्योझा

ससार से किसके दिन समान होते है ? विपत्ति सभी पर आती हे। बडे-बडे धनवानो की स्त्रियाँ अन्न वस्त्र को तरसती हैं; पर कोई उनके मुख पर चिन्ता का चिन्ह भी नही देख सकता। वे रो रोकर दिन काटती है, कोई उनके आँसू नही देखता। वे किसी के सामने अपनी विपत्ति की कथा नही कहती। वे मर जाती हैं पर किसी का ऐहसान सिर पर नही लेती। वे देवियाँ है। वे कुल मर्यादा के लिए जीती हैं और उसकी रक्षा करती हुई मरती है।

—सेवासदन

दरिद्र अपनी साख बनाये रखने की चेष्टा मे और भी दरिद्र हो जाता है।

—कायाकल्प

अमीरो का ऐहसान कभी न लेना चाहिए, कभी-कभी उसके बदले मे आत्मा तक बेचनी पडती है।

—कायाकल्प

दरिद्रता मे बीमारी कोढ का खाज है।

—मानसरोवर-सती

धनी के जीने से दुःख बहुतो को होता है, सुख थोड़ो को। उनके मरने से दुःख थोड़ो को होता है, सुख बहुतो को।

—मानसरोवर-मृतक का भोज

बड़ो के पास धन होता है, छोटो के पास हृदय होता है। धन से बडे-बडे व्यापार होते है, बडे-बडे महल बनते हैं, नौकर चाकर होते है, सवारी शिकारी होती है। हृदय से समवेदना होती है, आँसू निकलते है।

—मानसरोवर-मृतक का भोज

सच्ची सज्जनता भी दरिद्रो और नीचो ही के पास रहती है। बड़ो की दया भी होती है, अहकार का दूसरा रूप।

—मानसरोवर-मृतक का भोज

कगाल मनुष्य धन पाकर जिस प्रकार फूल उठता है उसी तरह सुन्दर स्त्री पाकर वह सशय और भ्रम मे आसक्त हो जाता है।

—सेवासदन

हम लोग समझते है, बड़े आदमी बहुत सुखी होगे: लेकिन सच पूछो तो वह हमसे भी ज्यादा दुःखी है। हमे अपने पेट ही की चिन्ता है, उन्हे हज़ारो चिन्ताएँ घेरे रहती है।

—गोदान

जो गरीब है उसे गरीबो ही के यहाँ सम्बन्ध करना चाहिए। अपनी हैसियत से बढकर.... . ... ।

—निर्मला

दरिद्र प्राणी उस धनी से कहीं सुखी है, जिसे उसका धन साँप बनकर काटने दौडे। उपवास कर लेना आसान है, विषैला भोजन करना उससे कही मुश्किल।

—निर्मला

अमीरो मे एक बेदर्दी और उदण्डता होती है।

—मानसरोवर-नशा

संसार के धर्मग्रन्थ, उपनिषदो से लेकर कुरान तक उन लोगो के

रचे हुए है, जो रोटियो के मुहताज थे। —कायाकल्प

दरिद्रता मे मनुष्य प्रायः भाग्य का आश्रित हो जाता है।

—प्रेमाश्रम

आजकल तो न्याय गरीबो के लिए एक अलभ्य वस्तु हो गया है, पग-पग पर रुपए का खर्च। —प्रेमाश्रम

गरीबो के हक के लिए अपनी जिन्दगी कुरबान कर दे, उसे अगर कोई सताये, तो वह इन्सान नही, हैवान भी नही, शैतान है। —प्रेमाश्रम

बडे आदमी को तो हमी लोग बनाते-बिगाड़ते है, या कोई और? कितने लोग जिन्हे कोई पूछता भी न था, हमारे ही बनाये बडे आदमी बन गये और अब मोटरो पर निकलते है और हमे नीच समझते है। यह लोगो की तकदीर की खूबी है कि जिसकी जरा बढती हुई और उसने हमसे आखे फेरी। हमारा वड़ा आदमी तो वही है, जो लंगोटी कसे नगे पाँव घूमता है, जो हमारी दशा को सुधारने के लिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरता है। और हमे किसी बडे आदमी की परवाह नही है। सच पूछो तो उन बडे आदमियों ने ही हमारी मिट्टी खराब कर रखी है। इन्हे सरकार ने कोई अच्छी सी जगह दे दी, बस उसका दम भरने लगे।

—मानसरोवर-जुलूस

निर्बल और सबल

निर्बल मनुष्य को अपनी लकड़ी से भी अगाध प्रेम हो जाता है।

—रंगभूमि

कमजोरी ही मे हम लकडी का सहारा लेते है। —कायाकल्प

सबल की शिकायते है, निर्बल की फरियाद भी कोई नही सुनता।

—मानसरोवर-अलग्योझा

धूर्तता तो निर्बलों का हथियार है। बलवान कभी नीच नही होता।

—रंगभूमि

दुर्बलता रोग का पूर्व रूप है। —मानसरोवर-पूर्व सस्कार

नीति और नीतिज्ञ

नीतिज्ञ के लिए अपना लक्ष्य ही सब कुछ है, आत्मा का उसके सामने कुछ मूल्य नही। गौरव सम्पन्न प्राणियो के लिए अपना चरित्रबल ही सर्वप्रधान है। —रंगभूमि

विवाद मे हम बहुधा अत्यन्त नीति परायण बन जाते है, पर वास्तव मे इससे हमारा अभिप्राय: यही होता है कि विपक्षी की जबान बन्द कर दे। प्रेमाश्रम

कायदे का पाबन्द आदमी कुछ सुनता ही नही। —निर्मला

नीति के विरुद्ध कोई काम करने का फल अपने तक नही रहता, दूसरो पर उसका और भी बुरा असर पडता है। —कायाकल्प

हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और वाली नीति पर चलना इसान को शोभा नही देता है। —निर्मला

सिद्धात मनुष्य के लिए है, मनुष्य सिद्धातो के लिए नही है।

—प्रेमाश्रम

जो व्यक्ति कर्म और वचन मे सामंजस्य नही रख सकता, वह और चाहे जो कुछ हो, सिद्धातवादी नही है। —गोदान

कानून मे पाखण्ड का भी तो दड है। —मानसरोवर-नैराश्य

नीतिज्ञ के लिए यश और धन की कमी नही।

—मानसरोवर-भाडे का टट्टू

नेकी

दुश्मन के साथ नेकी करना रोगियो की सेवा से छोटा काम नही है।

—रंगभूमि

अपनी नेकी-बदी अपने साथ है। मतलबी तो ससार है, फिर किसके लिए मरता है। जो अपने मतलब के लिए दूसरों का गला काटे उसे तो जहर देना भी पाप नही। —गबन

नेकनामी और बदनामी सब ढकोसला है। —प्रतिज्ञा

भगवान घर का बडा न बनाये। छोटो पर कोई नही हँसता। नेकी-बदी सब बडो के सिर जाती है। —गोदान

नेकी अगर करने वाले के दिल मे रहे, तो नेकी है, बाहर निकल आये तो बदी है। —गोदान

पतन

भोजन का अभाव ही हमारे नैतिक और आर्थिक पतन का मुख्य कारण है। —रंगभूमि

अपने मित्रो और सहयोगियो की दृष्टि मे पतित होकर जिंदा रहना श्रेय की बात नही। —रंगभूमि

आत्मपतन को वह दार्शनिक की उदार दृष्टि से नही, मुग्ध लोभी की दृष्टि से देखता है। —सेवासदन

पराधीनता

पराधीनता मे प्रकार का नही केवल मात्राओ का अतर है।

—रंगभूमि

पराधीनता दुर्गुणो को जगाती है। —कायाकल्प

पराधीनता एक ईश्वरीय विधान का रूप धारण कर लेती है जिसमें विकास और जागृति का मत्र छिपा हुआ है। —कायाकल्प

पराधीनता दण्ड नही है, यह शिक्षालय है, जो हमे स्वराज्य के सिद्धांत सिखाता है, हमारे पुराने कुसस्कारो को मिटाता है, हमारी मुँदी हुई आँखे खोलता है। —कायाकल्प

इन्द्रियो की गुलामी पराधीनता से कही अधिक दु खदायिनी होती है। —सेवासदन

बिना देशाटन किए अपनी पराधीनता का यथेष्ट ज्ञान नही होता।

—प्रेमाश्रम

गुलामी के मानसिक, आत्मिक, शारीरिक आदि विभाग करना भ्रांतिकारक है। गुलामी केवल आत्मिक होती है, और दशाएँ इसी के अन्तर्गत हैं। मोटर, बँगले, पोलो और प्यानो यह एक बेडी के तुल्य हैं। जिसने इन बेड़ियो को नही पहना उसी को सच्ची स्वाधीनता का आनद प्राप्त हो सकता है। —सेवासदन

पुरुषो के अधीन स्त्रियाँ अपने देश की सेवा भी नही कर सकती है।

मानसरोवर-शराब की दुकान

परोपकार

परोपकार ही अमरत्व प्रदान करता है। —कायाकल्प

गृहस्थी के सचय मे, स्वार्थ की उपासना मे तो सारी दुनिया मरती है। परोपकार के लिए मरने का सौभाग्य तो सस्कार वालो ही को प्राप्त होता है। —कर्मभूमि

जिस प्रकार पानी के वहाव से कभी-कभी बांध टूट जाता है, उसी प्रकार परोपकार की इस उमंग ने स्वार्थ और माया के बांध को तोड दिया। मानसरोवर—ममता

अपना उपकार ही दूसरो का उपकार है। जो अपना उपकार नहीं कर सकता, वह दूसरो का उपकार क्या करेगा। —कायाकल्प

पाप और पुण्य

अपने पाप सबको आप भोगने पड़ते हैं, भगवान का इसमे कोई दोप नही। —रंगभूमि

गुमराहो पर दया करना पाप है। —रंगभूमि

कृतघ्नता से बडा कोई पाप नही। —रंगभूमि

भिखारियों के लिए धन संचय पाप संचय से कम अपमान की वस्तु नही है। —रंगभूमि

किसी का दिल दुखाना सबसे बडा अधर्म है। —रंगभूमि

पापी पुरुप किसी साधु को देखकर दिल मे शरमाता है, इसमें देर

नही ठानता। —रगभूमि

पाप का दड जरूर भोगना पडता है, चाहे जल्दी हो, चाहे देर।

—रगभूमि

माँ का दिल दुखाना महापाप है। —रगभूमि

तकलीफ और तगी से बसर करना इतना बुरा नही, जितना खुदा के सामने गुनहगार बनना। —रगभूमि

पुण्य कार्य भिक्षा पर ही चलते हैं। —रगभूमि

धर्म-द्रोहियो को मारना अधर्म नही हैं। —रगभूमि

मुफ्त खोरो का सत्कार करना पाप है। —मानसरोवर-खुचड

शराब की दुकानो को हम बस्ती से दूर रखने का यत्न करते हैं, जुएखाने से भी हम घृणा करते हैं, लेकिन वेश्याओ की दुकानो को हम सुसज्जित कोठो पर, चौक बजारो मे ठाट से सजाते है। यह पापोत्तेजना नही तो और क्या है? —सेवासदन

जो लोग वेश्याओ को बुलाते हैं, उन्हे धन देकर उनके लिए सुख विलास की सामग्री जुटाते और उन्हे ठाट बाट से जीवन व्यतीत करने के योग्य बनाते है, वे उस कसाई से कम पाप के भागी नही है जो बकरे की गर्दन पर छुरी चलाता है। —सेवासद।

पाप से पाप ही उत्पन्न होगा। अगर पाप से पुण्य होता तो आज संसार मे कोई पापी न रह जाता। —सेवासदन

पाप अग्नि का वह कुण्ड है जो आदर और मान, साहस और धैर्य को क्षण भर मे जलाकर भस्म कर देता है। —वरदान

पाप का स्वाद मदिरा से कही अधिक भय[illegible] —वरदान

पाप एक करुणाजनक वस्तु है, मानवीय [illegible]। उसे देखकर दया आती है। लेकिन पाप के साथ [illegible] एक पैशाचिक लीर[illegible] र धर्म की सीर[illegible]

दुष्कामनाओ [illegible] र सिर

कठिन हो जाता है। पाप के अथाह दलदल मे जहाँ एक बार पडे कि फिर प्रतिक्षण नीचे ही चले जाते है। —मानसरोवर-ईश्वरीय न्याय

पाप के पजो मे फंसा हुआ मन पतझड का पत्ता है, जो हवा के जरा से झोके से गिर पडता है। —मानसरोवर-ईश्वरीय न्याय

किसी भाई का लिलाम* पर चढा हुआ बैल लेने मे जो पाप है, वही इस समय तुम्हारी गाय लेने मे है। —गोदान

सकट की चीज़ लेना पाप है। —गोदान

बैरो को मारने मे पाप नही, छोड़ने मे पाप है। —गोदान

मेहरिया रख लेना पाप नही है, हाँ रख के छोड देना पाप है। —गोदान

पापियो मे भी आत्मा का प्रकाश रहता है और कष्ट पाकर जागृत हो जाता है। यह समझना कि जिसने एक बार पाप किया, वह फिर कभी पुण्य नही कर सकता, मानव चरित्र के एक प्रधान तत्व का अपमान करना है। —मानसरोवर-धिक्कार

प्रथा-कुप्रथा

प्रथाओ की गुलामी इच्छाओ की गुलामी से श्रेष्ठ है। —प्रेमाश्रम

कितनी ही कुप्रथाएँ हैं, जिन्हे दूषित समझते हुए भी उनका पालन करना पडता है, क्योकि लोग रीति पर न चले तो लोग उँगलियां उठाते हैं। —सेवासदन

कोई कुप्रथा उपेक्षा या निर्दयता से नही मिटती। उनका नाश शिक्षा, ज्ञान और दया से होता है। स्वर्ग मे पहुँचने के लिए कोई सीधा रास्ता नही है। वैतरणी का सामना अवश्य करना पडेगा। जो लोग समझते हैं कि वह किसी महात्मा के आशीर्वाद से कूदकर स्वर्ग मे जा बैठेंगे वह उनसे अधिक हास्यास्पद नही है जो समझते हैं कि चौक से वेश्याओ को

* नीलाम

निकाल देने से भारत के सब दुःख दारिद्र्य मिट जायेंगे और एक नवीन सूर्य का उदय हो जायेगा। —सेवासदन

ऐसी लोक प्रथा का बुरा हो, जो अभागिनी कन्याओ को किसी न किसी पुरुष के गले बांध देना अनिवार्य समझती है। वह क्या जानता है कि कितनी युवतियां उसके नाम को रो रही हैं; कितनी अभिलाषाओ से लहराते हुए कोमल हृदय उसके पैरो तले रौंदे जा रहे है।

—मानसरोवर-नरक का मार्ग

प्रसिद्धि, प्रभुता और प्रशंसा

प्रभुता पाते ही लोगो की निगाहे बदल जाती है, किसी को पहचानते तक नही, जमीन पर पाँव तक नही रखते। —कायाकल्प

अपनी तारीफ सुनकर हम इतने मतवाले हो जाते हैं कि फिर हममे विवेक की शक्ति ही लुप्त हो जाती है। बडे से बडा महात्मा भी अपनी प्रशसा सुनकर फूल उठता है। हाँ प्रशसा करने वाले शब्दो मे भक्तिभाव रहना आवश्यक है। यदि ऐसे न होता तो कवियो को झूठी तारीफो के पुल बांधने के लिए हमारे राजेमहाराजे पुरस्कार क्यो देते ? —प्रतिज्ञा

लोक-प्रशसा प्रायः सभी को प्रिय होती है। —प्रतिज्ञा

प्रभुत्व और पशुता मे फूलचिंगारी का सम्बन्ध है। कायाकल्प

प्रसिद्धि श्वेत वस्त्र के सदृश है, जिस पर एक धब्बा भी नहीं छिप सकता। —रंगभूमि

प्रभुता पर सभी को प्रमाद होता है। —रंगभूमि

ख्याति-प्रेम वह प्यास है जो कभी नही बुझती, वह अगस्त्य ऋषि की भांति सागर को पीकर भी शात नही होती।

—मानसरोवर-सौभाग्य के कोड़े

प्रेम और वासना

भूले भटको को प्रेम ही सन्मार्ग पर लाता है। —रंगभूमि

प्रेम और वासना मे उतना ही अंतर है, जितना कंचन और कांच में। प्रेम की सीमा भक्ति से मिलती है और उनमे केवल मात्रा का भेद है। भक्ति मे सम्मान का और प्रेम मे सेवा भाव का आधिक्य होता है। प्रेम के लिए धर्म की विभिन्नता का कोई वन्धन नही है। ऐसी वाधाएं उस मनोभाव के लिए हैं, जिसका अन्त विवाह, है उस प्रेम के लिए नही, जिसका अंत वलिदान है। —रंगभूमि

प्रेम अभय का मंत्र है। प्रेम का उपासक संसार की समस्त चिंताओं और वाधाओ से मुक्त हो जाता है। —रंगभूमि

अपने प्रेमियो से हम उपदेश और शिक्षा की वातें नही, प्रेम और परितोष की वातें सुनना चाहते हैं। —रंगभूमि

आध्यात्मिक प्रेम या भक्ति केवल धर्म जगत की ही वस्तु है। स्त्री और पुरुष मे पवित्र प्रेम होना असम्भव है। प्रेम पहले उंगली पकड़कर तुरत ही पहुँचा पकड़ता है। —कर्मभूमि

प्रेम मे वह विस्मृति है जो संयम, ज्ञान और धारणा पर परदा डाल देती है। —कर्मभूमि

भक्तजन भी जो आध्यात्मिक आनन्द भोगते रहते हैं, वासनाओं से मुक्त नही हो सकते हैं। —रंगभूमि

प्रेम का नाता संसार के सभी सम्बन्धो से पवित्र और श्रेष्ठ है। —रंगभूमि

विलम्ब से प्रेम ठंडा हो जाता है और फिर उस पर कोई चोट नहीं पड़ सकती। —रंगभूमि

नैराश्य मे प्रेम भी द्वेप का रूप धारण कर लेता है। रंगभूमि

यथार्थ मे कोमल जाति का प्रेम सूत्र भी कोमल होता है। जो जरा से झटके से टूट जाता है। —रंगभूमि

प्रेम इन वाधाओ की परवाह नही करता। यह दैहिक सम्बन्ध नही, आत्मिक सम्बन्ध है। —रंगभूमि

प्रेम एक भावनागत विपय है, भावना ही से उसका पोपण होता है, भावना ही से वह जीवित रहता है, और भावना ही से लुप्त हो जाता है, वह भौतिक वस्तु नही है।

प्रेम के साथ ही मन मे ईर्ष्या का भाव भी उदय हो जाता है।

मानसरोवर-दो सखियाँ

वह प्रेम प्रेम नही है जो प्रत्याघात की शरण ले। प्रेम का आदि भी सहृदयता है और अन्त भी सहृदयता। मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम के ऊँचे आदर्श का पालन रमणियाँ ही कर सकती है। पुरुष कभी प्रेम के लिए आत्मसमर्पण नही कर सकता—वह प्रेम को स्वार्थ और वासना से पृथक नही कर सकता। मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम या तो भीतर ही रहेगा या वाहर ही रहेगा। समान रूप से वह भीतर और वाहर दोनो जगह नही रह सकता। स्वाँग वेश्याओं के लिए है, कुलवती तो प्रेम को हृदय ही मे संचित रखती है।

स्त्री और पुरुप मे मैं वही प्रेम चाहता हूँ, जो दो स्वाधीन व्यक्तियो में होता है। वह प्रेम नही, जिसका आधार पराधीनता है।

मानसरोवर-दो सखियाँ

संसार मे प्रेम का स्वाँग भरने वाले शहीदो की कमी नही है, उनसे वचकर रहना चाहिए। मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम जितना ही सच्चा, जि[illegible] [illegible]दक होता है [illegible] कोमल होता है। वह विपत्ति के उ[illegible] [illegible]गोते खा[illegible] अव-हेलना की एक चोट भी नही [illegible] मा[illegible]

प्रेम का एक ही मूलमन्त्र है और वह है सेवा।

मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम का अंकुर रूप में है, पर उसको पल्लवित और पुष्पित करना सेवा ही का काम है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम आग्रह से भरे शब्दो पर रियासते मिटती है, नाते टूटते हैं, रमणी के पास इससे बढकर दूसरा अस्त्र नही।

मानसरोवर—दो सखियाँ

बसन्त के समीर और ग्रीष्म की लू मे कितना अतर है। एक सुखद और प्राण पोषक, दूसरी अग्निमय और विनाशिनी। प्रेम वसन्त समीर है, द्वेष ग्रीष्म की लू। जिस पुष्प को वसन्त समीर महीनो मे खिलाती है, उसे लू का एक झोका जलाकर राख कर देता है। —सेवासदन

धन से चाहे आदमी का जी भर जाय, प्रेम से तृप्ति नही होती। ऐसे कान बहुत कम हैं, जो प्रेम के शब्द सुनकर फूल न उठे।

—प्रतिज्ञा

प्रेम हृदय के समस्त सद्भावो का शांत स्थिर, उद्‌गारहीन समावेश है। उसमे दया और क्षमा, श्रद्धा और वात्सल्य, सहानुभूति और सम्मान अनुराग और विराग, अनुग्रह और उपकार सभी मिले होते हैं।

—कायाकल्प

निष्ठुरता मे इतनी शक्ति नही, प्रेम अमर है, अमिट है।

—कायाकल्प

इच्छा और प्रेम मे बडा भेद है। इच्छा अपनी ओर खींचती है, प्रेम स्वय खिंच जाता है। इच्छा मे ममत्व है, प्रेम मे आत्म समर्पण।

—प्रेमाश्रम

प्रेम को जीवन का सत्य कहते है। —गोदान

प्रेम केवल कवियो की कल्पना है। वास्तविक जीवन मे उसका कही निशान नही है। —गोदान

जिसे तुम प्रेम कहती हो, वह धोखा है, उद्दीप्त लालसा का विकृत

नैराश्य मे प्रेम भी द्वेष का रूप धारण कर लेता है। रंगभूमि

यथार्थ मे कोमल जाति का प्रेम सूत्र भी कोमल होता है। जो ज़रा से झटके से टूट जाता है। —रंगभूमि

प्रेम इन बाधाओ की परवाह नही करता। यह दैहिक सम्बन्ध नही, आत्मिक सम्बन्ध है। —रगभूमि

प्रेम एक भावनागत विषय है, भावना ही से उसका पोषण होता है, भावना ही से वह जीवित रहता है, और भावना ही से लुप्त हो जाता है, वह भौतिक वस्तु नही है।

प्रेम के साथ ही मन मे ईर्ष्या का भाव भी उदय हो जाता है।

मानसरोवर-दो सखियाँ

वह प्रेम प्रेम नही है जो प्रत्याघात की शरण ले। प्रेम का आदि भी सहृदयता है और अन्त भी सहृदयता। मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम के ऊँचे आदर्श का पालन रमणियाँ ही कर सकती हैं। पुरुष कभी प्रेम के लिए आत्मसमर्पण नही कर सकता—वह प्रेम को स्वार्थ और वासना से पृथक नही कर सकता। मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम या तो भीतर ही रहेगा या बाहर ही रहेगा। समान रूप से वह भीतर और बाहर दोनो जगह नही रह सकता। स्वाँग वेश्याओ के लिए है, कुलवती तो प्रेम को हृदय ही मे सचित रखती है।

स्त्री और पुरुष मे मैं वही प्रेम चाहता हूँ, जो दो स्वाधीन व्यक्तियो में होता है। वह प्रेम नही, जिसका आधार पराधीनता है।

मानसरोवर-दो सखियाँ

ससार मे प्रेम का स्वाँग भरने वाले शहीदो की कमी नही है, उनसे बचकर रहना चाहिए। मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम जितना ही सच्चा, जितना ही हार्दिक होता है, उतना ही कोमल होता है। वह विपत्ति के उन्मत्त सागर मे गोते खा सकता है, पर अवहेलना की एक चोट भी नही सह सकता। मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम का एक ही मूलमन्त्र है और वह है सेवा।

मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम का अंकुर रूप मे है, पर उसको पल्लवित और पुष्पित करना सेवा ही का काम है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

प्रेम आग्रह से भरे शब्दो पर रियासते मिटती है, नाते टूटते हैं, रमणी के पास इससे बढकर दूसरा अस्त्र नही।

मानसरोवर—दो सखियाँ

वसन्त के समीर और ग्रीष्म की लू मे कितना अंतर है। एक सुखद और प्राण पोषक, दूसरी अग्निमय और विनाशिनी। प्रेम वसन्त समीर है, द्वेष ग्रीष्म की लू। जिस पुष्प को वसन्त समीर महीनो मे खिलाती है, उसे लू का एक झोका जलाकर राख कर देता है। —सेवासदन

धन से चाहे आदमी का जी भर जाय, प्रेम से तृप्ति नही होती। ऐसे कान बहुत कम है, जो प्रेम के शब्द सुनकर फूल न उठे।

—प्रतिज्ञा

प्रेम हृदय के समस्त सद्भावो का शात स्थिर, उद्गारहीन समावेश है। उसमे दया और क्षमा, श्रद्धा और वात्सल्य, सहानुभूति और सम्मान अनुराग और विराग, अनुग्रह और उपकार सभी मिले होते है।

—कायाकल्प

निष्ठुरता मे इतनी शक्ति नही, प्रेम अमर है, अमिट है।

—कायाकल्प

इच्छा और प्रेम मे बड़ा भेद है। इच्छा अपनी ओर खीचती है, प्रेम स्वय खिच जाता है। इच्छा मे ममत्व है, प्रेम मे आत्म समर्पण।

—प्रेमाश्रम

प्रेम को जीवन का सत्य कहते हैं। —गोदान

प्रेम केवल कवियो की कल्पना है। वास्तविक जीवन मे इसका कही निशान नही है। —गोदान

जिसे तुम प्रेम कहती हो, वह धोखा है, उद्दीप्त लालसा का विकृत

रूप, उसी तरह जैसे सन्यास केवल भीख माँगने का संस्कृत रूप है। वह प्रेम अगर वैवाहिक जीवन मे कम है, तो मुक्त विलास मे बिल्कुल नही है। सच्चा आनन्द, सच्ची शाति केवल सेवा व्रत मे है। वही अधिकार का स्रोत है, वही शक्ति का उद्गम है। —गोदान

प्रेम सीधी-सादी गऊ नही, खूख्वार शेर है, जो अपने शिकार पर किसी की आँख भी नही पडने देता। —गोदान

प्रेम सन्देह के ऊपर की वस्तु है। वह देह की वस्तु नही, आत्मा की वस्तु है। —गोदान

प्रेम दहकती हुई आग है तो वियोग उसके लिए घृत है।

मानसरोवर-धर्म संकट

दृढता प्रेम मन्दिर की पहली सीढी है। मानसरोवर-धर्म संकट

प्रेम पर ऐश्वर्य, सौन्दर्य और वैभव का कुछ भी अधिकार नही है।

मानसरोवर-सेवा मार्ग

प्रेम स्वर्ग सुख का मूल है। मानसरोवर-सेवा मार्ग

प्रेम सेवा ही से मिल सकता है। मानसरोवर-सेवा मार्ग

प्रेम ही जीवन का प्राण है। मानसरोवर-हार की जीत

प्रेम विहीन हृदय के लिए ससार काल कोठरी है, नैराश्य और अंधकार से भरी हुई है। —मानसरोवर-हार की जीत

जैसे ईख से रस निकाल लेने पर केवल सीठी रह जाती है, उसी प्रकार जिस मनुष्य के हृदय से प्रेम निकल गया, वह अस्थि चर्म का एक ढेर रह जाता है। —वरदान

सच्चे प्रेम का कमल बहुधा कृपा के प्रभाव से खिल जाया करता है। जहाँ रूप, यौवन, सम्पत्ति और प्रभुता तथा स्वाभाविक सौजन्य प्रेम का बीज बोने मे अकृतकार्य रहते है, वहाँ प्रायः उपकार का जादू चल जाता है। कोई हृदय ऐसा वज्र और कठोर नही हो सकता, जो सत्य सेवा से द्रवीभूत न हो जाय। —वरदान

प्रेमियो को अपनी अभिलाषा पूरी होने की आशा हो या न हो,

परन्तु वे मन ही मन अपनी प्रेमिकाओ से मिलाप का आनन्द उठाते रहते हैं। वे भाव संसार मे अपने प्रेम पात्र से वार्तालाप करते हैं, उसे छोडते है, उससे रूठते है, उसे मनाते हैं और इन भावो से उन्हे तृप्ति होती हैं और मन को एक सुखद रसमय कार्य मिल जाता है। परन्तु यदि कोई शक्ति उन्हे ध्यान मे भी उस प्रियतमा का चित्र न देखने दे, तो उन अभागे प्रेमियो की दशा क्या होगी ? —वरदान

प्रेम केवल रूप का भक्त नही होता। —कायाकल्प

लालसा ही प्रेम नही, प्रेम त्याग और भक्ति है। —कायाकल्प

प्रेम प्रतिकार नही करता, प्रेम से दुराग्रह नही होता।

मानसरोवर-विश्वास

प्रेम की फैली हुए बाहो का आकर्षण किस पर न होगा ? ऐसा हृदय कहाँ है, जिसे प्रेम न जीत सके। —मानसरोवर-सौभाग्य के कोड़े

प्रेमी जन का धैर्य अपार होता है। निराशा पर निराशा होती है, पर धैय हाथ से नही छूटता। —मानसरोवर-विनोद

जैसे कोई वृक्ष जल और प्रकाश से बढता है, लेकिन पवन के प्रबल झोको ही से सुदृढ होता है, उसी भाँति प्रणय भी दुख के आघातो ही से विकास पाता है। खुशी के साथ हँसने वाले बहुतेरे मिल जाते हैं, रज मे जो साथ रोये वही हमारा सच्चा मित्र है। जिन प्रेमियो को साथ रोना नही नसीब हुआ, वे मुहब्बत के मजे क्या जाने ? —निर्मला

प्रेम मे असीम विश्वास है, असीम धैर्य है, और असीम बल है।

—निर्मला

प्रेम आत्मा को तृप्त कर देता है। —गबन

जिनसे प्रेम होता है उस पर विश्वास भी होता है। बिना विश्वास के प्रेम हो ही कैसे सकता है ? जिससे तुम अपनी बुरी-से-बुरी बात न कह सके, उससे तुम प्रेम नही कर सकते। —गबन

जिससे प्रेम होता है, उससे हम कोई भेद नही रखते। —गबन

प्रेम हृदय की वस्तु है, रुपये की नही। —गबन

सवा से पोला करने के बाद तभी प्रेम का बीज बोया जा सकता है।

—कर्मभूमि

मनुष्य-मात्र को, जीव मात्र को, प्रेम की लालसा रहती है। भोग लिप्सी प्राणियो मे यह वासना का प्रकट रूप है, सरल हृदय दीन प्राणियो मे शाति भोग का। —रगभूमि

प्रेम मे प्रतिकार नही होता। प्रेम उन्नत क्षमा, उन्नत उदारता, अनन्त धैर्य से परिपूर्ण होता है। —रगभूमि

प्रेम जितना ही आदर्श वादी होता है, उतना ही क्षमाशील भी।

—रगभूमि

प्रेम जंगलो मे भी सुखी रह सकता है। —रगभूमि

बिना प्रेम के कोई उपासक देवी के सन्मुख नही जाता।

—कायाकल्प

वासना उम्र के साथ बढती जाती है। —कायाकल्प

प्रेम वह प्याला नही है, जिससे आदमी छक जाए, उसकी तृष्णा सदैव बनी रहती। —कायाकल्प

प्रेम बडो-बड़ो का सर नीचा कर देता है। —कायाकल्प

अनुराग चित्त की वृत्तियो की काया पलट कर सकता है।

—कायाकल्प

पति प्रेम नारी जीवन का आधार है। इससे वचित होकर अबला निराधार हो जाती है। —कायाकल्प

पति प्रेम से वचित होकर स्त्री के उद्धार का कोई उपाय नही; क्यो कि पति ही स्त्री का सर्वस्व है। —कायाकल्प

स्त्री पुरुष का प्रेमसूत्र दिन-दिन दृढ होता जाता है। —कायाकल्प

प्रेम सहृदयता का ही रसमय रूप है। प्रेम के अभाव मे सहृदयता ही दम्पति के सुख का मूल हो जाती है। —कायाकल्प

प्रेम मानव जीवन का श्रेष्ठ अग है। यदि ईश्वर की ईश्वरता कही दीखने मे आती है, तो वह देवता मे। —मानसरोवर-आगा पीछा

विषय-वासना, नीति, ज्ञान और संकोच किसी से रोके नही रुकते है। उसके नशे मे हम सब वेसुध हो जाते है। —सेवासदन

हमारी ही कुवासनाएँ, हमारे ही सामाजिक अत्याचार, हमारी ही कुप्रथाएँ है, जिन्होने वेश्याओ का रूप धारण किया है। यह दाल मडी हमारे ही जीवन का कलुषित प्रतिबिम्ब है, हमारे ही पैशाचिक अधर्म का साक्षात् स्वरूप है। —सेवासदन

वासना के आगे विवेक भी झुक जाता है। —सेवासदन

हमे जिससे प्रेम होता है उसे हम सदा एक ही अवस्था मे देखते है, हम उसे जिस अवस्था मे स्मरण करते हैं, उसी समय के भाव, उसी समय के वस्त्र भूषण हमारे हृदय पर अंकित हो जाते है। —सेवासदन

निशाना मारते समय दृष्टि केवल एक ही वस्तु पर रहती है। प्रेमासक्त मनुष्य का भी यही हाल होता है। —सेवासदन

प्रौढावस्था मे भी प्रेम की उद्विग्नता और असावधानी कुछ कम नही होती। —सेवादन

प्रेम सत्य है—और सत्य और मिथ्या, दोनो एक साथ नही रह सकते। —मानसरोवर-एक्ट्रेस

वासना का वार निर्मम, आशाहीन, आधारहीन, प्राणियो ही पर होता है। चोर की अँधेरे ही मे चलती है, उजाले मे नही।

—मानसरोवर-आधार

प्रेम की गहराई कविता की वस्तु है और साधारण बोल चाल मे व्यक्त नही हो सकती। —कर्मभूमि

असली मुहब्बत वह है, जिसकी जुदाई मे भी विसाल है, जहाँ जुदाई है ही नही, जो अपने प्यारे से एक हजार कोस पर होकर भी अपने को उसके गले से मिला हुआ देखती है। —कर्मभूमि

मनुष्य पर जब प्रेम का बन्धन नही होता, तभी वह व्यभिचार करने लगता है। —कर्मभूमि

जब मनुष्य किसी थके हुए पथिक की भाँति अधीर होकर छाँह की ओर दौडता है तो उसका हृदय निर्मल, विशुद्ध प्रेम से परिपूर्ण हो जाता है। —प्रेमाश्रम

प्रेम की शक्ति अपार है। —मानसरोवर-कामनातरु

प्रेम अपमानित होकर द्वेष मे बदल जाता है।

—मानसरोवर-लाछन

प्रेम का फूल कभी नही मुरझाता, प्रेम की नीद कभी नही उतरती

—मानसरोवर-लैला

बनावट

बनावट की बात ऐसी चुभती है कि सच्ची बात उसके सामने बिल्कुल फीकी मालूम होती है। उसमे बनावट की गध अवश्य रहती है। यह किस्से कहानियाँ लिखने वाले जिनकी किताबे पढ पढकर तुम घन्टो रोते हो, क्या सच्ची बाते लिखते है? सरासर झूठ का तूमार बाँधते है। यह भी एक कला है। —निर्मला

नाटक उस वक्त 'पास' होता है जब रसिक समाज उसे पसन्द कर लेता है। बारात का नाटक उस वक्त पास होता है, जब राह चलते आदमी उसे पसन्द कर लेते हैं। नाटक की परीक्षा चार-पांच घटे तक होती रहती है, बारात की परीक्षा के लिए केवल इतने मिनटो का समय होता है। सारी सजावट, सारी दौड-धूप और तैयारी का निपटारा पांच मिनटो मे हो जाता है। अगर सबके मुँह से 'वाह-वाह' निकल गया, तो तमाशा पास, नही फेल। रुपया, मेहनत, फिक्र सब अकारथ।

—गबन

बचपन

जिन्दगी की वह उम्र-जब इसान को मोहब्बत की सबसे ज्यादा जरूरत होती है, बचपन है। उस वक्त पौधे को तरी मिल जाए तो जिन्दगी भरके लिए उसकी जड़े मजबूत हो जाती हैं, उस वक्त खुराक न पाकर, उसकी जिन्दगी खुश्क हो जाती है। —कर्मभूमि

आशा तो बडी चीज है, और फिर बच्चो की आशा। उनकी कल्पना तो राई को पर्वत बना देती है। —मानसरोवर-ईदगाह

बच्चो को बहुत मारना-पीटना नही, मारने से बच्चे जिद्दी और बेहया हो जाते हैं। —मानसरोवर-स्वामिनी

अच्छे बालको से भगवान को भी प्रेम होता है।

—मानसरोवर-सुभागी

बालिका का हृदय कितना सरल, कितना उदार, कितना कोमल और कितना भावमय होता है। —कायाकल्प

लडके लड़को की राह रहे, तो लड़के है, शोहदो की राह चलें तो शोहदे है। —रंगभूमि

लडके माँ बाप की आदतें सीखते हैं। —कायाकल्प

बच्चो मे प्यार की जो एक भूख होती है, दूध, मिठाई और खिलौनो से भी ज्यादा मादक, जो माँ की गोद के सामने संसार की निधि को भी परवाह नही करते, कभी सन्तुष्ट नही हो सकते।

—मानसरोवर-प्रेरणा

माँ बाप का इकलौता लड़का बडा भाग्यशाली होता है। उसे मीठे पदार्थ खूब खाने को मिलते हैं, किन्तु कडवी ताड़ना कभी नहीं मिलती।

—सेवासदन

यह नियम है कि जब हमारा कोई अग विकृत हो जाता है तो उसे काट डालते है, जिससे उसका विष समस्त शरीर को नष्ट न कर डाले। समाज मे उसी नियम का पालन होना चाहिए। —सेवासदन

समाज मे स्त्री और पुरुष दोनो ही है और जब तक दोनो की उन्नति न होगी, जीवन सुखी न होगा। —प्रतिज्ञा

समाज मे एक आदमी कोई बुराई करता है, तो सारा समाज बदनाम हो जाता है। —कर्मभूमि

सच्ची हिताकाँक्षा कभी निष्फल नही होती। अगर समाज को विश्वास हो जाए कि आप उसके सच्चे सेवक हैं, आप उसका उद्धार करना चाहते हैं, आप निःस्वार्थ है तो वह आपके पीछे चलने को तैयार हो जाता है। लेकिन यह विश्वास सच्चे सेवा भाव बिना कभी प्राप्त नही होता। जब तक अन्तःकरण दिव्य और उज्जवल न हो, वह प्रकाश का प्रतिबिम्ब दूसरों पर नही डाल सकता। —सेवासदन

समाज की ऐसी व्यवस्था, जिसमे कुछ लोग मौज करें और अधिक लोग पिसे और खपें, कभी सुखद नही हो सकती। पूँजी और शिक्षा, जिसे मैं पूँजी का ही एक रूप समझता हूँ। इनका किला जितनी जल्द टूट जाये, उतना ही अच्छा। —गोदान

समाज व्यक्ति ही से बनता है। और व्यक्ति को भूलकर हम किसी व्यवस्था पर विचार नही कर सकते हैं। —गोदान

बेफिक्री मे चरित्र अच्छा रह ही कैसे सकता है। समाज मे रहो और समाज के कर्त्तव्य और मर्यादाओ का पालन करो, तब पता चले। —गोदान

समाज तो भय के बल से चलता है। आज समाज का आँकुस* जाता रहे, फिर देखो संसार में क्या क्या अनर्थ होने लगते हैं। —गोदान

हम बिरादरी के चाकर हैं उसके बाहर नही जा सकते। वह जो डाँड लगाती है, उसे सिर झुकाकर मंजूर कर। नक्कू बन कर जीने से

* अंकुश

तो गले मे फांसी लगा लेना अच्छा है। आज मर जाये, तो बिरादरी ही तो इस मिट्टी को पार लगायेगी ? बिरादरी ही तारेगी तो तरेंगे।

—गोदान

समाज एक भयकर भूत है जिससे सदैव डरते रहना चाहिए।

—मानसरोवर-नैराश्य लीला

लोक-सम्मति किसी की रियायत नही करती। किसी ने सिर पर टोपी टेढी रखी और पड़ौसियो की आंखो मे खुवा, कोई जरा अकड़कर चला और पडौसियो ने आवाजे कसी। —मानसरोवर-नैराश्य लीला

बिरादरी से बैर करना पानी मे रहकर मगर से बैर करना है। कोई न कोई ऐसा अवसर अवश्य ही आ जाता है, जब हमको बिरादरी के सामने सिर झुकाना पडता है। बेटी के विवाह की समस्या बडे बडे हेकडो का घमड चूर चूर कर देती है। आप किसी आने जाने की परवाह न करे, हुक्का पानी, भोजपात, मेलजोल, किसी बात की परवाह न करे, मगर लड़की का विवाह तो न टलने वाली बला है। उससे बचकर आप जायेंगे कहां ? —मानसरोवर-दंड

बुराई

बुराई का मुख्य उपचार मनुष्य का सद्ज्ञान है। इसके बिना कोई उपाय सफल नही हो सकता। —सेवासदन

सद्वृत्तियाँ मुँह छिपाये पडी रहती हैं और कुवृत्तियाँ विजय गर्व से इठलाती फिरती है। —निर्मला

जिस तरह बीमारी मे मनुष्य को ईश्वर याद आता है, उसी तरह अकृत कार्य होने पर उसे अपने दुस्साहसो पर पश्चाताप होता है : पराजय का आध्यात्मिक महत्व विजय से कही अधिक होता है। —प्रेमाश्रम

आदमी बिना गुरु दीक्षा लिए हुए भी अपनी बुराइयों पर लज्जित

हो सकता है। अपना सुधार करने के लिए गुरु मंत्र कोई जरूरी चीज नही। —निर्मला

कोई बुरी बात होने वाली होती है तों मति पहले ही हर जाती है। —गोदान

भगवान और भक्ति

भक्त को आलोचना से प्रेम नही। —कायाकल्प

मन शुद्ध चाहिए यही सबसे बडी भक्ति है। जब मन मे ईर्ष्या और प्रेम की ज्वाला दहक रही हो, राग और मत्सर की आधी चल रही हो तो कोरा व्रत रखने से क्या होगा। —कायाकल्प

दुःखी आशा से ईश्वर मे भक्ति रखता है, सुखी भय से। दुखी पर जितना ही अधिक दुख पडे उसकी भक्ति बढती जाती है। सुखी पर दुःख पडता है, तो वह विद्रोह करने लगता है। वह ईश्वर को भी अपने धन के सामने झुकाना चाहता है। —कर्मभूमि

कृष्ण की भक्ति और प्रेम का नशा इतना गाढ़ा नही हो सकता कि सुकर्म और कुकर्म का विवेक न रहे। —प्रेमाश्रम

अराधना विनोद की वस्तु नही, शाति और तृप्ति की वस्तु है। —रंगभूमि

भक्ति अपने विश्वास और मनोवृत्ति पर निर्भर होती है। —रंगभूमि

पूजा का वह भाग, जिसमे परमात्मा या अन्य देवताओ से कल्याण की याचना की जाती है, शीघ्र ही समाप्त हो जाता है; लेकिन वह भाग जिसमे योग क्रियाओ द्वारा आत्म-शुद्धि की जाती है बहुत विशद होता है। —रंगभूमि

भगतो के आचार विचार कुछ और ही होते हैं। वह बिना स्नान किए कुछ नही खाता, गंगा जी अगर घर से दूर न हो तो और वह रोज स्नान करके दोपहर तक घर लौट सकता हो, तो पर्वो के दिन तो उसे अवश्य ही नहाना चाहिए। भजन भाव उसके घर अवश्य होना चाहिए। पूजा अर्चा उसके लिए अनिवार्य है। खान पान मे भी उसे बहुत विचार रखना पड़ता है। सबसे बड़ी बात यह है कि झूठ का त्याग करना पडता है। भगत झूठ नही बोल सकता। साधारण मनुष्य को अगर झूठ का दड मिले तो भगत को एक लाख से कम नही मिल सकता। अज्ञान की अवस्था मे कितने ही अपराध अक्षम्य हो जाते हैं। ज्ञानी के लिए क्षमा नही है, प्रायश्चित नही है। यदि है तो बहुत ही कठिन।
—मानसरोवर-सुजान भगत

उपापक की महात्वाकाक्षा उपास्य ही के प्रति होती है। वह उसको सोने का मन्दिर बनवायेगा, उसके सिहासन को रत्नो से सजायेगा। स्वर्ग से पुष्प लाकर भेट करेगा ; पर वह स्वयं वही उपासक रहेगा। जटा के स्थान पर मुकुट या कोपीन की जगह पीताम्बर की लालना उसे कभी नही सताती।
—मानसरोवर-सोहाग का शव

परमात्मा की सौन्दर्य सृष्टि से पवित्र आनन्द उठाना हमारा कर्त्तव्य है।
—सेवासदन

देवता की मूरत टूट कर फिर नही जुडती। —सेवासदन

निर्जनता कल्पना को अत्यन्त रचनाशील बना देती है।

—सेवासदन

सतयुग मे मनुष्य की मुक्ति ज्ञान से होती थी, त्रेता मे तप से, द्वापर मे भक्ति से, पर इस कलयुग मे इसका केवल एक ही मार्ग है और वह है सेवा। इसी मार्ग पर चलो और तुम्हारा उद्धार होगा। जो तुमसे भी दीन, दुखी दलित हैं, उनकी शरण मे जाओ और उनका आशीर्वाद तुम्हारा उद्धार करेगा। कलियुग मे परमात्मा इसी दुःख सागर मे वास करते हैं।
—सेवासदन

भगवान सबको बराबर बनाते हैं। यहाँ जिसके हाथ मे लाठी है, वह गरीबों को कुचल कर बडा आदमी बन जाता है। —गोदान

इस समय के देवता पत्थर के होते है और पत्थर को कभी किसी ने पिघलते नही देखा। —मानसरोवर-सेवा मार्ग

ईश्वर भी उन्ही की सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते है। —मानसरोवर-आदर्श विरोध

भगवान अन्यायी नही है, वह बडा खिलाडी है, घरोदे बनाता विगाडता रहता है। उसे किसी से वैर नही। वह क्यो किसी पर अन्याय करने लगा ? —रंगभूमि

तू अपने मन मे भले ही समझ ले कि ईश्वर-वाक्य-कपोल कल्पना है ; लेकिन अधे की आँखो मे अगर सूर्य का प्रकाश न पहुँचे, तो यह सूर्य का दोष नही, अधे की आँखो ही का दोप है। —रगभूमि

दुरात्माओ को, अधर्मियो को, पापियो को मुक्ति का संदेश पहुँचाने वाला ही भगवान है। —रंगभूमि

देवता को न पाकर हम पाषाण-प्रतिष्ठा करते हैं। देवता मिल जाए तो पत्थर को कौन पूजे ? —रंगभूमि

खुदा बेकसो के खून से नही खुश होता। —कायाकल्प

देवता रंग रूप नही देखते, भक्ति देखते हैं। —कायाकल्प

भगवान ने उद्धार के जो उपाय बताये हैं, उनसे काम लो। और ईश्वर पर भरोसा रखो। —कायाकल्प

भगवान पूजा करने से सबकी मनोकामना पूरी करते हैं।

—कायाकल्प

ईश्वर ने ही संसार की सृष्टि की है और वही इसे चलाता है।

—कायाकल्प

ईश्वर पहले सिरे का कपटी व निर्दयी जीव है, जिसे अपने ही रचे हुए प्राणियो को सताने मे आनन्द मिलता है, जो अपने ही बालकों के बनाये हुए घरौंदे रौंदता फिरता है। आप उसे दयालु कहे, संसार उसे

दयालु कहे, मै तो नही कह सकता । अगर मेरे पास शक्ति होती, तो मैं उसका यह सारा विधान उलट पलट कर देता । उसमे ससार के रचने की शक्ति है, किन्तु उसे चलाने की नही । —कायाकल्प

भगवान जिसको जन्म देते है, उसकी जीविका की जुगत पहले ही से कर देते हैं । —मानसरोवर-मृतक का भोज

हरिइच्छा वेकसो का अतिम अवलम्ब है ।

—मानसरोवर-वेटो वाली विधवा

ईश्वर की सृष्टि मे असख्य प्राणियो के लिए जगह है । —निर्मला

जीवन-रगशाला का वह निर्दय सूत्रधार किसी अगम गुप्त स्थान पर वैठा हुआ अपनी जटिल क्रूर क्रीडा दिखाता हैं । —निर्मला

मरना-जीना तो संसार की गति है । लेते है वह भी मरते है, नही लेते वह भी मरते हैं । —निर्मला

खुदा ने इन्सान को वन्दगी के लिए पैदा किया है और इसके खिलाफ कुछ करता है वह काफिर है, जहन्नुमी । रसूले पाक हमारी जिन्दगी को पाक करने के लिए, हमे सच्चा इन्सान वनाने के लिए आये थे, हमे हराम की तालीम देने नही । मानसरोवर-दिल की रानी

खुदा की निगाह मे सभी इन्सान वरावर हैं और किसी कौम या शख्स की दूसरी कौम पर हुकूमत करने का अख्तियार नही है ।

—मानसरोवर-दिल की रानी

यदि ईश्वर की इच्छा होती कि प्राणीमात्र को समान सुख प्राप्त हो तो उसे सवको एक दशा मे रखने से किसने रोका था ? वह ऊँच-नीच का भेद होने ही क्यो देता ? जव उसकी आज्ञा के विना एक पत्ता भी नही हिल सकता, तो इतनी महान सामाजिक व्यवस्था उसकी आज्ञा विना क्यो कर भग हो सकती है ? जव वह स्वयं सर्वव्यापी है तो वह अपने ही को ऐसी ऐसी घृणोत्पादक अवस्थाओ मे क्यो रखता है ।

—मानसरोवर-ब्रह्म का स्वांग

भाग्य

भाग्य पर वह भरोसा करता है, जिसमे पौरुष नही होता।

—कायाकल्प

तकदीर पेट पर सबसे ज्यादा चमकती है। —कायाकल्प

भाग्यवानो के हाथ पाँव मे ताकत नही होती, अकबाल मे ताकत होती है। उससे देवता तक काँपते है। —कायाकल्प

जिसकी इज्जत आबरू से निभ जाए, जिसका लोग यश गावे, वही भाग्यवान है। धन गाड़ लेने ही से कोई भाग्यवान नही हो जाता।

—कायाकल्प

लडकी के भाग्य मे सुख भोगना बदा है, तो जहाँ जायेगी सुखी रहेगी; दुःख भोगना है, तो जहाँ जायेगी दुःख झेलेगी। —निर्मला

हम तकदीर के खिलौने है। विधाता नही, वह हमे इच्छानुसार नचाया करती है। — प्रेमाश्रम

जब आदमी का कोई बस नही चलता, तो अपने को तकदीर पर ही छोड देता है। —गोदान

भिक्षा

ये हड्डियाँ देखकर ही तो लोगो को दया आती है। मोटे आदमियों को भीख कौन देता है? उलटे और ताने मिलते हैं। —रंगभूमि

इस देश के सिर से यह बला न जाने कब टलेगी। जिस देश मे

भीख मांगना लज्जा की बात न हो, यहाँ तक कि सर्वश्रेष्ठ जातियां भी जिसे अपनी जीवन वृत्ति बना ले, जहाँ महात्माओं का एक मात्र यही आधार हो; उसके उद्धार मे अभी शताब्दियो की देर है। —रंगभूमि

भीख भीख की ही तरह दी जाती है, लुटाई नही जाती।

—मानसरोवर-सुजान भगत

भिखारी के लिए चुटकी भर आटा ही काफी है।

—मानसरोवर-जेल

फकीर इसलिए होते हैं कि या तो समाज मे इन्हे कोई काम नही मिलता या दरिद्रता से पैदा हुई बीमारियो के कारण यह अब इस योग्य ही नही रह गये कि कुछ काम करें, या भिक्षा वृत्ति ने इनमे कोई सामर्थ्य ही नही छोड़ी। स्वराज्य ही इनका उद्धार कर सकता है और कोई नही। —मानसरोवर-पत्नी से पति

भिक्षुक को भीख मिलने की आशा हो, तो वह दिन भर और रात भर दाता के द्वार पर खडा रहे। —गोदान

भिक्षुक देता क्या है, असीस! असीसो से तो किसी का पेट नही भरता। —गोदान

भिक्षुक को एक ही द्वार पर भर पेट मिल जाये, तो क्यो द्वार-द्वार घूमे। —गोदान

भीख मांगना भी किसी किसी दशा मे क्षम्य है।

—मानसरोवर-विश्वास

अच्छी आमदनी तभी हो सकती है, जब अच्छा ठाट-बाट हो।...... फटेहाल भिखारी के लिए एक चुटकी बहुत समझी जाती है, लेकिन गेरुवे रेशम धारण करने वाले बाबा जी को लजाते-लजाते भी एक रुपया देना ही पडता पडता है। भेख और भीख मे सनातन से मित्रता है।

—गबन

भिक्षा तक तो स्वार्थ के लिए ही देते हैं।

—मानसरोवर-तुलसी वृन्दा

भिक्षुक द्वार द्वार इसलिए जाता है कि एक द्वार से उसकी क्षुधा-तृप्ति नही होती। —कर्मभूमि

भूल

अपनी भूल अपने ही हाथो सुधर जाए तो यह उससे कही अच्छा है कि कोई दूसरा उसे सुधारे। —रंगभमि

सोई हुई आत्मा को जगाने के लिए हमारी भूले एक प्रकार की दैविक यंत्रणाएँ है, जो हमे सदा के लिए सतर्क कर देती हैं। शिक्षा, उपदेश, सतसंग किसी से भी हमारे ऊपर उतना प्रभाव नही पड़ता, जितना अपनी भूलो के कुपरिणाम को देखकर। —सेवासदन

भोग-विलास

विलास सच्चे सुख की छाया मात्र है। जिसे सच्चा सुख मयस्सर हो, वह विलास की तृष्णा क्यो करे ? —कायाकल्प

ऐश्वर्य का सुख विहार और विलास तो नही, यह ऐश्वर्य का दुरुपयोग है। —कायाकल्प

ऐश्वर्य से न बुद्धि बढती है, न तेज। —कायाकल्प

ऐश्वर्य पाते ही हमे अपना पूर्व जीवन विस्मृत हो जाता है। हम अपने पुराने हमजोलियो को नही पहचानते। ऐसा भूल जाते है मानो कभी देखा ही न था। —कायाकल्प

भोग विलास, सैर तमाशे से आत्मा उसी भाँति सन्तुष्ट नही होती,

जैसे कोई चटनी और आचार खाकर अपनी क्षुधा को शान्त नही कर सकता । —कर्मभूमि

त्याग ने भोग की ओर सिर झुका दिया, मर्यादा की बेडी गले मे पड़ी । —मानसरोवर-बैंक का दिवाला

मुक्त भोग आत्मा के विलास मे बाधक नही होता है । —गोदान

बंधन और निग्रह पुरानी थ्योरियाँ है । नयी थ्योरी है मुक्त भोग । —गोदान

ऐश की भूख रोटियो से नही जाती । उसके लिए दुनिया के अच्छे से अच्छे पदार्थ चाहिए । —गोदान

भोजन

आदमी जब तक स्वस्थ रहता हैं, उसे इसकी चिन्ता नही रहती कि वह क्या खाता है, कितना खाता है, लेकिन जब कोई विकार उत्पन्न हो जाता है तो उसे याद आती है कि कल मैंने पकौडियां खायी थी । विजय बहिर्मुखी होती है, पराजय अन्तर्मुखी । —गबन

भूखा आदमी इच्छा-पूर्ण भोजन चाहता है, दो चार फुलकों से उसकी तुष्टि नही होती । —गबन

आदमी पाप से नीच होता है, खाने-पीने से नीच नही होता । प्रेम से जो भोजन मिलता है, वह पवित्र होता है । उसे तो देवता भी खाते हैं । —गबन

प्रेम की रोटियो मे अमृत रहता है, चाहे गेहूँ की हो या बाजरे की । —गबन

सौर के संयम और पौष्टिक भोजन देह को निरोग कर देते हैं । —मानसरोवर-स्वामिनी

भोजन का उद्देश्य केवल संचालन शक्ति को उत्पन्न करना है। जब वह शक्ति हमे भोजन करने की अपेक्षा कही आसानी से मिल सकती है तो उदर को क्यो अनावश्यक वस्तुओ से भरे। —कायाकल्प

जीर्ण ज्वर की औषधि आराम और पुष्टि कारक भोजन है।

—मानसरोवर-अलग्योझा

भोजन का सम्बन्ध ऊपर से उतना नही, जितना आत्मा से है।

—मानसरोवर-आँसुओं की होली

आदमी महज़ रोटी नही चाहता और भी वहुत सी चीजे चाहता है।

—गोदान

भ्रम

उसकी दशा उस मनुष्य की सी थी, जो किसी मेले मे अपने खोये हुए वन्धु को ढूँढता हो, वह चारो ओर आँखे फाडकर देखता है, उसका नाम लेकर जोर-जोर से पुकारता है, उसे भ्रम होता है। वह खडा है, लपक कर उसके पास जाता है और लज्जित होकर लौट आता है। अंत को वह निराश होकर ज़मीन पर वैठजाता है, और रोने लगता है।

— रगभूमि

मन मे जव एक भ्रम का प्रवेश हो जाता है तो उस का निकलना कठिन हो जाता है। —सेवासदन

भ्रम मे फंसा हुआ व्यक्ति जान वूझकर जव किसी पर कीचड फेंके तो इसके सिवा और क्या कहा जा सकता है कि शुद्ध विचार रखते हुए भी वह क्रूर है। —सेवासदन

मजबूरी

मजबूरी मे हमे उन लोगो की याद आती है, जिनकी सूरत विस्मृत भी हो चुकी होती है। विदेश मे हमे अपने मुहल्ले का नाई या कहार भी मिल जाये, तो हम उसके गले मिल जाते हैं चाहे देश मे उनसे कभी सीधे मुँह बात भी न की हो। —रंगभूमि

हर एक बुराई मजबूरी से होती है। चोर इसलिए चोरी नही करता कि चोरी मे उसे विशेष आनन्द आता है बल्कि इसलिए कि जरूरत उसे मजबूर कर देती है। —मानसरोवर-दो कब्रें

मृत्यु

जीवन की भांति मृत्यु का भी सबसे विशिष्ट आलोक मुख पर ही पड़ता है। —रंगभूमि

मृत्यु तो केवल पुनर्जीवन की सूचना है एक उच्चतर जीवन का मार्ग है। —रंगभूमि

जिस मृत्यु पर घर वाले रोये वह भी कोई मृत्यु है वह तो एड़ियां रगड़ना है। वीर मृत्यु वही है जिस पर बेगाने रोयें और घर वाले आनन्द मनायें। —रंगभूमि

दिव्य मृत्यु दिव्य जीवन से कहीं उत्तम है। —रंगभूमि

काल पर हम विजय प्राप्त करते हैं अपनी सुकीर्ति से, यश से, धर्म से। परोपकार ही अमरत्व प्रदान करता है। काल पर विजय पाने का अर्थ यह

नही है कि कृत्रिम साधनो से भोग विलास मे प्रवृत हो, वृद्ध होकर जवान बनने का स्वप्न देखे और अपनी आत्मा को धोखा दे। —कायाकल्प

मृत्यु मे मानसिक प्रवृत्तियो को शांत करने की विलक्षण शक्ति होती है। ऐसे बिरले ही प्राणी ससार मे होगे जिनके अन्तःकरण मृत्यु के प्रकाश से अलोकित न हो जायें। अगर कोई ऐसा मनुष्य है, तो उसे पशु समझो।

—कायाकल्प

इस वेहयाई जिन्दगी से तो मौत ही अच्छी।

—मानसरोवर-दारोगा जी

हमारी अन्तिम घडियाँ किसी अपूर्ण साध को अपने हिय के भीतर छिपाये हुए होती है। मृत्यु पहले हमारी सारी ईर्ष्या, सारा भेद-भाव, सारा द्वेष नष्ट करती है। जिनकी सूरत से हमे घृणा होती है उनसे फिर वही पुराना सौहार्द, पुरानी मैत्री करने के लिए, उनको गले लगाने के लिए हम उत्सुक हो जाते है। जो कुछ कर सकते थे और न कर सके उसी की एक साध रह जाती है। —मानसरोवर-आगा पीछा

जिस प्रकार जख्मी सिपाही अपनी जीत का समाचार पाकर अपना दर्द, अपनी पीडा भूल जाता है उसी प्रकार क्षण भर के लिए मौत भी हेय हो जाती है। —मानसरोवर-आगा पीछा

हमारा अन्त समय कैसा धन्य होता है। वह हमारे पास ऐसे ऐसे भक्तिकारियो को खीच लाता है, जो कुछ दिन पूर्व हमारा मुख नही देखना चाहते थे और जिन्हे इस शक्ति के अतिरिक्त ससार की अन्य शक्ति पराजित न कर सकती थी। हाँ, यह समय ऐसा ही बलवान है और बडे बडे शत्रुओ को हमारे आधीन कर देता है। जिन पर हम कभी विजय न प्राप्त कर सकते थे उन पर हमे यह समय विजयी बना लेता है। जिन पर हम किसी शस्त्र मे अधिकार न पा सकते थे, उन पर यह समय शरीर के शक्तिहीन हो जाने पर भी हमें विजयी बना देता।

—वरदान

जीवन और मृत्यु में केवल एक पग का अन्तर था। पीछे का एक

पग कितना सुलभ था, कितना सरल ! आगे का एक पग कितना कठिन था, कितना भयकारक ।
—सेवासदन

मृत्यु के पर्दे के सिवा वेदना और विवशता को छिपाने की कोई आड नही ।
—मानसरोवर-प्रायश्चित

मरे को मन भर लकड़ी से जलाओ, या दस मन से, उसे क्या चिंता ?
—गोदान

मृत्यु को प्रायः इस तरह के जितने निमन्त्रण दिये जाते हैं, यदि वह सबको स्वीकार करती तो आज सारा ससार उजाड दिखाई देता ।
—मानसरोवर-गरीब की हाय

हम जीते मनुष्य से नही डरते, पर मुर्दे से डरते है ।
—मानसरोवर-गरीब की हाय

जवानी की मौत ससार का सबसे करुण, सबसे अस्वाभाविक, और सबसे भयकर दृश्य है । यह वज्रघात है, विधाता की निर्दय लीला है ।
—मानसरोवर-गुप्तधन

मौत को किसी से द्वेष नही होता । मगर स्वार्थियो के हाथो यह अत्याचार असहय हो जाता है ।
—मानसरोवर माता का हृदय

मौत का धोखा देने मे आनन्द आता है । वह उस समय कभी नही आती जब लोग उसकी राह देखते होते है । रोगी जब सँभल जाता है, जब वह पथ्य लेने लगता है, उठने बैठने लगता है, घर भर खुशियाँ मनाने लगता है, सबको विश्वास हो जाता है कि सकट टल गया, उस वक्त घात मे बैठी हुई मौत सिर पर आ जाती है । यही उसकी निठुर लीला है ।
—मानसरोवर-माता का हृदय

मदिरा और मदिरालय

मदिरालयो मे स्वर-हीन कानो के लिए संगीत की कमी कभी नहीं रहती । —रंगभूमि

जिसने कभी मदिरा का सेवन न किया हो, मद लालसा होने पर भी उसे मुँह से लगाते हुए झिझकता है । —सेवासदन

जहाँ सौ मे अस्सी आदमी भूखो मरते हो, वहाँ दारु पीना गरीबो का रक्त पीने के बराबर है । —कर्मभूमि

शराब जितनी ही तेज और नशीली हो, उतनी ही अच्छी ।

—गोदान

पीना चाहिए एकान्त मे, चेतना को जाग्रत करने के लिए, सुलाने के लिए नही, बस पहले दिन जरा जरा झिझक होगी । फिर किसका डर है ऐसी आयोजना करनी चाहिए कि लोग मुझे जबरदस्ती पिला दें, जिसमे अपनी शान बनी रहे । जब एक दिन प्रतिज्ञा टूट जायेगी, तो फिर मुझे अपनी सफाई पेश करने की जरूरत न रहेगी, घरवालो के सामने आँखें नीची न करनी पडेंगी । —मानसरोवर-दीक्षा

मन और हृदय

मन को समझाना बच्चे को फुसलाना है । —मानसरोवर-गुप्तधन

मन इतने दुखी न हो । माँगना तुम्हारा काम है, देना दूसरों का

काम है। अपना धन है, कोई नही देता तो तुम्हे बुरा क्यों लगता है ?

—रंगभूमि

मन एक भीरु शत्रु है, जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है।

—रंगभूमि

हमारी दृष्टि मन की दुर्वलताओ पर पडनी चाहिए, वल्कि दुर्वलताओ मे भी सत्य और सुन्दर की खोज करनी चाहिए। —कायाकल्प

मनुष्य का हृदय अभिलाषाओ का क्रीडा स्थल और कामनाओ का आवास है। —वरदान

मानव हृदय एक रहस्यमय वस्तु है। कभी तो वह लाखो की ओर आँख उठाकर नही देखता और कभी कौडियो पर फिसल पडता है। कभी सैकडो निर्दोषो की हत्या पर आह नही करता और कभी एक बच्चे को देखकर रो पडता है। —वरदान

कठोर से कठोर हृदय मे भी मातृ-स्नेह की स्मृतियाँ सचित होती है। —कायाकल्प

दुर्दिन मे मन के कोमल भावो का सर्वनाश हो जाता है और उनकी जगह कठोर एवं पाश्विक भाव जागृत हो जाते हैं। —सेवासदन

हृदय की चोट भाव-कौशल से नही छिपाई जा सकती। —निर्मला

जिसे ईश्वर ने दिया हो उसे आनन्दोत्सव मे दिल खोलकर व्यय करना चाहिए। हाँ, ऋण लेकर नही, घर से वचकर नही, अपनी हैसियत देखकर। हृदय की उमंग ऐसे ही अवसर पर निकलती है।

—सेवासदन

मन की प्रवृत्ति आलस्य की ओर ही जाती है। —प्रेमाश्रम

सरल हृदय मनुष्य मोम की भाँति जितनी जल्दी कठोर हो जाता है उतनी ही जल्दी पसीज भी जाता है। —सेवासदन

हमारे मन के विचार कर्म के पथ प्रदर्शक होते हैं। —सेवासदन

मुख मडल हृदय का दर्पण है। —मानसरोवर-ममता

सभ्यता, स्वेच्छाचारिता का भूत स्त्रियो के कोमल हृदय पर बडी

सुगमता से कब्ज़ा कर सकता है। —मानसरोवर-शांति

स्त्रियो का हृदय अधिकार प्रिय होता है। —मानसरोवर-शांति

आकुल हृदय को जल तरंगो से प्रेम होता है।

—मानसरोवर-बैंक का दिवाला

मन पर जितना ही गहरा आघात होता है, उसकी प्रतिक्रिया भी उतनी ही गहरी होती है। —गोदान

जब हृदय जलता है, तो वाणी भी अग्निमय हो जाती है।

—निर्मला

औरत का हृदय बडा दुर्बल है, मोह उसका प्राण है। जीवन रहते मोह तोडना उसके लिए असम्भव है। —गोदान

नारी हृदय धरती के समान है, जिससे मिठास भी मिल सकती है, कडवापन भी। उसके अन्दर पडने वाले बीज मे जैसी शक्ति हो।

—गोदान

योग साधकर भी मनुष्य का हृदय निर्जीव नही होता।

—मानसरोवर-हार जीत

मन! तेरी गति कितनी विचित्र है, कितनी रहस्य से भरी हुई, कितनी दुर्भेद्य! तू कितनी जल्द रंग बदलता है? इस कला मे तू निपुण है। आतिशवाज की चर्खी को भी रंग बदलते कुछ देर लगती है; पर तुझे रंग बदलने मे उसका लक्षांश समय नही लगता। —निर्मला

मन को कर्त्तव्य की डोरी से बांधना पडता है, नही तो उसकी चंचलता आदमी को न जाने कहाँ लिए-लिए फिरे। —कर्मभूमि

आपके मन की इच्छा तो आपके मुख पर लिखी हुई है। जड से चेतन का ज्ञान नही होता। —कायाकल्प

अपनी या अपनो की बुराइयों पर शर्मिन्दा होना सच्चे दिलो ही का काम है। —गबन

रोटी के साथ लोगो के हृदय भी अलग हो जाते हैं। वे हमेशा के लिए ग़ैर हो जाते हैं। फिर उनमे वही नाता रह जाता है जो गाँव के

और आदमियो मे होता है । —मानसरोवर-अलग्योझा

दो रोटियाँ होते ही दो मन हो जाते हैं ।

—मानसरोवर-अलग्योझा

मन जिससे मिले वही नयी है, मन जिससे न मिले वही पुरानी है।

—मानसरोवर-अग्नि समाधि

उसके मन की दशा उस मनुष्य की सी थी जो बरसो की कमाई लिए मन मे सहस्रो मनसूबे बाँधता, हर्ष से उल्लसित घर आये और यहाँ सन्दूक खोलने पर उसे मालूम हो कि थैली खाली पडी है । —सेवासदन

अनुतप्त हृदय वह तिरस्कार चाहता है जिसमे सहानुभूति और सहृदयता हो, वह नही जो अपमानसूचक और क्रूरतापूर्ण हो। पका हुआ फोडा नश्तर का घाव चाहता है, पत्थर का आघात नही । —सेवासदन

तुच्छ हृदय का आदमी तो वास्तव मे पशु है ।

—मानसरोवर-विषम समस्या

कोमल हृदय आपत्तियो से स्थिर नही रह सकता है ।

—मानसरोवर-सज्जनता का दण्ड

मानव हृदय के रहस्य कभी समझ मे नही आते ।

—मानसरोवर-शंखनाद

जिस तरह पत्थर और पानी मे भी आग छिपी रहती है, उसी तरह मनुष्य के हृदय मे भी—चाहे वह कैसा ही क्रूर और कठोर क्यो न हो, उत्कृष्ट और कोमल भाव छिपे रहते हैं । —मानसरोवर-शंखनाद

यह भी कोई दिल है कि घर मे चाहे आग लग जाए, दुनिया में कितना ही उपहास हो रहा हो, लेकिन आदमी अपने राग-रंग मे मस्त रहे ! वह दिल है कि पत्थर । —मानसरोवर-नैराश्य लीला

नारी हृदय कोमल है, लेकिन केवल अनुकूल दशा मे, जिस दशा में पुरुष दूसरो को दबाता है, स्त्री शील और विनय की देवी हो जाती है । लेकिन जिसके हाथो अपना सर्वनाश हो गया हो उसके प्रति स्त्री को पुरुष से कम घृणा और क्रोध नही होता । अन्तर इतना ही है कि पुरुष

शस्त्रों से काम लेता है और स्त्री कौशल से।

—मानसरोवर-माता का हृदय

मर्यादा

मर्यादा बडी चीज है। उसकी रक्षा करना हमारा धर्म है; लेकिन कमली के वाहर पाँव निकालना भी तो उचित्त नही।

—मानसरोवर-मृतक का भोज

संसार मे मर्यादा से प्रिय कोई वस्तु नही है। मर्यादा के लिए प्राण तक दिए जा सकते है। जव मर्यादा ही न रही तो क्या रहा?

—मानसरोवर-मृतक का भोज

आहत मर्यादा किसी आहत सर्प की भाँति ही तडप उठती है।

—मानसरोवर-प्रेम का उदय

मरजाद जान से प्यारी नही होती। —मानसरोवर-प्रेम का उदय

हमारा मुँह हमारी देवियो से उज्जवल है और जिस दिन हमारी देवियाँ मर्यादा की हत्या करने लगेंगी, उसी दिन हमारा सर्वनाश हो जायेगा। मर्यादा की रक्षा करना कठिन है। —कायाकल्प

हमारी मर्यादा हमारे वाद भी जीवित रहती है।

—मानसरोवर-शांति

कुल मर्यादा युगो मे वनती है और क्षण मे विगड जाती है। यह कोई मामूली वात नही है। —प्रतिज्ञा

अपनी मरजाद सवको प्यारी होती है। —प्रेमाश्रम

कुल मर्यादा संसार की सवसे उत्तम वस्तु है। उस पर प्राण तक न्योछावर कर दिए जाते है। —मानसरोवर-वहिष्कार

अपनी कुल मर्यादा के मिटाने वाले हम हैं। हम अपनी कायरता से

प्राण भय से, लोक निन्दा के डर से, झूठे सतान-प्रेम से, अपनी बेहयाई से, आत्म-गौरव की हीनता से, ऐसे पापाचरणो को छिपाते हैं, उन पर परदा डाल देते है। इसी का यह परिणाम है कि दुर्बल आत्माओ का साहस इतना बढ गया है। —सेवासदन

जिसे पेट को रोटी मयस्सर नही उसके लिए मरजाद और इज्जत सब ढोग है। —गोदान

कुल मर्यादा मे आत्म रक्षा की बडी शक्ति होती है।

—मानसरोवर-वैर का अत

मातृ-स्नेह

मातृ-स्नेह के सुधा प्रवाह से बच्चे का सतप्त हृदय परिप्लावित हो जाता है। हृदम के कोमल पौधे, जो क्रोध के ताप से मुरझा जाते हैं, फिर हरे हो जाते है। —निर्मला

जब माँ बच्चो का मुँह देखती है, तो वात्सल्य से चित्त गद्-गद् हो जाता है। —निर्मला

माँ, निरादर-अपमान, जली-कटी, घुड़की-झिडकी सब कुछ बच्चो के लिए सह लेती है। —निर्मला

मातृ-प्रेम मे कठोरता होती है, लेकिन मृदुलता मे मिली हुई। सौतेली माँ, के प्रेम मे करुणा होती है पर वह कठोरता नही, जो आत्मीयता का गुप्त सन्देश होता है, उसका करुण रोदन बालक को उसके अनाथ होने की सूचना दे देता है। —निर्मला

माता का हृदय प्रेम मे इतना अनुरक्त रहता है कि भविष्य की चिन्ता और बाधाएँ उसे जरा भी भयभीत नही करती। उसे अपने अत.-करण मे एक अलौकिक शक्ति का अनुभव होता है, जो बाधाओ को उसके

सामने परास्त कर देती है।

—निर्मला

माता-पिता से बढ कर हमारा हितैषी और कौन हो सकता है? उनके ऋण से कौन मुक्त हो सकता है।

—निर्मला

माँ के हाथ की रोटियाँ लडकियो को बहुत अच्छी लगती है। खिलाना तो बस माँ ही जानती है।

—निर्मला

मातृ-हीन बालक के समान दुखी दीन-प्राणी ससार मे दूसरा नही होता।

—निर्मला

ससार मे सभी बालक दूध की कुल्लियाँ नही करते, सभी सोने के कौर नही खाते। कितनो को पेट भर भोजन भी नही मिलता, पर घर से विरक्त वही होते हैं, जो मातृ-स्नेह से वचित है।

—निर्मला

घर के कोने और माता के अंचल मे बड़ा अन्तर है। एक शीतल जल का सागर है दूसरा मरुभूमि।

—सेवासदन

माता का हृदय व्यग की चोटे नही सह सकता।

—सेवासदन

मातृत्व दीर्घ तपस्या है।

—मानसरोवर बेटों वाली विधवा

बहादुर बेटे की माँ उसकी वीर गति पर प्रसन्न होती है।

—मानसरोवर-शाति

मातृत्व का गर्व और आनन्द आँखो मे सजीवनी सी भर देता है।

—मानसरोवर-स्वामिनी

बच्चो के लिए बाप एक फालतू-सी चीज—एक विलास की वस्तु है, जैसे घोडे के लिए चने या बाबुओ के लिए मोहन भोग। माँ रोटी-दाल है, मोहन भोग उम्र भर न मिले तो किसका नुकसान है, मगर एक दिन रोटी-दाल के दर्शन न हो, तो फिर देखिए, क्या हाल होता है।

—मानसरोवर-घर जमाई

ससार मे और जो कुछ है, मिथ्या है, निस्सार है। मातृ-प्रेम ही सत्य है, अक्षय है, अनश्वर है।

—मानसरोवर-मदिर

माँ-बाप जन्म के साथी होते हैं किसी के कर्म के साथी नही होते।

—मानसरोवर-पिसनहारी का कुँआ

मातृत्व महान् गौरव का पद है, इस पद मे कही अपमान और धिक्कार और तिरस्कार नही मिला। माता का काम जीवन दान देना है।
—गोदान

वीर माताओ से देश का मुख उज्ज्वल होता है, जो देश हित के सामने मातृ-स्नेह की धूल बराबर भी परवाह नही करती। उनके पुत्र देश के लिए होते है, देश पुत्र के लिए नही होता।

—मानसरोवर-धिक्कार

माता आप चाहे पुत्र को कितनी ही ताडना दे, यह गवारा नही करती कि कोई दूसरा उसे कडी निगाह से भी देखे।

—रंगभूमि

माता अपने कुरूप बालक को भी सुन्दर समझती है। —कायाकल्प

माताओ को चाहिए कि अपने पुत्रो को साहसी और वीर बनाये।

—कायाकल्प

माता बालक के साथ जितना प्रेम कर सकती है, उतना दूसरा कौन कर सकता है ? —कायाकल्प

अपनी संतान का अहित कोई माता नही कर सकती है।

—मानसरोवर-दो सखियां

पुरुष वासनाओ से कभी मुक्त नही हो पाता, बल्कि ज्यो ज्यो अवस्था ढलती है, त्यो त्यो ग्रीष्म-ऋतु के अंतिमकाल की भांति उसकी वासना की गर्मी भी प्रचण्ड होती जाती है। वह तृप्ति के लिए नीच साधनो का सहारा लेने को भी प्रस्तुत हो जाता है। जवानी मे मनुष्य इतना नही गिरता। उसके चरित्र मे गर्व की मात्रा अधिक रहती है, जो नीच साधनों से घृणा करती है। वह किसी के घर मे घुसने के लिए जबरदस्ती कर सकता है, किन्तु परनाले के रास्ते नही जा सकता।

—मानसरोवर-सत

संसार मे ऐसे मर्द भी होते है, जो स्त्री के लिए प्राण दे देते हैं।

कर देता है।
—रंगभूमि

मनुष्य बड़े से बडा जो काम कर सकता है, वह यही है कि आत्म-रक्षा के लिए मर मिटे। यही मानवीय जीवन का उच्चतम उद्देश्य है। ऐसी ही परीक्षाओ मे सफल होकर हमे वह गौरव प्राप्त हो सकता है कि जाति हम पर विश्वास कर सके।
—रगभूमि

जिस व्यक्ति से हमे क्षति की लेश मात्र भी शका हो, हम उसे कुचल डालना चाहते है, उसका नाश कर देना चाहते हैं, उसके साथ किसी भाँति भी रियायत, सहानुभूति, यहाँ तक कि न्याय का व्यवहार भी नही कर सकते।
—रगभूमि

सिद्धातवादी मनुष्य हाव भाव का प्रतिकार करने के लिए अपना दिल मजबूत कर सकता है, वह अपने अन्तःकरण के सामने अपनी दुर्बलता स्वीकार नही कर सकता, लेकिन दुराग्रह के मुकाबले वह निष्क्रय हो जाता है। तब उसकी एक नही चलती।
—रंगभूमि

जो प्राणी शक्ति का सचार होते ही उन्मत्त हो जाये, उसका अशक्त, दलित रहना ही अच्छा।
—रगभूमि

बुरे कामो मे उनसे दबना मनुष्य के पद से गिर जाना है। मैं पहले मनुष्य हूँ, पत्नी, माता, बहन, बेटी पीछे।
—रगभूमि

मानव चरित्र बहुत ही दुर्बोध वस्तु है।
—रंगभूमि

मनुष्य स्वभावत शाति प्रिय होता है।
—रंगभूमि

जीवन के सुख जीवन के दुःख है। विराग और आत्म ग्लानि ही जीवन के रत्न है।
—रगभूमि

मानव चरित्र की एक विचित्रता यह है कि हम बहुधा ऐसे काम कर डालते है, जिन्हे करने की इच्छा नही होती। कोई गुप्त प्रेरणा हमे इच्छा के विरुद्ध ले जाती है।
—रंगभूमि

प्रत्येक प्राणी के दो शरीर होते है—एक स्थूल, दूसरा सूक्ष्म। दोनो अनुरूप होते है, अन्तर केवल इतना ही है कि सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से कही सूक्ष्म होता है। वह साधारण दशाओ मे अदृश्य रहता है, किन्तु

समाधि या निद्रावस्था मे स्थूल शरीर का स्थानापन्न बन जाता है।

—रंगभूमि

भूमि पर चलने वाला मनुष्य गिरकर फिर उठ सकता है, लेकिन आकाश मे भ्रमण करने वाला मनुष्य गिरे, तो उसे कौन रोकेगा, उसके लिए कोई आशा नही, कोई उपाय नही। —रंगभूमि

जिन्दगी जैसी नियामत रो रो कर दिन काटने के लिए नही दी गई। जिन्दगी का कुछ मजा ही न मिला तो उसमे फायदा ही क्या ?

—सेवासदन

अधर्म और दुराचार से मनुष्य को जो स्वाभाविक घृणा होती है, वह उसके हृदय को डावाँडोल कर देती है। उसकी अवस्था कभी-कभी उस मनुष्य की सी हो जाती है जो किसी बाग मे पके फल देखकर ललचाता है, पर माली के न रहते हुए भी उन्हे तोड नही सकता। —सेवासदन

जो मनुष्य कभी पहाड पर नही चढा है, उसका सिर एक छोटे से टीले पर भी चक्कर खाने लगता है। —सेवासदन

जीवन की भिन्न-भिन्न अवस्थाओ मे भिन्न भिन्न वासनाओ का प्राबल्य रहता है, बचपन मिठाइयो का समय हैं, बुढापा लोभ का, यौवन प्रेम और लालसाओ का समय है, इस अवस्था मे मीना बाजार की सैर मन मे विप्लव मचा देती है। जो सुदृढ हैं; लज्जाशील या भाव शून्य है—वह सँभल जाते है। शेष फिसलते हैं और गिर पडते है।

—सेवासदन

कुछ मनुष्य जन्म ही से स्थूल होते है उनके लिए खाने पीने की किसी विशेष वस्तु की जरूरत नही। कुछ मनुष्य ऐसे होते है जो घी दूध आदि का इच्छा पूर्वक सेवन करने से स्थूल हो जाते हैं और कुछ लोग ऐसे होते है जो सदैव दुबले रहते हैं, वह चाहे घी दूध के मटके ही मे रख दिये जाये तो भी मोटे नही हो सकते। —सेवासदन

मानव जीवन भी अन्य जीवधारियो की भाँति केवल स्वाभाविक आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए है। —प्रेमाश्रम

इंसान कितना ही हैवान हो जाये उसमे कुछ न कुछ आदमियत रहती है। आदमियत अगर जाग सकती है, तो ग्लानि से या पश्चात्ताप से।
—कर्मभूमि

जिन्दादिल बूढो के साथ तो सोहबत का आनन्द उठाया जा सकता है, लेकिन रुखे निर्जीव मनुष्य जवान हो तो दूसरो को मुर्दा बना देते हैं।
—गबन

रुपये के मामले मे पुरुष महिलाओ के सामने कुछ नही कह सकता। ...वह मर जाएगा, पर उफ न करेगा। वह कर्ज लेगा, दूसरो की खुशामद करेगा ; पर स्त्री के सामने अपनी मजबूरी न दिखायेगा। रुपये की चर्चा को ही वह तुच्छ समझता है। —गबन

साल-दो-साल पुरुष खूब प्रेम करते है, फिर न जाने क्यो उन्हे स्त्री से अरुचि सी हो जाती है। मन चचल होने लगता है। औरत के लिए इससे बडी विपत्ति नही।
—गबन

मर्द स्त्री से बल मे, बुद्धि मे, पौरुष मे अक्सर बढकर होता है; इसलिए उसकी हुकूमत है। जहाँ पुरुष के बदले स्त्री मे यही गुण है, वहाँ स्त्रियो की चलती है। मर्द कमाकर खिलाता है, क्या रोब जमाने से भी जाय।
—प्रतिज्ञा

मर्दों पर निष्ठुरता का दोष लगाना न्याय विरुद्ध है। वह उस समय तक सिर नहीं उठा सकते, जब तक या तो स्त्री स्वय उन्हे मुक्त न कर दे, अथवा किसी दूसरी स्त्री की प्रबल विद्युत शक्ति उन पर प्रभाव न डाले।
—प्रेमाश्रम

पुरुष मे थोडी सी पशुता होती है, जिसे वह इरादा करके भी हटा नही सकता। वही पशुता उसे पुरुष बनाती है। विकास के क्रम मे वह स्त्री से पीछे है। जिस दिन वह पूर्ण विकास को पहुँचेगा, वह भी स्त्री हो जायेगा। वात्सल्य, स्नेह, कोमलता, दया इन्ही आधारो पर यह सृष्टि थमी हुई है और यह स्त्रियो के गुण हैं अगर स्त्री इतना समझ ले, तो फिर दोनो का जीवन सुखी हो जाये।
—कर्मभूमि

कभी-कभी जीवन मे ऐसी घटनाये हो जाती है, जो क्षण मात्र मे मनुष्य का रूप बदल देती है। कभी माता पिता की एक तिर्छी चितवन पुत्र को सुयश के उच्च शिखर पर पहुंचा देती है और कभी स्त्री की एक शिक्षा पति के ज्ञान-चक्षुओ को खोल देती है। गर्वशील पुरुष अपने सगो की दृष्टियो मे अपमानित होकर ससार का भार नही बनना चाहते। मनुष्य जीवन मे ऐसे अवसर ईश्वर प्रदत्त होते है। —वरदान

इन्द्रियो के वश मे होकर मनुष्य को भले बुरे का ध्यान नही रह जाता। —वरदान

मैं मनुष्यत्व को भ्रातृ प्रेम से उच्चत्तर समझता हूँ। —प्रेमाश्रम

कुछ लोग ऐसे भी है, जो सारे ससार के मित्र होते है पर अपने घर के शत्रु। —प्रेमाश्रम

जो आदमी साँप को पैरो से कुचल रहा हो उसे यह मालूम होना चाहिए कि साँप के दाँत जहरीले होते है। जमीदारी करना साँप को नचाना है। वह सपेरा अनाडी है, जो साँप को काटने का मौका दे। - प्रेमाश्रम

आदमी को जीवन क्यो प्यारा है। इसलिए नही कि वह सुख भोगता है। जो दुःख भोगा करते है और रोटियो के लिए तरसते है, उन्हे जीवन कुछ कम प्यारा नही होता। हमे जीवन इसलिए प्यारा होता है कि हमे अपनो का प्रेम और दूसरो का आदर होता है। —कर्मभूमि

चरित्र की जांच आदर्श नियमो से की जाती है। —प्रतिज्ञा

चरित्र का जो मूल्य है वह और किसी वस्तु का नही।—कायाकल्प

चरित्रोन्नति के लिए भी विविध प्रकार की परिस्थितयाँ अनिवार्य है। दरिद्रता को काला नाग क्यो समझे ? चरित्र-सगठन के लिए यह सम्पत्ति से कही महत्वपूर्ण है। यह मनुष्य मे दृढता और सकल्प, दया और सहानुभूति के भाव उदय करती है। प्रत्येक अनुभव चरित्र के किसी-न-किसी अग की पुष्टि करता है। यह प्राकृतिक नियम है। इसमे कृत्रिम बाधाओ के डालने से चरित्र विषम हो जाता है। यहाँ तक कि क्रोध

और ईर्षा, असत्य और कपट मे भी बहुमूल्य शिक्षा के अंकुर छिपे रहते है। जब तक सितार का प्रत्येक तार चोट न खाय, सुरीली ध्वनि नही निकल सकती। मनोवृत्तियो को रोकना ईश्वरीय नियमो मे हस्तक्षेप करना है। इच्छाओ का दमन आत्महत्या के समान है। इससे चरित्र सकुचित हो जाता है। बन्धनो के दिन अब नही रहे, यह अबाध, उदार, विराट, उन्नति का समय है। त्याग और बहिष्कार उस समय के लिए उपयुक्त था, जब लोग ससार को असार-स्वप्नवत समझते थे। यह सासारिक उन्नति का काल है, धर्माधर्म का विचार संकीर्णता का द्योतक है। सासारिक उन्नति हमारा अभीष्ट है। प्रत्येक साधन जो अभीष्ट-सिद्धि मे हमारा सहायक हो ग्राह्य है। —प्रेमाश्रम

समय और नियम मानव-चरित्र के स्वाभाविक विकास के बाधक है। वही पौधा सघन वृक्ष हो सकता है जो समीर और लू, वर्षा और पाले मे समान रूप से खडा रहे। उसकी वृद्धि के लिए अग्निमय प्रचण्ड वायु उतनी ही आवश्यक है, जितनी शीतलमन्द समीर, शुष्कता उतनी ही प्राण पोषक है, जितनी आर्द्रता। —प्रेमाश्रम

मानव चरित्र न बिलकुल श्यामल होता है, न बिलकुल श्वेत। उसमे दोनो ही रगो का विचित्र सम्मिश्रण होता है, किन्तु स्थिति अनुकूल हुई, तो वह ऋषितुल्य हो जाता है, प्रतिकूल हुई तो नराधम। —प्रेमाश्रम

मनुष्य स्वार्थी जीव है और यह असम्भव है कि जब तक उसे धींगा-धींगी के मौके मिलते रहेगे, वह उनसे लाभ न उठाये। —प्रेमाश्रम

ऐसा विरला ही कोई मनुष्य होगा, जो चन्दो के भँवर मे पडकर वेदाग निकल गया हो। —प्रेमाश्रम

मनुष्य पराई पीर क्या जाने ? —निर्मला

यह जीवन संग्राम का युग है, और यदि हमको संसार मे जीवित रहना है तो हमे विवश होकर नवीन और पुरुषोचित सिद्धान्तो के अनुकूल बनना पड़ेगा। —प्रेमाश्रम

दुनिया मे अगर ऐसे मनुष्य हैं जिन्हे विपत्ति से उत्तेजना और साहस

मिलता है तो ऐसे भी मनुष्य हैं, जो आपत्तिकाल मे कर्त्तव्यहीन, पुरुषार्थ-हीन और उद्यमहीन हो जाते हैं। —मानसरोवर-बहिष्कार

छोटे आदमी एक घर की बात दूसरे घर पहुँचा देते है, इन्हे कभी मुँह न लगाना चाहिए। —मानसरोवर-लांछन

जो मर्द हुस्न की कदर नही कर सकता, वह आदमी नही।

—मानसरोवर-लांछन

हँसमुख, श्रमशील, विनोदी, निर्द्वन्द आदमी कभी भूखो नही मरता।

—मानसरोवर-अग्नि समाधि

आदमी को चाहिए कि जैसा समय देखे वैसा काम करे।

—मानसरोवर-सुजान भगत

सिर पर आ पड़ती है, तो आदमी आप सँभल जाता है।

—गोदान

जीवन से ज्यादा असार भी दुनिया मे कोई वस्तु नही है। क्या वह उस दीपक की भांति ही क्षणभगुर नही है, जो हवा के एक झोके से बुझ जाता है ? पानी के एक बुलबुले को देखते हो, लेकिन उमे टूटते भी कुछ देर लगती है, जीवन मे उतना सार भी नही। सांस का भरोसा ही क्या ? और इसी नश्वरता पर हम अभिलाषाओ के कितने विशाल भवन बनाते हैं। नही जानते, नीचे जाने वाली सांस ऊपर आयेगी या नही पर सोचते इतनी दूर की है, मानो हम अमर हैं। — निर्मला

मानव जीवन तू इतना क्षणभगुर है पर तेरी कल्पनाएँ कितनी दीर्घायु ! —निर्मला

मनुष्य ईश्वर का खिलौना है, यही मानव-जीवन का महत्व है, वह केवल बालको का घरौंदा है जिसके बनाने का न कोई हेतु है, न बिगड़ने का। —निर्मला

मानव-जीवन की सबसे महान् घटना कितनी शान्ति के साथ घटित हो जाती है। वह विश्व का एक महान् व्यंग, वह महत्वाकाक्षाओ का प्रचण्ड सागर, वह उद्योग का अनन्त भण्डार, वह प्रेम और द्वेष, सुख

और दुःख का लीला क्षेत्र, वह बुद्धि और बल की रंगभूमि न जाने क
और कहाँ लीन हो जाती है, किसी को खबर नही होती। एक हिच
भी नही, एक उच्छ्वास भी नही, एक आह भी नही निकलती। सा
की हिलोरो का कहाँ अन्त होता है, कौन बता सकता है ? ध्वनि क
वायुमग्न हो जाती है, कौन जानता है ? मानवीय जीवन उस हिलोर
सिवा, उस ध्वनि के सिवा और क्या है ? उसका अवसान भी उत
ही शान्त, उतना ही अदृश्य हो तो क्या आश्चर्य है ?

—निर्मल

जीवन को उच्च बनाने के लिए उच्च शिक्षा की आवश्यकता नहीं
केवल शुद्ध विचारो और पवित्र भावो की आवश्यकता है। —सेवासद

जो पुरुष इतना नीच है कि अपनी स्त्री को दूसरो से प्रेमालाप कर
देखकर उसका रुधिर खौल नही उठता वह पशुओ से भी गया बीता है

—सेवासदन

पावस की अंतिम बूंदो के सदृश मनुष्य की वाणी के अंतिम शब्द
कभी निष्फल नही जाते। —सेवासदन

बहुत विद्वान होने से ही मनुष्य आत्म गौरव नही प्राप्त कर सकता।
इसके लिए सच्चरित्र होना परमावश्यक है। चरित्र के सामने विद्या का
मूल्य बहुत कम है। —सेवासदन

जिसमे दया नही, धर्म नही, निज भाषा से प्रेम नही, चरित्र नहीं,
आत्म बल नही, वे भी कुछ आदमी हैं ? —सेवासदन

कोई मनुष्य, चाहे वह कितने ही दुःख मे हो, उस व्यक्ति के सामने
अपना शोक प्रकट नही करना चाहता जिसे वह अपना सच्चा मित्र न
समझता हो। —सेवासदन

मनुष्य लोभ के वश होकर आभूषण तो चुरा लेता है, पर विवेक
होने पर उसे देखने मे भी लज्जा आती है। —सेवासदन

ईमानदार मनुष्य स्वभावतः स्पष्टभाषी होता है उसे अपनी बातो मे

नमक मिर्च लगाने की जरूरत नही होती।

—मानसरोवर-ईश्वरीय न्याय

संशय और शका से पूर्ण जीवन मनुष्य के सर्वोत्कृष्ट गुणो का ह्रास कर देता है।

—रगभूमि

हम बीमारी मे जिस लकड़ी के सहारे डोलते हैं, निरोग हो जाने पर उसे छूते तक नही।

—रगभूमि

मनुष्य स्वभावतः विनोदशील है।

—रगभूमि

वीर पुरुष मुक्तात्मा होते है। जब तक जीते है, निर्द्वन्द्व जीते हैं। मरते है, तो निर्द्वन्द्व मरते है।

—रंगभूमि

कोई जीवन दिव्य नही है, जब तक उसका अत भी दिव्य न हो।

—रंगभूमि

मरणासन्न मनुष्य का वे लोग भी स्वच्छद होकर कीर्तिमान करते है, जिनका जीवन उससे वैर साधने मे ही कटा हो, क्योकि अब उसमे किसी हानि की शका नही होती।

—रगभूमि

जो मनुष्य अपनो का पालन न कर सका, वह दूसरो की किस मुँह से मदद करेगा।

—कायाकल्प

पेट पालने ही के लिए तो हम आदमी नही बनाये गये है। हमारे जीवन का आदर्श कुछ तो ऊँचा होना चाहिए, विशेषकर उन लोगो का, जो सभ्य कहलाते हैं। ठाट से रहना ही सभ्यता नही।

—कायाकल्प

पुरुष रोगी हो, बूढा हो, दरिद्र हो, पर नीच न हो।

—कायाकल्प

जो लोग मीठी बाते करते है, उनके पेट मे छुरी छिपी रहती है।

—कायाकल्प

परले सिरे का कुचरित्र मनुष्य भी साधु वेश रखने वालो से ऊँचे आदर्श पर चलने की आशा रखता है, और उन्हे आदर्श से गिरते देखकर उनका तिरस्कार करने मे संकोच नही करता।

—कायाकल्प

मनुष्य का उद्धार पुत्र से नही, अपने कर्मो से होता है। यश और

कीर्ति भी कर्मों ही से प्राप्त होती है। सन्तान वह सबसे कठिन परीक्षा है, जो ईश्वर ने मनुष्य को परखने के लिए गढी है। —कायाकल्प

आदमी की इज्जत अपने हाथ मे है। —कायाकल्प

ऐसे प्राणी भी होते हैं, जिन्हे पडोसी के उपवास देखकर जलन होती है। —कायाकल्प

पुरुष कितना ही विद्वान और अनुभवी हो, पर स्त्री को समझने मे असमर्थ ही रहता है। कायाकल्प

सुखी मानव बहुत दिनो नही जीता है। —कायाकल्प

घोडे और मर्द कभी बूढ़े नही होते, केवल उन्हे रातिब मिलना चाहिए। —कायाकल्प

आदमी अपनी आदतो को एकाएक नही बदल सकता।—कायाकल्प

ऐसे प्राणी भी संसार मे हैं, जिन्हे अपने विलास के आगे किसी वस्तु की परवाह नही। —कायाकल्प

मानवीय चरित्र इतना जटिल है कि बुरे से बुरा आदमी देवता हो जाता है और अच्छे से अच्छा आदमी पशु भी —कायाकल्प

अनन्त जीवन अनन्त प्रवाह मे है। —कायाकल्प

वह मनुष्य जिसका जीवन व्याज प्राप्ति, बेईमानी, कठोरता तथा निर्दयता और सुख विलास मे व्यतीत होता हो, जातीय सेवा के योग्य कदापि नही हैं। —मानसरोवर-ममता

संसार मे ऐसे भी मनुष्य होते हैं, जो अपने आमोद-प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवाह नही करते हैं। —मानसरोवर-मन्त्र

गुमराह आदमी जब विवाह करने पर उतर आये, तो समझ लो वह रास्ते पर आयेगा। चुप्पा ऐब वह चिकना घडा है, जिस पर किसी बात का असर नही होता। —मानसरोवर-शराब की दुकान

जिस तरह मर्द के मर जाने से औरत अनाथ हो जाती है, उसी तरह औरत के मर जाने से आदमी के हाथ पांव कट जाते हैं।

—गोदान

ऐसा आदमी कहाँ है, जो अपनी चर्चा सुनकर टाल जायें ।

—गोदान

बहुत करके तो मर्द ही औरतो को बिगाडते हैं । जब मर्द इधर-उधर ताक झाँक करेगा, तो औरत भी आँख लडायेगी । मर्द दूसरी औरतों के पीछे दौड़ेगा, तो औरत भी जरूर मर्दो के पीछे दौडेगी । मर्द का हरजाई-पन औरत को भी उतना ही बुरा लगता है, जितना औरत का मर्द को ।

—गोदान

मानवता इस अवरोध से विकृत होकर उसके मन, वचन और कर्म सभी को विषाक्त कर देती है । —गोदान

आदमी आराम के लिए ही तो कमाता है, जब जान खपाकर भी आराम न मिला, तो जिन्दगी ही गारत हो गई । —गोदान

आदमी इसीलिए जन्म लेता है कि सारी उम्र तपस्या करता रहे, और एक दिन खाली हाथ मर जाए । सब जिन्दगी का सुख चाहते हैं सबकी लालसा होती है कि हाथ मे चार पैसे हो । —गोदान

आदमी झूठा तभी खाता है, जब मीठा हो । कलक चाँदी से हो घुलता है । —गोदान

जो आदमी किसी व्यापार मे हिस्सा लेता है, वह इतना दरिद्र नहीं होता कि इसके नफे ही को जीवन का आधार समझे । हो सकता है कि नफा कम मिलने पर उसे अपना एक नौकर कम करना पडे या उनके मक्खन और फलो का विलम्ब हो जाये, लेकिन वह नंगा या भूखा न रहेगा । जो अपनी जान खपाते हैं, उनका हक उन लोगो से ज्यादा है, जो केवल रुपया लगाते हैं। —गोदान

जब जिन्दगी मे बदनामी और दुर्दशा के सिवा और कुछ न हो, तो आदमी का मर जाना ही अच्छा । —गोदान

तृष्णा के वस मे पड़कर आदमी इस तरह अपनी जिन्दगी चौपट करता है । जब कोई रोने वाला ही नहो, तो फिर जिन्दगी का क्या मोह और मरने से क्या डरना । —गोदान

संसार की उत्पत्ति से अब तक लाखो शताब्दियाँ वीत जाने पर भी, मनुष्य वैसा ही क्रूर, वैसा ही वासनाओ का गुलाम बना हुआ है। बल्कि उस समय के लोग सरल प्रकृति के कारण इतने कुटिल, दुराग्रहो मे इतने चालाक न थे। मानसरोवर-ज्वालामुखी

मनुष्य जिधर पगडडियो का चिन्ह पाता है, उसी मार्ग को पकड लेता है। — मानसरोवर-विस्मृति

मनुष्य बिगडता है या तो परिस्थितियो से, या पूर्व सस्कारो से। परिस्थितियो का त्याग करने से ही बच सकता है, सस्कारो से गिरने वाले मनुष्य का मार्ग इससे कही कठिन है। आपकी आत्मा सुन्दर और पवित्र है, केवल परिस्थितियो ने उसे कुहरे की भाँति ढँक लिया है। अब विवेक का सूर्य उदय हो गया है, ईश्वर ने चाहा तो कुहरा भी फट जायेगा, लेकिन परिस्थितियो का त्याग करने को तैयार हो जाइये।

—मानसरोवर-विश्वास

खोये हुए अवसरो का नाम ही तो जीवन है।

—मानसरोवर-प्रेरणा

भारतीय जीवन मे सात्विक सरलता है। हम उस वक्त तक अपने बच्चो से मजदूरी नही कराते जब तक कि परिस्थितियाँ हमे विवश न कर दे। —मानसरोवर-प्रेरणा

खाने और सोने का नाम जीवन नही है। जीवन नाम है सदैव आगे बढते रहने की लगन का। —मानसरोवर-प्रेरणा

मनुष्य के जीवन मे एक ऐसा अवसर भी आता है, जब परिणाम की उसे चिन्ता नही रहती। —मानसरोवर-तगादा

मानव किसी से मिले-जुले विना रह भी तो नही सकता, यह भी तो एक तरह की भूख है। भूख मे अगर शुद्ध भोजन न मिले तो मानव झूठा खाने मे भी परहेज़ नही करेगा। —मानसरोवर-दो कब्रें

जिन्दा रहने के लिए आदमी सब कुछ कर सकता है। जिन्दा रहना जितना ही कठिन होगा, बुराइयाँ भी उसी मात्रा मे बढेंगी, जितना ही

आसान होगा उतनी ही बुराइयाँ कम होगी। —मानसरोवर-दो कब्रें

पुरुप छली, कपटी, विश्वासघाती और स्वार्थी होते है।

—मानसरोवर-ढपोरसख

मनुष्य परिस्थियो का दास होता है। आप जिस वायुमडल मे पली, उसका असर तो पडता ही था; किन्तु पाप के दलदल मे फँसकर फिर निकल आना अवश्य गौरव की बात है। बहाव की ओर से नाव खे ले जाना तो बहुत सरल है; किन्तु जो नाविक बहाव के प्रतिकूल खे ले जाता है, वही सच्चा नाविक है। —मानसरोवर-आगा पीछा

जान ही के लिए तो आदमी सब तरह के कुकरम* करने लगता है।

—मानसरोवर-प्रेम का उदय

उजले कपडे और चिकने मुखड़े से कोई आदमी सुन्दर नही हो सकता। —मानसरोवर-सती

मर्द की उम्र उसका भोजन है। —मानसरोवर-मृतक का भोज

जिन्दगी मे सुख भी है, दुःख भी है। सुख मे इतराओ मत, दुःख मे घवडाओ मत। —मानसरोवर-मृतक का भोज

जीवन पथ मे एक बार उलटी राह चलकर फिर सीधे मार्ग पर आना कठिन है। —मानसरोवर-नरक का मार्ग

पति ही स्त्री का सच्चा मित्र, सच्चा पथ-प्रदर्शक और सच्चा सहायक है। पति विहीन होना किसी घोर पाप का प्रायश्चित है।

—मानसरोवर-नैराश्य लीला

बाज आदमी अपनी स्त्री से इसलिए नाराज रहते हैं कि उनके लडकियाँ ही क्यो होती है, लडके क्यो नही होते। वह जानते है कि इसमे स्त्री का दोष नही है, या है तो उतना ही जितना मेरा, फिर भी सब देखिए स्त्री से रूठे रहते हैं, उसे अभागिनी कहते हैं, और सदैव उसका दिल दुखाया करते है। —मानसरोवर-नैराश्य-लीला

पत्नी से अधिक पुरुष के चरित्र का ज्ञान और किसी को नही होता।

—मानसरोवर-दंड

---

*कुकर्म

अब मनुष्य की चेतना नही, उपचेतना उसका शासन करती है।

—मानसरोवर-मुक्तिधन

मनुष्य उदार हो, तो फरिश्ता है, और नीच हो, तो शैतान। ये दोनो मानवी वृत्तियो ही के नाम है। —मानसरोवर--मुक्तिदान

मानव जीवन सग्राम कितना विकठ है, इसका अनुभव हुआ। इसे सग्राम कहना ही भ्रम है। संग्राम की उमग, उत्तेजना, वीरता और जय ध्वनि यहाँ कहाँ ? यह सग्राम नही, ठेलमठेल, धक्कापेल है। यहाँ चाहे धक्के खायँ, मगर तमाशा घुस कर देखे की दशा है। माशूक का वस्ल कहाँ, उसकी चौखट को चूमना, दरवान की गालियाँ खाना, और अपना सा मुँह लेकर चले आना। —मानसरोवर-दीक्षा

मित्रता

मित्रो से अपनी व्यथा कहते समय हम बहुधा अपना दु:ख बढाकर कहते है। जो बातें परदे की समझी जाती हैं, उनकी चर्चा करने से एक तरह का अपनापन जाहिर होता है। हमारे मित्र समझते है, हमसे जरा भी छुपाव नही रखता और उन्हे हमसे सहानुभूति हो जाती है। अपनापन दिखाने की यह आदत औरतो मे कुछ अधिक होती है। —गबन

मित्रो से जहाँ लेन-देन शुरू हुआ, वहाँ मन मुटाव होते देर नही लगती। —गबन

मैत्री परिस्थितियो का विचार नही करती। अगर यह विचार बना रहे, तो समझ लो मैत्री नही है। —गबन

मित्रता कानून की सीमाओ को अज्ञात रूप से विस्तृत कर देती है।

—प्रेमाश्रम

दोस्ती के लिए कोई अपना ईमान नही बेचता। पंच क दिल मे

खुदा वसता है। पचो के मूँह से जो बात निकलती है, वह खुदा की तरफ से निकलती है ।

—मानसरोवर-पंच परमेश्वर

जो अपना मित्र हो वह शत्रु का व्यवहार करे और गले पर छुरी फेरे इसे ससय के हेर-फेर के सिवा क्या कहे ? जिस पर पूरा भरोसा था, उसने समय पडने पर धोखा दिया। ऐसे ही अवसरो पर झूठे सच्चे मित्रो की परीक्षा को जाती है। यही कलयुग की दोस्ती है। अगर लोग कपटी और धोखेवाज न होते, तो देश मे आपत्तियो का प्रकोप क्यो होता ? यह हैजा प्लेग आदि व्याधियाँ दुष्कर्मों के ही दंड हैं।

—मानसरोवर-पंच परमेश्वर

एक सहृदय, सज्जन, विचारशील और सच्चरित्र पुरुष के साथ मित्र वनकर रहना उसकी स्त्री वन कर रहने से कम आनन्ददायक नही मालूम होता।

—रंगभूमि

कृतघ्नी मित्रो के सामने आदर्श और उपकार की वातचीत करना अपने को वेवकूफ वनाना है।

—सेवासदन

प्रत्येक प्राणी को अपने हमजोलियो के साथ हँसने बोलने की एक नैसर्गिक तृष्णा होती है।

—निर्मला

दोस्ती दोस्ती की जगह है ; किन्तु धर्म का पालन करना मुख्य है। ऐसे ही सत्यवादियो के वल पृथ्वी ठहरी है, नही तो वह कव की रसातल को चली जाती।

—मानसरोवर-पंच परमेश्वर

मिलन

मिलने-भेटने की प्रथा स्त्रियो के लिए है पुरुषों के लिए नहीं।

—रंगभूमि

सम्मिलन प्रेम को सजग कर देता है।

—रंगभूमि

वियोगियो के मिलन की रात बटोहियो के पडाव की रात है, जो बातो मे कट जाती है ।
—गबन

प्रेम-मिलन की आनन्दपूर्ण कल्पना के सामने शकाएँ निर्मूल हो जाती है ।
—सेवासदन

मूर्खता

जिसे संसार मे रहकर सासारिकता का ज्ञान न हो, वह मदबुद्धि है ।
—रगभूमि

कोई आदमी शेर पर पत्थर फेके, तो उसकी वीरता नही, उसका अभिमान भी नही, उसकी बुद्धि हीनता है । ऐसा प्राणी दया के योग्य है ; क्योकि जल्दी या देर मे वह शेर के मुँह का ग्रास बन जायेगा ।
—रंगभूमि

जो आदमी यह न समझे कि किस मौके पर कौन काम करना चाहिए, किस मौके पर कौन बात करनी चाहिए, वह पागल नही तो और क्या है ?
—रंगभूमि

बौडम देवताओ को कहा जाता है । जो स्वार्थ पर आत्मा की भेट कर देता है वह चतुर है, बुद्धिमान है । जो आत्मा के सामने सच्चे सिद्धात के सामने, सत्य के सामने, स्वार्थ की, निन्दा की परवाह नही करता, वह बौडम है, निर्बुद्धि है ।
—मानसरोवर-बौड़म

युवक और युवती

वास्तव मे किसी युवक को उपदेश करने का अधिकार नही है, चाहे उसकी कवित्व शक्ति कितनी ही विलक्षण हो। उपदेश करना सिद्ध पुरुषो का ही काम है। यह नही कि जिसे जरा तुक वन्दी आ गई, वह लगा शाति, संतोष और अहिंसा का पाठ पढाने। जो बात दूसरो को सिखलाना चाहते हो, वह पहले स्वय सीखले। —रंगभूमि

किसी युवक को सेवा कार्य करने को भेजना वैसे ही है जैसे किसी कच्चे वैद्य को रोगियो के कष्ट निवारण के लिए भेजना। —रगभूमि

युवको के प्रेम मे उद्विग्नता होती है, वृद्धो का प्रेम हृदय विदारक होता है। युवक जिससे प्रेम करता है, उससे प्रेम की आशा भी रखता है। अगर उसे प्रेम के बदले प्रेम न मिले, तो वह प्रेम को हृदय से निकाल कर फेक देगा। —कायाकल्प

युवको के प्रेम मे विकलता होती है और वृद्धो के प्रेम मे श्रद्धा। वे अपनी यौवन की कमी को खुशामद से, मीठी बातो मे और हाज़िर जवाब से पूर्ण करना चाहते है। —मानसरोवर-भूत

जवान वह है जो भोजन के उपरात फिर भोजन करे, ईंट पत्थर तक भक्षण करले। जो एक बार जलपान करके फिर कुछ नही खा जाता, जिसके लिए कुकडा बादी है, करेला गर्म, कटहल गरिष्ठ, उसे मैं बूढा ही समझता हूँ। —प्रेमाश्रम

युवावस्था मे एकान्त वास चरित्र के लिए बहुत ही हानि कारक है। खुली हवा मे चरित्र के भ्रष्ट होने की उससे कही कम सम्भावना है, जितना बद कमरे मे। बच्चे को कुसगत से जरूर बचाइए, मगर यह नही कि उसे घर से निकलने ही न दीजिए। —निर्मला

यौवन-काल जीवन का स्वर्ग है। बाल्यकाल मे यदि हम कल्पनाओ के राग गाते है, तो यौवन काल मे हम उन्ही कल्पनाओ का प्रत्यक्ष स्वरूप देखते है। और वृद्धावस्था मे उसी स्वरूप का स्वप्न। कल्पना अपगु होती है। स्वप्न मिथ्या, जीवन का सार केवल प्रत्यक्ष मे है। हमारी दैहिक और मानसिक शक्ति का विकास यौवन है। यदि समस्त ससार की सम्पदा एक ओर रख दी जाये, और यौवन दूसरी ओर, तो ऐसा कौन प्राणी है, जो उस विपुल धनराशि की ओर आँख उठाकर भी देखे। वास्तव मे यौवन ही जीवन का स्वर्ग है। —कायाकल्प

यौवन काल की दुर्वासनाएँ बडी प्रबल होती है। —सेवासदन

नई बीबी का आलिगन करके जवानी का मजा आ जाता है। रूठी हुई जवानी को मनाने का इससे अच्छा कोई उपाय नही कि नया विवाह हो जाये। —निर्मला

राजा और राज्यव्यवस्था

राज्य व्यवस्था का आधार न्याय नही, भय है। भय को आप निकाल दीजिए और सब राज्य विध्वंस हो जायेगा, फिर अर्जुन की वीरता और युधिष्ठिर का न्याय भी उसकी रक्षा नही कर सकता और दो सौ निर-पराधियो का जेल मे रहना राज्य न रहने से कही अच्छा है।—रगभमि

राजा की निगाह चारो ओर दौडनी चाहिए। अगर उसमे इतनी योग्यता नही, तो उसे राज्य करने का कोई अधिकार नही।

—कायाकल्प

दीन प्रजा के रूप से राज्य-तिलक लगाना किसी राजा के लिए मगल-कारी नही हो सकता। प्रजा का आशीर्वाद ही राज्य की सबसे बडी शक्ति है। —कायाकल्प

संसार मे जिस दिन राजाओ की जरूरत न रहेगी, उस दिन उनका अंत हो जायेगा। देश मे उसी की राज्य व्यवस्था होती है, जिसका अधिकार होता है। —कायाकल्प

राजा-रईस अपनी वासनाओ के सिवा किसी के गुलाम नही होते। वक्त की गुलामी उन्हे पसंद नही। वे किसी नियम को स्वेच्छा मे बाधा नही डालने देते। —कायाकल्प

राज्य पशु बल का ही प्रत्यक्ष रूप है। —कायाकल्प

राजा लोगों को जहाँ किसी बात की धुन सवार हो गई, फिर उसे पूरा किए बिना न मानेंगे, चाहे उनका राज्य ही क्यो न मिट जाये। —कायाकल्प

राजा लोग जिसे निकालते हैं, कोई न कोई दाग भी जरूर लगा देते है। —कायाकल्प

राजाओ की यह पुरानी नीति है कि प्रजा का मन मीठी मीठी बातो से भरे और अपने कर्मचारियो को मनमाने अत्याचार करने दें। वह राजा, जिसके कानो तक प्रजा की पुकार न पहुँचने पाये, आदर्शवादी नही कहा जा सकता है। —कायाकल्प

वर्तमान शासन-प्रथा इसी महत्त्व पूर्ण सिद्धान्त पर गठित है और घृणा तो किसी से करनी ही न चाहिए। हमारी आत्माएँ पवित्र है। उनसे घृणा करना परमात्मा से घृणा करने के समान है। —मानसरोवर-बैंक का दिवाला

राज्य उन्हे केवल दूसरो के कठोर हाथो से बचाता है। —मानसरोवर-बैंक का दिवाला

शासन का प्रधान कर्त्तव्य भीतर और बाहर की अशान्तिकारी शक्तियो से देश को बचाता है। शिक्षा, और चिकित्सा उद्योग और व्यवसाय गौण कर्तव्य हैं। —मानसरोवर-आदर्श विरोध

राज्य पद हमे स्वाधीन नही बनाते बल्कि हमारी आध्यात्मिक पराधीनता को और भी पुष्ट कर देते हैं। —मानसरोवर-आदर्श विरोध

के बाद पढी जाती हैं। —मानसरोवर-शिकार

रोगी करवट बदल कर आराम का अनुभव करता है।

—मानसरोवर-सुहाग का शव

रोग का निवारण मौत से नही दवा से होता है। —सेवासदन

रोगी को जब जीने की आशा नही रहती, तो औषधि छोड देता है।

—मानसरोवर-ममता

तमाखू पीना बुरा रोग है। एक बेर पकड़ ले, तो जिन्दगी भर नही छोडता। —गोदान

फालिज के भयकर रोग मे रोगी की सेवा करना आसान नही।

—मानसरोवर-स्त्री और पुरुष

लगन

धुन सूक्ष्म दर्शी नही होती। —रंगभूमि

जब हम किसी ख्याल मे होते है, तो न सामने की चीजें दिखाई देती हैं, न करीब की बाते सुनाई देती है। —रगभूमि

परिश्रम और लगन का पुरस्कार कौन दे सकता है ?

—मानसरोवर-डिमांसट्रेशन

मानव जीवन मे लाग बडे महत्त्व की वस्तु है। जिसमे लाग है, वह बूढा भी जवान है, जिसमे लाग नही, वह जवान भी मृतक है।

—मानसरोवर-सुजान भगत

लज्जा

लज्जा अत्यन्त निर्लज्ज होती है। अतिम काल मे भी, जब हम समझते है कि उसकी उल्टी साँसे चलती हैं, वह सहसा चैतन्य हो जाती है और पहले से भी अधिक कर्त्तव्य शील हो जाती है। हम दुरावस्था मे पड कर किसी मित्र से सहायता की याचना करने को घर से निकलते हैं; लेकिन मित्र से आँखे चार होते ही लज्जा हमारे सामने आकर खडी हो जाती है और हम इधर उधर की बाते करके लौट आते हैं। यहाँ तक कि हम एक शब्द भी ऐसा मुंह से नही निकालने देते, जिसका भाव हमारी अन्तर्वेदना का द्योतक हो। —रंगभूमि

जब हम अपनी भूल पर लज्जित होते है, तो यथार्थ बात आप ही आप मुँह से निकल पडती है। —रंगभूमि

दुश्मन की कैद से भागना लज्जा की बात नही। —रंगभूमि

जो अपने होश मे नही है, उसे किसी की लज्जा और संकोच नही होता।

लज्जा ने सदैव वीरो को परास्त किया है जो काल से भी नही डरते वे भी लज्जा के सामने खडे होने की हिम्मत नही करते। आग मे कूद-जाना, तलवार के सामने खडा हो जाना, इसकी अपेक्षा कही सहज है। लाज की रक्षा के लिए बडे बडे राज्य मिट गए हैं, रक्त की नदियां बह गई है, प्राणो की होली खेल डाली गई है। —गबन

ससार की लाज आंखो से दूर की जा सकती है; लेकिन मन से नहीं।

—सेवासदन

जो मनुष्य सदैव सर्व-सम्मानित रहा हो, जो सदा आत्माभिमान से सिर उठाकर चलता रहा हो, जिसकी सुकृति की सारे शहर मे चर्चा

वृद्धावस्था

बुढापा भरी हुई अभिलाषाओ की समाधि है, या पुराने पापो का पश्चात्ताप ।

—कायाकल्प

बूढे लोग बनाव श्रृंगार को भी संदेह की दृष्टि से देखते है ।

—सेवासदन

हमारी कर्मेन्द्रियाँ भले ही जर्जर हो जाएँ, वे चेष्टाएं तो वृद्ध नही होती । बुढापा भरी हुई अभिलाषाओ की समाधि है या पुराने पापो का पश्चात्ताप ।

—कायाकल्प

अपने संतान को विवाहित देखना बुढापे की सबसे बडी अभिलाषा है ।

—कर्मभूमि

बूढो की प्रकृति कुछ बच्चो ही सी होती है । बच्चो की भाँति उन्हे भी सेवा और भक्ति से ही अपना सकते हो ।

—कर्मभूमि

बूढो की बाते बहुधा वर्तमान सभ्य प्रथा के प्रतिकूल होती है । युवक गण इन बातो पर अधीर हो उठते है । उन्हे बूढो का यह अज्ञान अक्षम्य सा जान पड़ता है ।

—प्रेमाश्रम

वृद्धजनो का हृदय कुछ कोमल हुआ करता है ।

—प्रेमाश्रम

बुड्ढो का बुढमस हास्यास्पद वस्तु है और ऐसे बुड्ढो से अगर कुछ ऐंठ भी लिया जाये तो कोई दोष पाप नही ।

—गोदान

बूढो के लिए अतीत के सुखो और वर्तमान के दुःखो और भविष्य के सर्वनाश से ज्यादा मनोरजक और कोई प्रसंग नही होता ।

—गोदान

बुढापा बहुधा बचपन का पुनरागमन हुआ करता है ।

—बूढ़ी काकी

बुढापा तृष्णा रोग का अंतिम समय है, जब सम्पूर्ण इच्छाएँ एक ही केन्द्र पर आ लगती हैं। —मानसरोवर-बूढ़ी काकी

विधवा और परित्यक्ता

हम छोटे-छोटे कामो के लिए तजुर्बेकार आदमी खोजते है, मगर जिसके साथ हमे जीवन-यात्रा करनी है, उसमे तजुर्बे का होना ऐब समझते है! विपत्ति से बढकर तजुर्बा सिखाने वाला कोई विद्यालय आज तक नही खुला। जिसने इस विद्यालय मे डिग्री ले ली, उसके हाथो मे हम निश्चिन्त होकर जीवन की बागडोर दे सकते हैं। किसी रमणी का विधवा होना मेरी आंखो मे दोष नही, गुण है।

—मानसरोवर-धिक्कार

विधवा पर दोषारोपण करना कितना आसान है। जनता को उसके विषय मे नीची से नीची धारणा करते देर नही लगती। मानो कुवासना ही वैधव्य की स्वाभाविक वृत्ति है, मानो विधवा हो जाना, मन की सारी दुर्वासनाओ, सारी दुर्बलताओ, का उमड आना है। —प्रतिज्ञा

विधवा का जीवन तप का जीवन है। लोकमत इसके विपरीत कुछ नही देख सकता। —कर्मभूमि

वही पीडा, जो बाल विधवा सहती है और सहने मे अपना गौरव समझती है, परित्यक्ता के लिए असह्य हो जाती है। —कायाकल्प

कोई यातना इतनी दुस्सह, इतनी हृदय विदारक नही हो सकती जितना वैधव्य? और ये लोग जान बूझकर अपनी पुत्री को वैधव्य के अग्नि कुण्ड मे डाले देते हैं। —मानसरोवर-उद्धार

घर से निकली हुई त्रिया, थान से छूटी हुई घोडी है जिसका कुछ भरोसा नही। —मानसरोवर-निर्वासन

लेकिन संसार मे ऐसा कौन समाज है, जिसमे दुखी परिवार न हो और फिर हमेशा पुरुषो ही का दोष तो नही होता, बहुधा स्त्रियाँ ही विष की गाँठे होती हैं। मैं तो विवाह को सेवा और त्याग का व्रत समझती हूँ और इसी भाव से उसका अभिवादन करती हूँ।

—मानसरोवर-दो सखियाँ

वर्तमान वैवाहिक प्रथा व्यक्तियो की स्वाधीनता मे बाधक है। यह स्त्री व्रत और पतिव्रत्य का स्वाँग रच कर हमारी आत्मा को सकुचित कर देती है। हमारी बुद्धि के विकास मे जितनी रुकावट इस प्रथा ने डाली है उतनी और किसी भौतिक या दैनिक क्राति से भी नही हुई। इसने मिथ्या आदर्शों को हमारे सामने रख दिया और आज तक हम उन्ही पुरानी, सडी हुई, लज्जा जनक, पाशविक लकीरो को पीटते है। व्रत केवल एक निरर्थक बन्धन का नाम है। इतना महत्त्वपूर्ण नाम देकर हमने उसे कैद कर धार्मिक रूप दे दिया है। पुरुष क्यो चाहता है कि स्त्री उसको अपना ईश्वर, अपना सर्वस्व समझे ? केवल इसलिए कि वह उसका भरण पोपण करता है ? क्या स्त्री का कर्त्तव्य केवल पुरुप की सम्पत्ति के लिए वारिस पैदा करना है ? उस सम्पत्ति के लिए जिस पर हिन्दू नीति शास्त्र के अनुसार, पति के देहान्त के वाद उसका कोई अधिकार नही रहता। समाज की भारी व्यवस्था, सारा सगठन, सम्पत्ति रक्षा के आधार पर हुआ है। इसलिए मैं वैवाहिक प्रथा को सारी बुराइयो का मूल समझता हूँ।

—मानसरोवर-दो सखियाँ

विवाह आत्मविकास का साधन है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

विवाह का उद्देश्य यही और केवल यही है कि स्त्री और पुरुष एक दूसरे की आत्मोन्नति का मुख्य साधन है। जब अनुराग न रहा, तो विवाह भी न रहा। अनुराग के बिना विवाह का कोई अर्थ हो नही।

—मानसरोवर-दो सखियाँ

विवाह मे आत्मा ही सर्वोपरि है। मानसरोवर-दो सखियाँ

कन्या का विवाह सोलह वर्ष की आयु से पहले करना पाप है ।

—सेवासदन

पति चाहे जैसे हो, अपनी स्त्री को सुन्दर आभूषणो से, उत्तम वस्त्रो से सजावे, उसे स्वादिष्ट पदार्थ खिलावे । यदि उसमे यह सामर्थ्य नही है तो वह निखट्टू है, अपाहिज है, उसे विवाह करने का कोई अधिकार नही था, वह आदर और प्रेम के योग्य नही । —सेवासदन

विवाह एक धार्मिक व्रत है, एक आत्मिक प्रतिज्ञा है, जव हम गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करते है, जव हमारे पैरो मे धर्म की वेडी पडती है, जव हम सासारिक कर्त्तव्य के सामने अपने सिर को झुका देते है, जव जीवन का भार और उसकी चिन्ताएँ हमारे सिर पर पडती हैं, तो ऐसे पवित्र सस्कार के अवसर पर हमको गाम्भीर्य से काम लेना चाहिए । यह कितनी निर्दयता है कि जिस समय हमारा आत्मीय युवक ऐसा कठिन व्रत धारण कर रहा हो उस समय हम आनन्दोत्सव मनाने वैठे । वह इस गुरुतर भार से दवा जाता हो और हम नाच रग मे मस्त हो । अगर दुर्भाग्य से आजकल यही उल्टी प्रथा चल पड़ी है तो क्या यह आवश्यक है कि हम भी उसी लकीर पर चलें । —सेवासदन

विवाह समाज के सगठन की केवल आयोजना है । —प्रतिज्ञा

हृदय का मिलाप सच्चा विवाह है । सिन्दूर का टीका, ग्रन्थि वन्धन और भाँवर ये सब ससार के ढकोसले है । —वरदान

विवाह स्त्री पुरुष के अस्तित्व को सयुक्त कर देता है । उनकी आत्माएँ एक दूसरे से समाविष्ट हो जाती हैं । —प्रेमाश्रम

जिसे अपना-बनाया घर उजाडना हो—अपने प्यारे बच्चो की गर्दन पर छुरी फेरवानी हो, वह बच्चो के रहते हुए अपना दूसरा व्याह करे । ऐसा कभी नही देखा कि सौत के आने पर घर तवाह न हो गया हो । वही बाप जो बच्चो पर जान देता था, सौत के आते ही उन्ही बच्चो का दुश्मन हो जाता है—उसकी मति ही बदल जाती है । ऐसी देवी ने जन्म ही नही लिया, जिसने सौत के बच्चो को अपना समझा ।—निर्मला

विवाह तो आत्मा को और जीवन को पिंजरे मे बन्द कर देता है।

—गोदान

विवाह को मैं सामाजिक समझौता समझता हूँ और उसे तोडने का अधिकार न पुरुष को है न स्त्री को। समझौता करने के पहले आप स्वाधीन हैं, समझौता हो जाने के बाद आपके हाथ कट जाते है।

—गोदान

शादी से जीवन बन्धन मे पड जाता है, और बन्धन मे जीवन का पूरा विकास नही होता। बस जीवन का पूरा विकास इसी मे है कि दुनिया को लूटे जाओ और निर्द्वन्द्व विलास किए जाओ। —गोदान

प्रेम जब आत्म समर्पण का रूप लेता है, तभी ब्याह है, उसके पहले ऐयाशी है। —गोदान

युवतियाँ अब विवाह को पेशा नही बनाना चाहती। वह केवल प्रेम के आधार पर विवाह करेंगी। —गोदान

स्त्री किसी के गले बाँध दिए जाने से ही उसकी विवाहिता नही हो जाती। वही संयोग विवाह का पद पा सकता है जिसमे कम से कम एक बार तो हृदय प्रेम से पुलकित हो जाए।

—मानसरोवर-नरक का मार्ग

विवाह ही तो मुसीबतो की जड है। —मानसरोवर-उद्धार

विवाह भोली भाली कन्याओ का शिकार है, स्त्री का बलिदान है।

—मानसरोवर-नैराश्य लीला

जो विवाह-संस्कार को मिथ्या समझते हैं उनके विचार मे स्त्री-पुरुषो की अनुमति ही विवाह है, लेकिन भारतवर्ष मे कभी इन विचारो का आदर नही हुआ। —प्रेमाश्रम

जो विवाह को धर्म का बन्धन नही समझता है, उसे केवल वासना की तृप्ति का साधन समझता है, वह पशु है। —कर्मभूमि

लडकी के ब्याह मे पैसे का मुँह कोई नही देखता। —गबन

लडकी का बाप कुछ देकर ब्याहे और लडके का बाप कुछ लेकर

ब्याहे—यह बेचना नहीं तो और क्या है ? मगर लडके वालो के लिए लेना कोई बात नही है लडकी का बाप यदि कुछ लेकर लडकी दे, तो निन्दा की बात ही है । इसकी प्रथा नही है । —प्रतिज्ञा

एक जरा सा घर, कही बैठने की जगह नही, उस पर न कोई साज न सामान । विवाह हो जाने के बाद दूसरी बात हो जाती है । लड़की कितने ही बडे घराने की हो समझ लेती है, अब तो यही मेरा घर है, अच्छा हो या बुरा । दो चार दिन अपनी तकदीर को रोकर शात हो जाती है । ——कायाकल्प

विवाह एक प्रकार का समझौता है । दोनो पक्षो को अधिकार है, जब चाहे उसे तोड दे । मानसरोवर-सुहाग का शव

आदर्श समझौता वही है जो जीवन पर्यन्त रहे । मैं भारत की नही कहती । वहाँ तो स्त्री पुरुष की लौंडी है, मैं इग्लैंड की कहती हूँ । यहाँ भी कितनी ही औरतो से मेरी बातचीत हुई है । वे तलाको की बढती हुई सख्या को देखकर खुश नही होती । विवाह का सबसे ऊँचा आदर्श उसकी पवित्रता और स्थिरता है । पुरुषो ने सदैव इस आदर्श को तोडा है, स्त्रियो ने निभाया है । अब पुरुषो का अन्याय स्त्रियो को किस ओर ले जायगा, नही कहा जा सकता । —मानसरोवर-सुहाग का शव

विचार और मनोवृत्तियाँ

वृद्धवस्था मे मौन भाव प्रौढता के द्योतक होते हैं और युवावस्था मे भाव दारिद्रयका । —रगभूमि

अगर कोई प्राणी अच्छे कर्म करता है, और शुद्ध भावना रखता है तो वह उस मसीह के उस भक्त से कहीं श्रेष्ठ है जो मसीह का नाम तो जपता है, पर नीयत का खराब है । —रगभूमि

वृद्धावस्था बड़ी अभिनय शील होती है। —रंगभूमि

मनोवृत्ति वाणी को दूषित कर सकती है, पर अगो पर उसका ज़ोर नही चलता। जिह्वा चाहे निःशब्द हो जाय, पर आँखे बोलने लगती हैं। —रंगभूमि

शुभ मुहूर्त पर हमारी मनोवृत्तियाँ धार्मिक हो जाती है। —कायाकल्प

दुर्दिन मे मन के कोमल भावो का सर्वनाश हो जाता है और उनकी जगह कठोर एव पाशविक भाव जागृत हो जाते हैं। —कायाकल्प

लोकाचार और हृदय मे जमे हुए विचार हमारे जीवन मे आकस्मिक परिवर्तन नही होने देते। —सेवासदन

घर से निकलने की धमकी भयकर इरादो को पूरा कर देती है। —सेवासदन

विपत्ति मे हमारी मनोवृत्तियाँ बडी प्रबल हो जाती हैं। उस समय बेमुरौवती घोर अन्याय प्रतीत होती है और सहानुभूति असीम कृपा। —सेवासदन

किसी किसी समय जब हमारे सद्भाव पराजित हो जाते है, तब दुष्परिणाम का भय ही हमे कर्तव्यच्युत होने से बचा लेता है। —वरदान

महत्वाकाक्षा आँखो पर पर्दा डाल देती है। —मानसरोवर-माँ

विचार कितने ही स्वाधीन हो, पर जीती मक्खी नही निगली जा सकती है। —मानसरोवर-बहिष्कार

विचारो की स्वतन्त्रता विचार, सगीत और अनुभव पर निर्भर होती है। —सेवासदन

मनोवृत्ति का यह परिवर्तन ही हमारी असली विजय है। हमे किसी से लड़ाई करने की जरूरत नही, हमारा उद्देश्य केवल जनता की सहानुभूति प्राप्त करना है, उसकी मनोवृत्तियो को बदल देना है। जिस दिन

हम इस लक्ष्य पर पहुँच जायेंगे, उसी दिन स्वराज्य सूर्य उदय होगा।

—मानसरोवर-जुलूस

हमारे मनोभाव पूर्व विचारो के आधीन नही होते, हम उनको प्रकट करने के निमित्त कैसे कैसे शब्द गढ़ते हैं; परन्तु समय पर शब्द हमें धोखा दे जाते हैं और वे ही भावनाये स्वाभाविक रूप में प्रकट होती हैं।

—मानसरोवर-विमाता

मनोवृत्तियां सुगन्ध के समान हैं जो छिपाने से नही छिपती।

—मानसरोवर-हार की जीत

जहाँ भावो का सम्बन्ध है वहाँ तर्क और न्याय से काम नही चलता।

—मानसरोवर-निर्वासित

विश्वास और प्रभाव

वेसब्री से गरजमद चौकन्ना हो जाता है। समझता है शायद हमें वेवकूफ बना रही है। जितनी ही देर लगाओ, जितनी ही वेरुखी से काम लो, उतना ही ऐतबार बढता है।

—रंगभूमि

जिस तरह कसाई बकरे को सिर्फ उसके वजन के ऐतबार से देखता है, उसी तरह हम इन्सान को महज इस ऐतबार से देखते हैं कि कहाँ तक आंख का अंधा और गांठ का पूरा है।

—प्रेमाश्रम

सबूत की जरूरत उन्हे होती है, जिन्हें यकीन न हो। जो कुछ बदले मे चाहते हो।

—कर्मभूमि

हम अपने ऊपर विश्वास करने वालो को कभी निराश नहीं करना चाहते और ऐसे बोझो को उठाने को तैयार हो जाते हैं, जिन्हें हम असाध्य समझते थे। विश्वास से विश्वास उत्पन्न होता है। —सेवासदन

विश्वास से विश्वास उत्पन्न होता है और अविश्वास से अविश्वास।

यह प्राकृतिक नियम है। जिस मनुष्य को आप शुरू से ही धूर्त, कपटी, दुर्जन समझ लेगे, वह कभी आपसे निष्कपट व्यवहार न करेगा। वह एकाएक आपको नीचा दिखाने का यत्न करेगा। इसके विपरीत आप एक चोर पर भी भरोसा करें तो वह आपका दास हो जायगा। सारे संसार को लूटे; परन्तु आपको धोखा न देगा। वह कितना ही कुकर्मी, अधर्मी क्यो न हो; पर आप उसके गले मे विश्वास की जजीर डालकर उसे जिस ओर चाहे ले जा सकते है। यहाँ तक कि वह आपके हाथो पुण्यात्मा भी बन सकता है। —मानसरोवर-बैंक का दिवाला

जैसे परती भूमि मे बीज का असाधारण विकास और प्रचार होता है, उसी तरह विश्वास हीन हृदय मे जब विश्वास का बीज पड़ता है तो उसमे सजीवता और विकास का प्रादुर्भाव होता है।

विश्वासघात

विष किसी नीयत से खाया जाय, विष ही का काम करेगा, कभी अमृत नही हो सकता। विश्वासघात विष से कम घातक नही होता।

—रंगभूमि

लेनदेन के मामले मे वादा पूरा न करना विश्वास घात है।

—मानसरोवर-बैंक का दिवाला

पेड की डालियो पर बैठी शुक-मडली मे यह प्रश्न छिडा हुआ था कि मनुष्यो को उन्हे बेमुरौवत कहने का क्या अधिकार है, जब उन्हे स्वयं अपने मित्रो से दग़ा करने मे भी सकोच नही होता।

—मानसरोवर-पंच परमेश्वर

कपट कपट से ही पैदा होता है। —रंगभूमि

ग़ैरो से चालें चलना अक्षम्य समझा जाता है, लेकिन ऐसे स्वार्थ के

भक्त कम मिलेंगे, जो मित्रो से दग़ा करें । सरल प्राणियो के सामने कपट भी लज्जित हो जाता है । —रंगभूमि

वीर

अगर कोई आदमी अपने बुरे आचरण पर लज्जित होकर सत्य का उद्घाटन करे, छल और कपट का आवरण हटा दे, तो वह सज्जन है, उसके साहस की जितनी प्रशसा की जाय, कम; मगर शर्त यही है कि वह अपनी गोष्ठी के साथ किये का फल भोगने को तैयार रहे, हँसता-खेलता फाँसी पर चढ जाय । वही सच्चा वीर है । लेकिन अपने प्राणो की रक्षा के लिए स्वार्थ के नीच विचार से, दड की कठोरता से भयभीत होकर अपने साथियो से दगा कर, आस्तीन का साँप वन जाय, तो वह कायर है, पतित है, वेहया है विश्वासघात डाकुओ और समाज के शत्रुओ में भी, उतना ही हेय है जितना किसी अन्य क्षेत्र मे । ऐसे प्राणी को समाज कभी क्षमा नही करता, कभी नही । —गवन

कोई दिलेर आदमी वेरहम नही हो सकता ।

—मानसरोवर-दिल की रानी

दूसरो के वल पर वाहवाही लेना आसान है । वहादुर वह है, जो अपने वल पर काम करे । —मानसरोवर-सुभागी

वीरात्माएँ सत्कार्य मे विरोध की परवाह नही करती और अन्त मे उस पर विजय ही पाती है । —कायाकल्प

विचार से काम लेना कायरो का काम है । —कायाकल्प

एक गरीव, वेकस जानवर को मारना वहादुरी नही । खुदा वेकसो के खून से खुश नही होता । —कायाकल्प

वीरता ही मनुष्य का सवसे उज्ज्वल गुण है । —कायाकल्प

मार्ग पर जा रही हैं, तृष्णा ने उनकी आत्माओ को निर्बल, निश्चेष्ट बना दिया है।

—सेवासदन

वैराग्य और त्याग

जब तक हम वैरागी न होगे, दुःख से नही बच सकते।

—रंगभूमि

वरागी होने के लिए भभूत लगाने और भीख माँगने की आवश्यकता नही। हमारे महात्माओ ने तो भभूत लगाने और जटा बढाने को पाखड बताया है। वैराग तो मन से होता है। ससार मे रहे, पर ससार का होकर न रहे, इसी को वैराग्य कहते है। —रगभूमि

नैराश्य की अतिम अवस्था विरक्ति होती है। —रंगभूमि

जब आदमी को कोई आशा नही रहती, तो वह मर जाना चाहता है। यह विराग नही है। विराग ज्ञान से होता है, और उस दशा मे किसी को घर से निकल भागने की जरूरत नही होती। —कायाकल्प

निर्बल क्रोध ही तो वैराग्य है। —कायाकल्प

बडे बडे त्यागी देखे है; लेकिन जो पेट भर कर रोया नही, उसे फिर हँसते नही देखा। —कायाकल्प

जिस प्रकार वायु का झोका सुलगती हुई आग को दहका देता है। उसी प्रकार बहुधा हृदय मे दबे हुए उत्साह को भडकाने के लिए किसी बाह्य उपयोग की आवश्यकता होती है। अपने दुःखो का अनुभव और दूसरो की आपत्ति का दृश्य बहुधा वह वैराग्य उत्पन्न करता है जो सत्संग अध्ययन और मन की प्रवृत्ति से सम्भव नही। —वरदान

त्याग ही वह शक्ति है, जो हृदय पर विजय पा सकती है।

—प्रतिज्ञा

व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं। एक वह जो त्याग मे आनन्द मनाते हैं, जिनकी आत्मा को त्याग मे सन्तोष और पूर्णता का अनुभव होता है। जिनके त्याग में उदारता और सौजन्य है। दूसरे वह जो दिल जले त्यागी होते हैं, जिनका त्याग अपनी परिस्थतियो से विद्रोह मात्र है, जो अपने न्याय पथ पर चलने का तखस संसार से लेते हैं, जो खुद जलते हैं इस लिए दूसरो को भी जलाते हैं। —रंगभूमि

त्याग और भोग मे दिशाओ का अन्तर है। —कायाकल्प

विश्व प्रेम के साम्राज्य मे त्याज्य कोई वस्तु नही है। —कायाकल्प

आत्मानुराग मे निमग्न वैरागी तो वन मे रह सकता है, परन्तु एक स्त्री जिसकी अवस्था हँसने खेलने मे व्यतीत हुई हो, बिना किसी नौका के सहारे विराग सागर को किस प्रकार पार करने मे समर्थ हो सकती है।

—मानसरोवर-विस्मृति

शिक्षा

शिक्षा धूर्तों की स्रष्टा है, प्रकृति सत्पुरुषो की। —रंगभूमि

विधान के साथ जीवन का आदर्श कुछ ऊँचा न हुआ तो पढना व्यर्थ है। —कायाकल्प

सारा देश गुलामी की वेड़ियो मे जकडा हुआ है, फिर भी हम अपने भाइयो की गर्दन पर छुरी फेरने से बाज नही आते। इतनी दुर्दशा पर भी आँखे नही खुलती। जिनसे लडना चाहिए, उनके तो तलवे चाटते हैं और जिनसे गले मिलना चाहिए, उनकी गर्दन दवाते हैं। और यह सारा जुल्म हमारे पढे लिखे भाई ही कर रहे हैं। जिसे कोई अख्तियार मिल गया, वह फौरन दूसरो को पीस कर पी जाने की फिक्र करने लगता है। विद्या से ही विवेक होता है, पर जव रोगी असध्य हो जाता है, दवा भी

उस पर विष का काम करती है । हमारी शिक्षा ने हमें पशु बना दिया है । —कायाकल्प

दरिद्र से दरिद्र हिन्दुस्तानी मजदूर भी शिक्षा के उपकारो का कायल है । उसके मन मे यह अभिलाषा होती है कि मेरा बच्चा चार अक्षर पढ जाय । इसलिए नही कि उसे कोई अधिकार मिलेगा, बल्कि केवल इसलिए कि विद्या मानवी शील का एक श्रृंगार है ।

—मानसरोवर-प्रेरणा

शिक्षा का कम से कम इतना प्रभाव तो होना चाहिए कि धार्मिक विषयो मे हम मूर्खों की प्रसन्नता को प्रधान न समझें । —सेवासदन

वकीलो की सूक्ष्म आलोचनाओ के तत्वो को समझना इतना कठिन नही है जितना किसी निरुत्साही लडके के मन मे शिक्षा रुचि उत्पन्न करना है । —वरदान

कभी कभी उन लोगो से शिक्षा मिलती है, जिन्हे हम अभिमान वश अज्ञानी समझते है । —सेवासदन

युवको की शिक्षा का भार केवल आदर्श चरित्रो पर रखना चाहिए। विलास में रत, शौकीन, कालेजो के प्रोफेसर विद्यार्थियो पर कोई अच्छा असर नही डाल सकते । —मानसरोवर-विश्वास

विद्या का धर्म है—आत्मिक उन्नति । शिक्षा का फल उदारता, त्याग, सदिच्छा, सहानुभूति, न्यायपरता और दयाशीलता है । जो शिक्षा हमे निर्बलो को सताने के लिए तैयार करे, जो हमे धरती और धन का गुलाम बनाये, जो हमें भोग विलास मे डुबाये, जो हमे दूसरो का रक्त पीकर मोटा होने का इच्छुक बनाये, वह शिक्षा नही भ्रष्टता है । अगर मूर्ख, लोभ और मोह के पजे मे फँस जाए तो वह क्षम्य है । परन्तु विद्या और सभ्यता के उपासको की स्वार्थान्धता अत्यन्त लज्जाजनक है । हमने विद्या और बुद्धि बल को विभूति शिखर पर चढने का मार्ग बना लिया । वास्तव मे वह सेवा और प्रेम का साधन था । कितनी विचित्र दशा है कि जितना ही बड़ा विद्वान है, वह उतना ही बड़ा स्वार्थ सेवी है । बस, हमारी सारी

विद्या और बुद्धि, हमारा उत्साह और अनुराग, धन लिप्सा मे ग्रसित है।
—मानसरोवर-पशु से मानव

समस्त शिक्षित समुदाय राष्ट्रीयता पर जान देता है, किन्तु कोई स्वप्न मे भी कल्पना नही करता कि हम मजदूरो या सेवा-वृत्ति धारियो को समता का स्थान देगे। —मानसरोवर-ब्रह्म का स्वाँग

हमारी ध्वनि केवल मुट्ठी भर शिक्षित वर्ग ही की नही, वरन् समस्त जाति की संयुक्त ध्वनि है। —मानसरोवर-ब्रह्म का स्वाँग

विद्या का प्रचार होने से प्राय. सभी प्राणी कुछ न कुछ उदार हो जाते हैं। —कायाकल्प

विद्या ही से विवेक होता है। —कायाकल्प

विद्या का फल तो यह होना चाहिए कि मनुष्य मे धैर्य और सन्तोष का विकास हो, ममत्व का दमन हो, हृदय उदार हो, न कि स्वार्थपरता, क्षुद्रता और शीलहीनता का भूत सिर चढ जाय। —प्रेमाश्रम

जीवन को सफल बनाने के लिए शिक्षा की जरूरत है डिग्री की नही। हमारी डिग्री है—हमारा सेवाभाव, हमारी नम्रता, हमारे जीवन की सरलता। अगर यह डिग्री नही मिली, अगर हमारी आत्मा जागरित न हुई, तो कागज की डिगी व्यर्थ है। —कर्मभूमि

अंग्रेजी शिक्षा ने ऐसा पद दलित किया है कि जब तक यूरोप का कोई विद्वान किसी विषय के गुण दोष प्रगट न करे तब तक आप उस विषय की ओर उदासीन रहते हैं। आप उपनिषदो का आदर इसलिए नही करते कि वह स्वयं आदरणीय है बल्कि इसलिए करते हैं कि ब्लावेट्स्की और मैक्समूलर ने उनका आदर किया है। यह मानसिक गुलामी उस भौतिक गुलामी से कही गई गुजरी है। आप उपनिषदो को अंग्रेजी मे पढते हैं, गीता को जर्मन मे, अर्जुन को अर्जुना, कृष्ण को कृष्णा। [illegible] स्वभाषा ज्ञान का परिचय देते हैं। आपने इसी मानसिक दासता के कारण उस क्षेत्र मे अपनी पराजय स्वीकार कर ली, जहाँ हम [illegible]

प्रतिभा और प्रचण्डता से चिरकाल तक अपनी विजय पताका फहरा सकते थे।

—सेवासदन

शराफ़त

शराफत रोग है, और कुछ नही। —रंगभूमि

शराफत ठाट बाट बढाने मे नही है, अपनी आबरू बनाने मे है।

—रंगभूमि

सज्जनता और भलमनसी आदि ऊपर की बाते है, दिल से नही जबान से कही जाती हैं। स्वार्थ दिल की गहराइयो मे बैठा होता है। वही गम्भीर विचार का विषय है। —मानसरोवर-जुलूस

शहर और गाँव

शहर अमीरो के रहने और क्रय-विक्रय का स्थान है। उसके बाहर की भूमि उनके मनोरंजन और विनोद की जगह है। उसके मध्यभाग मे उनके लडको की पाठशालएँ और उनके मुकदमेबाजी के अखाडे होते हैं, जहाँ न्याय के बहाने गरीबो का गला घोटा जाता है। शहर के आसपास गरीबो की बस्तियाँ होती हैं। वहाँ न शहरी दीपको की ज्योति पहुँचती है न शहरी छिडकाव के छीटे, न शहरी जल-स्रोतो का प्रवाह।

—रंगभूमि

शहर मे कोई बुड्ढा तो होता ही नही। जवान लडके होते है और बुड्ढे जवान, उनकी जवानी सदा बहार होती है। वही हँसी दिल्लगी,

वही तेल-फुलेल का शौक। जवान ही रहते हैं और जवान ही मर जाते हैं। —सेवासदन

शोक और हर्ष

शोक की सीमा कंठावरोध है, पर शुष्क और दाहयुक्त, आनन्द की सीमा भी कठावरोध है, पर आर्द्र और शीतल। —रगभूमि

निज पुत्र की मृत्यु का शोक जाति पर पडने वाली विपत्ति से कही अधिक होता है। निज शोक मर्मातक होता है, जाति शोक निराशाजनक, निज शोक पर हम रोते है, जाति शोक पर चिन्तित हो जाते हैं।

—रगभूमि

जो रोने के लिए वनाया गया हो, उसे हँसाने की चेष्टा करना व्यर्थ है। —कायाकल्प

आनन्द के दिन पवन की भाँति सन्न से निकल जाते है और पता भी नही चलता। वे दुर्भाग्य के दिन और विपत्ति की रातें है, जो काटे नही कटती। —वरदान

विपत्ति मे शोक और भी दुस्सह हो जाता है। —प्रेमाश्रम

मृदुल हास्य और तोतले शब्दो का आनन्द उठाने के वाद एकान्त-वास असह्य प्रतीत होता है। —कायाकल्प

सत्य और मिथ्या

सच्चे खिलाडी कभी रोते नही, बाजी पर बाजी हारते हैं, चोट पर चोट खाते हैं, धक्के पर धक्के सहते हैं, पर मैदान मे डटे रहते हैं, उनकी त्योरियो पर बल नही पडते। हिम्मत उनका साथ नही छोडती, दिल पर मालिन्य के छीटे भी नही आते, न किसी से जलते है, न चिढते हैं, खेल में रोना कैसा? खेल हँसने के लिए, दिल बहलाने के लिए है, रोने के लिए नही। —रगभूमि

नेकनाम रहना अच्छी बात है, किन्तु नेकनामी के लिए सच्ची बातो में दबना अपनी आत्मा की हत्या करना है। —रगभूमि

सच्ची बात विश्वासोत्पादक होती है। —रंगभूमि

सत्य के मित्र कम होते है। —रगभूमि

सच्चाई आप ही अपना इनाम है। —कायाकल्प

सत्य से आत्मा भी बलवान हो जाती है। —कायाकल्प

सच्चे आदमी को हम धोखा नही दे सकते। उसकी सच्चाई हमारे हृदय मे उच्च भावो को जागृत कर देती है। —सेवासदन

परोपकार के लिए असत्य क्षम्य है। —कायाकल्प

मिथ्या दूरदर्शी नही होती। —गबन

नन्हे-नन्हे हाथो से समुद्र के प्रवाह को रोकने वाले साहस का एक ही स्रोत हो सकता है और वह सत्य पर अटल विश्वास।

—मानसरोवर-दिल की रानी

जो सच्चा है, वह चमार भी हो तो आदर के योग्य है; जो दगाबाज, झूठा लम्पट हो, वह ब्राह्मण भी हो तो आदर के योग्य नही।

—कर्मभूमि

सत्यवादी मनुष्य पर कोई विपत्ति पडती है, तो लोग उसके साथ सहानुभूति करते हैं। दुष्टो की विपत्ति लोगो के लिए व्यंग्य की सामग्री बन जाती है। उस अवस्था मे ईश्वर अन्यायी ठहराया जाता है; ·· मगर दुष्टो की विपत्ति ईश्वर के न्याय को सिद्ध कर देती है।

—मानसरोवर-ईश्वरीय न्याय

सत्य पर विश्वास रखना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है। जिस मनुष्य के चित्त से विश्वास जाता रहता है, उसे मृतक समझना चाहिए।

—मानसरोवर-बैंक का दिवाला

सत्य की एक चिंगारी असत्य के पहाड़ को भस्म कर सकती है।

—गोदान

सत्य चाहे सिर कटा दे; लेकिन कदम पीछे नही हटाता।

—मानसरोवर-सच्चाई का उपहार

सच्चा आदमी एक मुलाकात मे ही जीवन को बदल सकता है, आत्मा को जगा सकता है और अज्ञान को मिटाकर प्रकाश की ज्योति फैला सकता है।

—मानसरोवर-विश्वास

तलवार का मुंह ताकने वाला सत्य ही मिथ्या है। —मानसरोवर

स्त्री-शिक्षा और सहशिक्षा

जब तक स्त्रियो की शिक्षा का काफी प्रचार न होगा, हमारा कभी उद्धार न होगा।

—गबन

जहाँ लडके और लडकियां एक साथ शिक्षा पाते है, वहाँ जाति-भेद बहुत महत्व की वस्तु नही रह जाता। आपस मे स्नेह सहानुभूति की इतनी बातें पैदा हो जाती हैं कि कामुकता का अंश बहुत थोडा रह जाता

है। यह समझ लीजिए कि जिस देश मे स्त्रियों को जितनी अधिक स्वाधीनता है, वह देश उतना ही सभ्य है। स्त्रियो को कैद मे, परदे मे, या पुरुष से कोसो दूर रखने का तात्पर्य यही निकलता है कि आपके यहाँ जनता इतनी आचार-भ्रष्ट है कि स्त्रियो का अपमान करने मे जरा भी संकोच नही करती। युवको के लिए राजनीति, धर्म, ललित कला, साहित्य, दर्शन इतिहास, विज्ञान और हजारो ही ऐसे विषय है, जिनके आधार पर वे युवतियो से गहरी दोस्ती पैदा कर सकते हैं। कामलिप्सा उन देशो के लिए आकर्षण का प्रधान विषय है, जहाँ लोगो की मनोवृत्तियाँ संकुचित रहती हैं। —गबन

जब तक हम स्त्री-पुरुषो को अबाध रूप से अपना मानसिक विकास न करने देगे, हम अवनति की ओर खिसकते चले जायेगे। बन्धनो से समाज का पैर न बाँधिए, उनके गले में कैद की जंजीर न डालिए।

स्नेह और ममता

घर वालो का स्नेह डाक्टर की दवाओ से कही ज्यादा लाभदायक होता है। —रंगभूमि

बालक माता के सामने रोए, हठ करे, मचले; या माता की ममता क्षण मात्र भी कम नही होती। —रंगभूमि

ग्रामीण जीवन मे एक प्रकार की ममता होती है जो नागरिक जीवन मे नही पाई जाती एक प्रकार का स्नेह बंधन होता है, जो सब प्राणियों को, चाहे छोटे हो या बडे, बांधे रहता है। —सेवासदन

संसार के सारे नाते स्नेह के नाते है। जहाँ स्नेह नही वहाँ कुछ नही। —निर्मला

पारस्परिक स्नेह और सहृदयता भी ग्राम्य जीवन का एक शुभ

लक्षण है। —प्रेमाश्रम

मुरौवत मुरौवत की तरह की जाती है, अपना घर उठा कर नही दिया जाता। —गोदान

मोह तो उन अनाथो को छोड जाने मे है, जिनके साथ हम अपना कर्त्तव्य न निभा सके; उन अधूरे मनसूबो मे है, जिन्हे हम पूरा न कर सके। —गोदान

स्मृति

मधुर स्मृति किसी स्वर्गीय सगीत की भाँति जीवन के तार तार मे व्याप्त रहती है। —मानसरोवर दो सखियाँ

मरने वाले की याद रुलाने के लिए काफी है। —निर्मला

जव हम विज्ञान द्वारा मन के गुप्त रहस्य जान सकते है, तो क्या अपने पूर्व सस्कार न जान सकेगे। केवल स्मृति को जगा देने ही से पूर्व जन्म का ज्ञान हो जाता है। —कायाकल्प

अतीत मोह दुःखद ही क्यो न हो, उसकी स्मृतियाँ मधुर होती हैं।
—मानसरोवर-धिक्कार

स्वभाव

हम जव किसी तेज सड़क पर चलते है, तो हमे सवारियो का आना जाना बहुत ही कष्टदायक जान पडता है। जी चाहता है कि इन रास्तो पर सवारियो के आने की रोक होनी चाहिए। हमारा अख्तियार होता,

मनुष्य का हृदय कितना काला, धूर्त, लोभी और स्वार्थान्ध होता है कि अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए किसी की जान, किसी की आबरू की भी परवाह नही करता है। —प्रेमाश्रम

जिसे देखिए स्वार्थ मे मग्न है। जो जितना ही महान है, उसका स्वार्थ भी उतना ही महान है। —कर्मभूमि

स्वार्थ की माया अत्यन्त प्रबल है। —मानसरोवर-अनुभव

गरज के बावले मनुष्य देखकर भी अनदेखी कर जाते हैं।

—सेवासदन

दया, सहृदयता और प्रेम ये सब मानवीय भाव है, जिनका कर्त्ता मनुष्य है। प्रकृति ने हमको केवल एक भाव प्रदान किया है और वह स्वार्थ है। मानवीय भाव बहुधा कपटी मित्रो की भाँति हमारा साथ छोड़ देते है, पर यह ईश्वर प्रदत्त गुण कभी हमारा गला नही छोडता।

—मानसरोवर-खून सफेद

हर जगह ऐसे ओछे लोग रहते हैं, जिन्हे दूसरो को नीचा दिखाने मे ही आनन्द आता है। —मानसरोवर-गरीब की हाय

जब कोई पुरुष हमारे साथ अकारण मित्रता का व्यवहार करने लगे तो हमको सोचना चाहिए कि इसमे उसका कोई स्वार्थ तो नही छिपा है। यदि हम अपने सीधेपन से इस भ्रम मे पड जाये कि कोई मनुष्य हमको केवल अनुगृहीत करने के लिए, हमारी सहायता करने पर तत्पर है तो हमे धोखा खाना पडेगा; किन्तु अपने स्वार्थ की धुन मे ये मोटी-मोटी बातें भी हमारी निगाहो से छिप जाती है और छल अपने रँगे हुए भेष मे आकर हमको सर्वदा के लिए परस्पर व्यवहार का उपदेश देता है। —मानसरोवर-विस्मृति

संकोच

प्रेममय आग्रह संकोच का लंगर उखाड़ फेंकता है। —रंगभूमि

कतिपय मनुष्यो को अपनी प्रशंसा सुनने से जितना संकोच होता है, उतना ही किसी दूसरे की प्रशसा करने से होता है —रंगभूमि

जो मनुष्य इतना विचारहीन हो कि अपनी स्त्री को त्याग दे, मिथ्या सिद्धान्त प्रेम के घमंड मे विरादरी का अपमान करे, अपनी असाधुता को प्रजा भक्ति का रंग देकर भाई की गर्दन पर छुरी चलाने में संकोच न करे, उससे धार्मिक विषय मे पूछना व्यर्थ है। —प्रेमाश्रम

पराई स्त्री को घूरने मे किसी मर्द को संकोच नहीं होता।

—निर्मला

हम मोह और संकोच में पड़ कर अपने जीवन के सुख और शांति का होम कर देते हैं। —गबन

संगीत और नृत्य

गाना ऐसा होना चाहिए कि दिल पर असर पड़े। जिस गाने मे मन मे भक्ति, वैराग्य, प्रेम और आनन्द की तरंगे न उठें, वह गाना नही है।

—कायाकल्प

सच्चे अनुराग और हार्दिक वेदना के बिना गाने में असर और विरक्ति असम्भव है।

—प्रेमाश्रम

संगीत के आनन्द मे विस्मृति है: पर वह विस्मृति कितनी स्मृतिमय

होती है; अतीत को जीवन और प्रकाश से रंजित करके प्रत्यक्ष करने की शक्ति संगीत के सिवा और कहाँ है। —मानसरोवर-कामनातरु

सुरम्य संगीत रात की नीरवता मे ही सुनाई देता है।

—मानसरोवर-कामनावरु

नृत्य ही अनुराग की चरम सीमा है। —कायाकल्प

संगीत से हृदय में पवित्र भाव पैदा होते हैं। जब से गाने का प्रचार कम हुआ हम लोग भाव शून्य हो गये और इसका सबसे बडा असर हमारे साहित्य पर पडा है। कितने शोक की बात है जिस देश मे रामायण जैसे अमूल्य ग्रन्थ की रचना हुई, सूरसागर जैसा आनन्द मय काव्य रचा गया, उसी देश मे अब साधारण उपन्यासो के लिए हमे अनुवाद का आश्रय लेना पडता है। महाराष्ट्र और बंगाल मे अभी गाने का कुछ प्रचार है, इस लिए वहाँ भावो का ऐसा शैथिल्य नही है, वहाँ रचना और कल्पना शक्ति का ऐसा अभाव नही है। —सेवासदन

सम्पादक

आप सम्पादको के कर्त्तव्य को नही मानते। हम पब्लिक के सामने अपना दिल खोलकर रखना अपना धर्म समझते हैं। अपने मनोभावो को गुप्त रखना हमारे नीति शास्त्र मे पाप है। हम न किसी के मित्र हैं न किसी के शत्रु, हम अपने जन्म के मित्रो को एक क्षण मे त्याग देते हैं और जन्म के शत्रुओ से एक क्षण मे गले मिल जाते हैं। हम सार्वजनिक विषय मे किसी को क्षमा नही करते; इसलिए कि हमारे क्षमा करने से उनका प्रभाव और भी हानिकारक हो जाता है। ——सेवासदन

पत्र-सम्पादक अपनी शाति कुटी मे बैठा हुआ कितनी धृष्टता और स्वतन्त्रता के साथ अपनी प्रबल लेखनी से मन्त्रि-मडल पर आक्रमण करता

है, परन्तु ऐसे अवसर आते है; जब वह स्वयं मंत्रि-मंडल मे सम्मिलित होता है। मडल के भवन मे पग धरते ही उसकी लेखनी कितनी मर्मज्ञ, कितनी विचार शील, कितनी न्याय परायण हो जाती है, इसका कारण उत्तरदायित्व का ज्ञान है। —मानसरोवर-पंच परमेश्वर

सम्पादक का जीवन एक दीर्घ विलाप है, जिसे सुनकर लोग दया करने के बदले कानो पर हाथ रख लेते हैं। बेचारा न अपना उपकार कर सके न औरो का। पब्लिक उससे आशा तो यह रखती है कि हर एक आन्दोलन मे वह सबसे आगे रहे, जेल जाय, मार खाय, घर के माल असबाब की कुर्की कराये, यह उसका धर्म समझा जाता है, लेकिन उसकी कठिनाइयो की ओर किसी का ध्यान नही हो तो वह सब कुछ। उसे हर एक विचार, हर एक कला मे पारगत होना चाहिए, लेकिन उसे जीवित रहने का अधिकार नही। ——गोदान

कर्त्तव्य के आगे व्यक्ति कोई चीज नही। सम्पादक अगर अपना कर्त्तव्य न पूरा कर सके, तो उसे इस आसन पर बैठने का कोई हक नही है। —गोदान

एक सम्पादक की सबसे शानदार मौत यही है कि वह न्याय और सत्य की रक्षा करता हुआ अपना बलिदान करदे। —गोदान

पत्र का सम्पादक परम्परागत नियमो के अनुसार जाति का सेवक है। वह जो कुछ देखता है, जाति को विराट दृष्टि से देखता है। वह जो विचार करता है, उसपर भी जातीयता की छाप लगी होती है। नित्य के विस्तृत विचार क्षेत्र मे विचरण करते रहने से व्यक्ति का महत्त्व उसकी दृष्टि मे अत्यन्त सकीर्ण हो जाता है, वह व्यक्ति को क्षुद्र, तुच्छ, नगण्य कहने लगता है। व्यक्ति को जाति पर बलि देना उसकी नीति का प्रथम अंग है। यहां तक कि वह बहुधा अपने स्वार्थ को भी जाति पर वार देता है। उसके जीवन का लक्ष्य महान् आत्माओ का अनुगामी होना है जिन्होने राष्ट्रों का निर्माण किया है, उनकी कीर्ति अमर हो गई है, जो दलित राष्ट्रो की उद्धारक हो गई है। वह [illegible] कोई काम ऐसा नहीं कर

सकता, जिससे उसके पूर्वजो की उज्जवल विरदावली मे कालिमा लगने का भय हो।

—मानसरोवर-डिक्री के रुपये

सम्पादक लोग अपने ग्राहक बढाने के लिए इस प्रकार कोई न कोई फुलझडी छोड़ते रहते हैं। ऐसे आक्षेप पूर्ण लेखो से पत्रो की बिक्री बढ जाती है, जनता को ऐसे झगड़ो में आनन्द प्राप्त होता है और सम्पादक लोग अपने महत्त्व को भूल कर जनता के इस विवाद प्रेम से लाभ उठाने लगते है। गुरुपद को छोडकर जनता के कलह-प्रेम का आवाहन करने लगते है। कोई कोई सम्पादक तो यहाँ तक कहते हैं कि अपने ग्राहको को प्रसन्न रखना हमारा कर्त्तव्य है। हम उनका खाते हैं तो उन्ही का गायेगे।

—सेवासदन

संतान

पुत्र रत्न के सामने संसार की सम्पदा कोई चीज़ नही।

—कायाकल्प

सतान किसको प्यारी नही होती? कौन उसे सुखी नही देखना चाहता, पर उस पर अपना काबू भी होना चाहिए।

—निर्मला

मनुष्य का उद्धार पुत्र से नही, अपने कर्मो से होता है। यश और कीर्ति भी कर्मो ही से प्राप्त होती है। सन्तान वह सबसे कठिन परीक्षा है, जो ईश्वर ने मनुष्य को परखने के लिए गढी है। बडी-बडी आत्माएँ जो और सभी परीक्षाओं मे सफल हो जाती है, यहाँ ठोकर खाकर गिर पडती है। सुख के मार्ग मे इससे बडी और कोई बाधा नही है। जब इच्छा दुःख का मूल है तो सबसे बडे दुःख का मूल्य क्यो न होगी?

—कायाकल्प

पुत्र रत्न के सामने संसार की सम्पदा क्या चीज है? मगर पुत्ररत्न

न हो, तो संसार की सम्पदा का मूल्य ही क्या है, जीवन की सार्थकता ही क्या है, कर्म का उद्देश्य ही क्या है ? अपने लिए कौन दुनियाँ के मनसूबे बाँधता है ? अपना जीवन तो मनसूबो मे ही व्यतीत हो जाता है। यहाँ तक कि जब सब मनसूबे पूरे होने के दिन आते हैं, तो हमारी संसार यात्रा समाप्त हो चुकी होती है। पुत्र ही आकांक्षाओ का स्रोत, चिन्ताओ का आधार, प्रेम का बन्धन और जीवन का सर्वस्व है। —कायाकल्प

औलाद और खानदान की मुहब्बत अपनी नजात की फिक्र से ज्यादा है। — प्रेमाश्रम

औलाद की कसरत खुदा की मार है, इस पर रिश्तेदारो का बटोर टिड्डियो का दल है, जो आन की आन मे दरख्त ठूँठ कर देता है।

—प्रेमाश्रम

माँ-बाप की कामना तो यही होती है कि उनकी संतान को कोई कष्ट न हो। —कर्मभूमि

वह अपने प्रेमानुराग से संतान लालसा को दबाना चाहती थी, पर इस दुस्तर कार्य मे वह उस वैद्य से अधिक सफल न होती थी जो रोगी को गीतो से अच्छा करना चाहता हो। —सेवासदन

संतान होने से माँ-बाप की जिम्मेदारियाँ बढ जाती है। जब तक मनुष्य मे यह सामर्थ्य न हो कि वह उसका भले प्रकार पालन-पोषण और शिक्षण आदि कर सके तब तक उसकी संतान से देश, जाति और निज का कुछ भी कल्याण नहीं हो सकता। —मानसरोवर-सौत

सन्देह

दु.खी आत्मा दूसरो की नेकनीयती पर संदेह करने लगती है।

—रंगभूमि

किसी पर संदेह करने से अपना चित्त मलिन होता है। —रंगभूमि

जो आदमी मूग की दाल और मोटे आटे के दो फुलके खाकर भी नमक सुलेमानी का मोहताज हो, उसके छैलपन पर उन्माद का संदेह हो तो आश्चर्य ही क्या है ? —निर्मला

अनुष्ठानो से शकाओ का निवारण होता है। —कायाकल्प

शक करने से आदमी शक्की हो जाता है और तब बडे-बडे अनर्थ हो जाते है। —मानसरोवर-लांछन

सफलता

संसार में किसी काम का अच्छा या बुरा होना उसकी सफलता पर निर्भर है। —रंगभूमि

सफलता मे दोषो को मिटाने की विलक्षण शक्ति है। —रंगभूमि

सफलता मे अनन्त सजीवता होती है, विफलता मे असह्य शक्ति। —रंगभूमि

किसी कठिन कार्य मे सफल हो जाना आत्मविश्वास के लिए सजीवनी के समान है। —कायाकल्प

सभ्यता

सभ्यता केवल हुनर के साथ ऐब करने का नाम है। आप बुरे से बुरा काम करें, लेकिन अगर आप उस पर पर्दा डाल सकते है, तो आप सभ्य है, जैण्टिल मैन है। अगर आप मे यह सिफ़त नही तो आप असभ्य

हैं, गवार हैं, बदमाश हैं । यही सभ्यता का रहस्य है ।

—मानसरोवर-सभ्यता का रहस्य

जिस सभ्यता की स्प्रिट स्वार्थ हो, वह सभ्यता नही है, संसार के लिए अभिशाप है, समाज के लिए विपत्ति है ।

—मानसरोवर-स्मृति का पुजारी

भारत के लोग मूर्ख है, यह सिनेमा की कद्र क्या करेंगे । इसकी कद्र तो पश्चिम के लोग करते हैं । वहाँ मनोरंजन की सामग्रियाँ उतनी ही आवश्यक है जितनी हवा । जभी तो वे इतने प्रसन्नचित्त रहते है, मानो किसी बात की चिन्ता नही । यहाँ किसी को उसका रस ही नही । जिन्हे भगवान ने सामर्थ्य भी दिया है वह भी सरेशाम से मुँह ढाँपकर पड़ रहते हैं ।

—मानसरोवर-नैराश्य लीला

ससुराल

ससुराल की रोटियाँ मीठी मालूम होती हैं, पर उनसे बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है ।

—कायाकल्प

लडकी जब तक मैके मे क्वाँरी रहती है, वह अपने को उसी घर का समझती है, लेकिन जिस दिन ससुराल चली जाती है, वह अपने घर को दूसरो का घर समझने लगती है । माँ-बाप, भाई-बध सब वही रहते हैं, लेकिन वह घर अपना नही रहता । यह दुनियाँ का दस्तूर है ।

—मानसरोवर-माँ

कोई लडकी ऐसी भी है, जो खुशी से ससुराल जाती हो ? और कौन पिता ऐसा है, जो लडकी को खुशी से विदा करता हो ।

—कायाकल्प

सहारा

साहसी पुरुष को कोई सहारा नहीं होता तो वह चोरी करता है, कायर पुरुष को कोई सहारा नही होता तो वह भीख माँगता है, लेकिन स्त्री को कोई सहारा नही होता तो वह लज्जाहीन हो जाती है। युवती का घर से निकलना मुँह से बात निकलना है। —सेवासदन

किसी अवलम्ब के बिना मनुष्य को भटक जाने की शंका सदैव बनी रहती है। —मानसरोवर-नैराश्य लीला

सहानुभूति

क्रियात्मक सहानुभूति ग्राम निवासियों का विशेष गुण है।
—रंगभूमि

जो सहानुभूति साम्राज्य की जड खोखली कर दे, विद्रोहियो को सिर उठाने का अवसर दे, प्रजा मे अराजकता का प्रचार करे, उसे मैं अदूरदर्शिता ही नही, पागलपन समझता हूँ। —रंगभूमि

व्यथित हृदय ही से सहानुभूति की आशा होती है। —प्रतिज्ञा

जैसे कुछ रंगो मे परस्पर सहानुभूति होती है, उसी तरह कुछ रंगों मे परस्पर विरोध। लालिमा के संयोग से कालिमा और भी भयंकर हो जाती है। —निर्मला

महिला की सहानुभूति हार को भी जीत बना सकती है। —गोदान

रोगी को देख आना एक बात है, दवा लाकर उसे देना दूसरी बात

है। पहली बात शिष्टाचार से होती है, दूसरी सच्ची समवेदना।

—मानसरोवर-बलिदान

साम्यवाद

मैं उन लोगो को धूर्त और पाखण्डी समझता हूँ जो अपनी सम्पत्ति को भोगते हुए साम्य की दुहाई देते फिरते हैं। मेरी समझ मे नही आता कि साम्यवाद के पुजारी बनकर वह किस मुँह से विशाल प्रासादों मे रहते हैं, मोटर बोटों मे जल क्रीड़ा करते हैं, और संसार के सुखो का दिल खोलकर उपभोग करते हैं। अपने कमरे से फर्श हटा देना और सादे वस्त्र पहन लेना ही साम्यवाद नही है। यह निर्लज्ज धूर्तता है, खुला हुआ पाखण्ड है। अपनी भोजनशाला के बचे खुचे टुकडो को गरीबो के सामने फेंक देना साम्यवाद का मुंह चिढाना, उसे बदनाम करना है। —रंगभूमि

समाज का चक्र साम्य से आरम्भ होकर फिर साम्य पर ही समाप्त होता है। एकाधिपत्य, रईसो का प्रभुत्व और वाणिज्य-प्राबल्य, उसकी मध्यवर्ती दशाएँ हैं। वर्तमान चक्र ने मध्यवर्ती दशाओ को भोग लिया है और वह अपने अंतिम स्थान के निकट आता जाता है। किन्तु हमारी आंखे अधिकार और प्रभुता के मद से ऐसी भरी हुई हैं कि हमे आगे पीछे कुछ नही सूझता। चारो ओर से जनतावाद का घोर नाद हमारे कानो मे पड रहा है, पर हम ऐसे निश्चिन्त हैं मानो वह साधारण मेघ की गरज है। हम अभी तक उन्ही विचारो और [illegible] मे लीन हैं, जिनका आश्रय दूसरो की मेहनत है।

—मानसरोवर-पशु से मनुष्य

आत्मा की व्यापकता को यदि व्यवहार मे लाया [illegible] संसार मे साम्य का राज्य हो जाय; किन्तु उसी भाँति, साम्य [illegible]

साहस और सामर्थ्य

अपने सामर्थ्य का ज्ञान हमे शीलवान बना देता है। —रंगभूमि

कोई मनुष्य माया के दुर्भेद्य अंधकार को चीर सकता है? जीवन और मृत्यु के मध्यवर्ती अपार विस्तृत सागर को पार कर सकता है। जिसमें वह सामर्थ्य हो वह मनुष्य नही, प्रेत योनि का जीव है।

—कायाकल्प

उनकी पूर्व निश्चिन्तता वैसी न थी जो अपनी सामर्थ्य के ज्ञान से उत्पन्न होती है। उसका मूल कारण उनकी अकर्मण्यता थी। उस पथिक की भाँति जो दिन भर किसी वृक्ष के नीचे आराम से सोने के बाद सध्या को उठे और सामने एक ऊँचा पहाड देखकर हिम्मत हार बैठे।

—सेवासदन

जो मनुष्य ब्राह्मण को नेवता देता है, वह उसे दक्षिणा देने की भी सामर्थ्य रखता है। —सेवासदन

साहस और सच्ची बहादुरी दोनो की रक्षा और उनकी सहायता करने मे है। विश्वास मानो, जो मनुष्य केवल चित्त विनोदार्थ जीव हिंसा करता है, वह निर्दयी घातक से भी कठोर हृदय है। वह घातक के लिए जीविका है, किन्तु शिकारी के लिए केवल दिल बहलाने का एक सामान है। —मानसरोवर-शिकारी राजकुमार

सेना और सिपाही

एक सेना का मुकाबला करना इतना कठिन नही, जितना ऐसे गिने-गिनाए व्रतधारियो का, जिन्हें ससार मे कोई भय नही है। —रंगभूमि

सिपाही की बहादुरी का प्रमाण उसकी तलवार है, उसकी ज़बान नही। —मानसरोवर-दो सखियां

तोप के सामने खड़ा सिपाही भी विच्छू को देखकर सशक हो जाता है। —रगभूमि

वह साधु नही है, जिसका बल धर्म है, वह विद्वान नहीं है, जिसका बल तर्क है। वह सिपाही है, जो डडे के जोर से अपना स्वार्थ सिद्ध करता है, इसके सिवा उसके पास कोई दूसरा साधन ही नहीं। —कायाकल्प

एक दयालु प्रकृति का मनुष्य सेना मे रहकर कितना उद्दण्ड, कठोर हो जाता है। परिस्थितियां उसकी दयालुता का नाश कर देती हैं।

—प्रेमाश्रम

कोई सिपाही अपने शत्रु पर वार खाली जाते देखकर झल्ला-झल्ला कर और भी तेजी से वार करता है। —निर्मला

पुलिस वाले बडे कायर होते है। किसी का अपमान कर डालना तो उनकी दिल्लगी है। —गबन

सिपाही का तो जीवन ही आग मे कूदने के लिए है।

—मानसरोवर-सती

कमज़ोर सिपाही ताल ठोककर अखाडे मे उतर आता है, पर तलवार की चमक देखते ही उसके हाथ पांव फूल जाते हैं।

—मानसरोवर-पितन हारों का मुखां

सेवक और स्वामी

नौकर अपने मालिक का रुख देखकर ही काम करता है।

—कायाकल्प

जब स्वामी को सेवक की फिक्र नही, तो सेवक को स्वामी की फिक्र क्यो होने लगी ?

—कायाकल्प

किसी को अपना गुलाम बनाने के लिए पहिले खुद भी उसका गुलाम बनना पडता है।

—मानसरोवर-शांति

स्वामित्व के कवच पर धौस, ताने, धमकी, किसी का असर नही होता।

—मानसरोवर-स्वामिनी

मालकिन को दुनिया भर की चिन्ताएँ रहती है। —निर्मला

लोग जाति और देश के सेवक तो बनना चाहते हैं, पर जरा भी कष्ट नही उठाना चाहते।

—सेवासदन

नौकरी और गुलामी मे अन्तर है। नौकर कुछ नियमो के अधीन अपना निर्दिष्ट काम करता है, वह नियम स्वामी और सेवक दोनो ही पर लागू होते हैं, स्वामी अगर अपमान करे, अपशब्द कहे तो नौकर उसको सहन करने के लिए मजबूर नही। गुलाम के लिए कोई शर्त नही, उसकी दैहिक गुलामी पीछे होती है, मानसिक गुलामी पहले ही हो जाती है।

—मानसरोवर-पत्नी से पति

जो मालिक प्रजा को न पाले, वह भी कोई आदमी है। —गोदान

मालिक जो कुछ कहे वह ठीक है। —गोदान

जहाँ कोई मालिक होता है और दूसरा उसका नौकर तो उन दोनो मे तुरन्त द्वेष पैदा हो जाता है। मालिक चाहता है कि उससे जितना काम लेते बने, लेना चाहिए। नौकर चाहता है कि मैं कम से कम काम

करूँ। उसमे स्नेह या सहानुभूति का नाम तक नही होता। दोनो यथार्थ मे एक दूसरे के शत्रु होते हैं। —मानसरोवर-पशु से मनुष्य

सेवा

गृहस्थी मे फँसकर कोई तनमन से सेवा-कार्य नही कर सकता। —कायाकल्प

उत्साही युवको का ऊँचे आदर्शों के साथ सेवा-क्षेत्र मे आना जाति के लिए सौभाग्य की बात है। —कायाकल्प

दीनो की सेवा और सहायता मे जो आनन्द और आत्मगौरव है, वह दफ्तर मे बैठकर कलम घिसने मे नही। —कायाकल्प

जनता पर उसी आदमी का असर पडता है, जिसमे सेवा का गुण हो। —कायाकल्प

जाति सेवको से सभी दृढता की आशा रखते है, सभी उन्हे आदर्श पर बलिदान होते देखना चाहते हैं। जातीयता के क्षेत्र मे आते ही उनके गुणो की परीक्षा अत्यन्त कठोर नियमो से होने लगती है और दोषो की सूक्ष्म नियमो से। पहले सिरे का कुचरित्र मनुष्य भी साधुवेश रखने वालो से ऊँचे आदर्श पर चलने की आशा रखता है, और उन्हे आदर्श से गिरते देखकर उनका तिरस्कार करने मे सकोच नही करता। —कायाकल्प

सार्वजनिक काम करने के लिए कही भी क्षेत्र की कमी नही, केवल मन मे निस्वार्थ सेवा का भाव होना चाहिए। —कायाकल्प

जनता धनियो का जितना-मान-सम्मान करती है, उतना सेवकों का नही। सेवा भाव के साथ धन भी आवश्यक है। दरिद्र सेवक, चाहे वह कितने ही सच्चे भाव से क्यो न काम करे, चाहे वह जनता के लिए प्राण ही क्यो न देदे, उतना यश नही पा सकता, जितना एक धनी आदमी

अत्यसेवा करके पा जाता है। —कायाकल्प

जातीय सेवा का दूसरा नाम वेहयाई है। अगर ज़रा ज़रा सी बात पर नाराज होने लगे तो पागलखाने जाना पड़े। —रंगभूमि

सेवा ही वह सीमेण्ट है, जो दम्पति को जीवन पर्यन्त स्नेह और साहचर्य मे जोड़े रख सकता है, जिस पर बड़े-बड़े आघातो का भी कोई असर नही होता। जहाँ सेवा का अभाव है, वही विवाह विच्छेद है, परित्याग है, अविश्वास है। —गोदान

जातीय सेवा का स्वर्गीय आनन्द सहज ही में ही नही मिल सकता। हमारा पुरुषत्व, हमारा मनोबल, हमारा शरीर, यदि जाति के काम न आये तो वह व्यर्थ है। मामसरोवर-उपदेश

देश पर मिट जाने वाले को देश सेवक का सर्वोच्च पद प्राप्त होता है, वाचालता और कोरी कलम घिसने से देश सेवा नही होती।

—मानसरोवर उपदेश

सेवा ही वास्तविक सन्यास है। सन्यासी केवल अपनी मुक्ति का इच्छुक होता है, सेवा व्रतधारी अपने को परमार्थ की वेदी पर बलि दे देता है। इसका गौरव कही अधिक है। सन्यास स्वार्थ है, सेवा त्याग है। —मानसरोवर-नैराश्य लीला

सेवा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्ति है। सेवा ही उसके जीवन का आधार है। —मानसरोवर-आधार

आग मे कूदने का नाम सेवा नही है। उसे दमन करना ही सेवा है।

—रगभूमि

सच्ची प्रतिष्ठा और सम्मान के लिए सम्पत्ति की जरूरत नही उसके लिए त्याग और सेवा काफी है। —रगभूमि

जो अपने घरवालो की सेवा न कर सका, वह जाति की सेवा कभी कर ही नही सकता, घर सेवा की सीढी का पहला डण्डा है। इसे छोड कर तुम ऊपर नही जा सकते। —कायाकल्प

दीन दुखी एवं पीड़ित बन्धुओं की सेवा करने मे जो गौरव युक्त

आनन्द मिलता है, वह सभ्य सामाज की दावतो मे न प्राप्त होता है।

—कायाकल्प

रूप के साथ अगर तुम सेवा-भाव धारण कर सको, तो तुम अजेय हो जाओगे। —मानसरोवर-दो सखियाँ

सेवा का महत्त्व रूप से कही अधिक है। रूप मन को मुग्ध कर सकता है, पर आत्मा को आनन्द पहुँचाने वाली कोई दूसरी ही वस्तु है।

—मानसरोवर-दो सखियाँ

सेवा भाव रखने वाली रूप-विहीन स्त्री का पति किसी स्त्री के प्रेम-जाल मे फँस जाए, तो बहुत जल्द निकल भागता है, सेवा का चस्का पाया हुआ मन केवल नखरो और चोचलो पर लट्टू नही होता।

—मानसरोवर-दो सखियाँ

सेवा और उपकार बहुधा ऐसे रूप धारण कर लेते हैं, जिन्हे कोई शासन स्वीकार नही कर सकता और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसे उसका मूलोच्छेद करने के प्रयत्न करने पडते है। —कायाकल्प

जाति सेवा ऊसर की खेती है, वहाँ बडे से बडा उपहार जो मिल सकता है, वह है गौरव और यश, पर वह भी स्थायी नही, इतना अस्थिर कि क्षण भर मे जीवन भर की कमाई पर पानी फिर सकता है।

—मानसरोवर-माँ

सुख और संतोष

सतोष से मीठी ससार मे कोई वस्तु नही ? —रंगभूमि

मुझे तो बाजरे की पूरी बिस्कुट के चौथाई हिस्से से कहीं अच्छी मालूम होती है। क्षुधा तो तृप्त हो जाती है, जो जीवन का प्रधान उद्देश्य है। —रंगभूमि

धैर्य तो नैराश्य की अतिम अवस्था का नाम है। जब तक हम निरुपाय नही हो जाते धैर्य की शरण नही लेते। —रंगभूमि

सुख का मूल सतोष है। एक आदमी जल और स्थल के सारे रत्न पाकर गरीब रह सकता है, दूसरा फटे वस्त्रो और रूखी रोटियो मे भी धनी हो सकता है। —कायाकल्प

अगर सतोष मूर्खता है, तो संसार के नीति ग्रन्थ, उपनिषदो से लेकर कुरान तक मूर्खता के ढेर हो जायेगे। सतोष से अधिक और किसी तप की महिमा नही गाई गई है। —कायाकल्प

सुख सतोप से प्राप्त होता है, विलास से सुख कभी नही मिल सकता। —सेवासदन

धैर्य कभी सजीवता और वासना का रूप नही धारण करता। वह हृदय पर विरक्ति, उदासीनता और मलीनता का रग फेर देता है। वह केवल हृदयदाह है, जिससे आँसू तक सूख जाता है। वह शोक की अतिम अवस्था है। —प्रेमाश्रम

संतोप को कभी नही छोडना चाहिए। इस मत्र से कठिन से कठिन समय मे भी मन विचलित नही होता। —सेवासदन

धैर्य और विनय भारत की देवियो का आभूषण है।

—मानसरोवर-पत्नी से पति

संतोप दरिद्रता का दूसरा नाम है। —मानसरोवर-शांति

सतोप सेतु जब टूट जाता है तब इच्छा का बहाव अपरिमित हो जाता है। —मानसरोवर-बूढीकाकी

लोग भौतिक सुख पर अपने प्राण अर्पण कर देते हैं।

—मानसरोवर-ज्वालामुखी

आत्माभिमान सतोप का प्रसाद है। —मानसरोवर-दफ़्तरी

सौन्दर्य

सौन्दर्य की सबसे मनोहर, सबसे मधुर छवि वह है, जब वह सबल शोक से आर्द्र होता है, वही उसका आध्यात्मिक स्वरूप होता है।

—रंगभूमि

विचारोत्कर्ष ही सौन्दर्य का रचना शृंगार है। वस्त्राभूषणों से तो उसकी प्राकृतिक शोभा ही नष्ट हो जाती है, वह कृत्रिम और वासनामय हो जाता है। —रंगभूमि

सौन्दर्य-प्रतिमा मोहित नही करती, वशीभूत कर लेती है।

—रंगभूमि

चित्त की शांति ही वास्तविक सौन्दर्य है। —रंगभूमि

सुन्दरता मनोभावो पर निर्भर होती है। —कायाकल्प

सौन्दर्य के सामने प्रभुत्व भीगी बिल्ली बन जाता है। आसुरी शक्ति भी सौन्दर्य के सामने सिर झुका देती है। —कायाकल्प

अलंकार भावो के अभाव का आवरण है। सुन्दरता को अलंकारों की जरूरत नही। कोमलता अलंकारो का भार नही सह सकती।

—कायाकल्प

रूप की तो संसार मे कमी नही, मगर रूप और गुण का मेल बहुत कम देखने मे आता है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

रूप-मोह मनुष्य का स्वभाव है, लेकिन रूप से हृदय की प्यास नहीं बुझती, आत्मा की तृप्ति नही होती है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

रूप और गर्व मे दीपक और प्रकाश का सम्बन्ध है। गर्व रूप का प्रकाश है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

मोहिनी मूर्ति का मूल्य दो-चार महीने के लिए हो सकता है।

स्थायी वस्तु कुछ और ही है। —मानसरोवर-दो सखियाँ

स्त्रियो का सौन्दर्य उनका पति प्रेम है। इसके बिना उनकी सुन्दरता इन्द्रायण का फल है, विषमय और दग्ध करने वाला। —सेवासदन

रूप लावण्य प्राकृतिक गुण है, जिसमे कोई परिवर्तन नही हो सकता।

—सेवासदन

मैंने कभी सौन्दर्य को वासना की दृष्टि से नही देखा। मैं सौन्दर्य की उपासना करता हूँ, उसे अपने आत्म निग्रह का साधन समझता हूँ, उससे आत्मबल सग्रह करता हूँ, उसे अपनी चेष्टाओ की सामग्री नही बनाता।

—प्रेमाश्रम

रूप और गर्व मे चोली दामन का नाता है।

—मानसरोवर-अलग्योझा

सौन्दर्य, जीवन सुधा है। मालूम नही क्यो इसका असर इतना प्राण घातक होता है। —मानसरोवर-हार को जीत

पुरुषो के लिए अगर यह रूप-तृष्णा निन्दाजनक है तो स्त्रियो के लिए विनाश कारक है। द्वैत से अद्वैत को भी इतना आघात नही पहुँच सकता, जितना सौन्दर्य को। —मानसरोवर-हार की जीत

ससार मे कौन ऐसा आदमी है जिसे अच्छी सूरत बुरी लगती हो; लेकिन तुमने किसी मर्द को केवल रूपहीन होने के कारण क्वाँरा रहते देखा है? रूपहीन लडकियाँ भी माँ-बाप के घर नही बैठी रहती। किसी न किसी तरह उनका निर्वाह हो ही जाता है उनका पति उन पर प्राण न देता हो, लेकिन दूध की मक्खी नही समझता।

—मानसरोवर-स्त्री और पुरुष

सौन्दर्य और अज्ञान मे अपवाद है। सुन्दरी कभी भोली नही होती वह पुरुष के मर्म स्थल पर आसन जमाना जानती है।

—मानसरोवर-दंड

हठ

मूर्खों के पास युक्तियाँ नही होती, युक्तियो का उत्तर वे हठ से देते है। युक्ति कायल हो सकती है, नरम हो सकती है, भ्रात हो सकती है; हठ को कौन कायल करेगा ? —रगभूमि

जिद सामने की चोट नही सह सकती, उस पर बगली वार करना चाहिए। —सेवासदन

हिन्दू और श्रद्धा

श्रद्धा देवताओ को भी खीच लाती है। —कायाकल्प

श्रद्धा तो ज्ञानियो और साधुओ ही के अधिकार की वस्तु है।

—मानसरोवर-प्रेरणा

वे सभी हिन्दू, जिनके दिल मे श्रद्धा और धर्म का अनुराग होता है, भारत के हर प्रात से सूर्य ग्रहण के अवसर पर त्रिवेणी की पावन धारा मे अपने पापो का विसर्जन करने के लिए जाते हैं। —कायाकल्प

जो अश्रद्धा है, वह किसी तर्क या सिद्धान्त के आधीन नही है।

—प्रेमाश्रम

जो अमीरो को लूटकर दीन दुखी प्राणियो का पालन करता है, मुझे उन पर घृणा के बदले श्रद्धा होती है। —मानसरोवर-[illegible]

प्रेम मे कुछ मान भी होता है, कुछ महत्त्व भी। श्रद्धा तो अपने को मिटा डालती है और अपने मिट जाने को ही अपना इष्ट बना लेती है।

—गोदान

विविधि

खाली हाथ उज्र की गुँजाइश थी। रंगे हुए हाथो के लिए कोई उज्र, कोई बहाना नही है। —रंगभूमि

विशिष्ट पुरुषो को सावधानी से मुँह खोलना चाहिए; क्योकि उनका एक एक शब्द प्रेरणा शक्ति से परिपूर्ण रहता है। —रगभूमि

हम अपनी दुर्बलताओ को व्यग्य की ओट मे छिपाते है।

—रगभूमि

बनी हुई बात को निभाना मुश्किल नही है, बिगड़ी हुई बात को बनाना मुश्किल है। —रगभूमि

कोयल आम न पाकर भी निमकौडियो पर नही गिरती।

—रगभूमि

क्रिया के पश्चात् प्रतिक्रिया नैसर्गिक नियम है।

—मानसरोर-सवासेर गेहूँ

सौगातो से किसी का उवार तो होता नही, केवल देने वाले की सहृदयता प्रकट होती है और आशा भी उसी से की जाती है, जो इस योग्य होता है। जिसमे सामर्थ्य ही नही, उससे कोई आशा नही करता। नगे से कोई क्या लेगा? —मानसरोवर-समस्या

पश्चात्ताप के कड़वे फल कभी न कभी सभी को चखने पडते हैं।

—सेवासदन

रूखी रोटियाँ चांदी के थाल मे परोसी जायें तो भी वे पूरियाँ न हो जायेगी। —सेवासदन

कडवी दवा को खरीद कर लाने, उनका काढ़ा बनाने और उसे उठाकर पीने मे बडा अन्तर है। —सेवासदन

जिसने कभी किसी पर हाथ न उठाया हो वह सहसा तलवार का वार नही कर सकता। —सेवासदन

हराम का माल अकेले मुश्किल से पचता है। —सेवासदन

दृढ सकल्प हवा मे किले बना देता है। —सेवासदन

मुक्ति के दिन कैदियो को भी भोजन अच्छा नही लगता। —सेवासदन

माशूको की शेखी और शरारत अच्छी मालूम होती है, लेकिन इतनी नही कि मुँह जला दे। —सेवासदन

जोखिम के समय पद-सम्मान का विचार नही रहता। —रंगभूमि

दुरावेश मे सौ जन्म का नाश हो जाता है। —रंगभूमि

पहाडो की सध्या मैदान की रातो से कही भयानक होती है। —रंगभूमि

अफसर छोटे हो या बडे, सभी लोभी होते हैं। —रंगभूमि

अकेले रहने वाले से कोई दावत की इच्छा नही करता। जानता है दावत फीकी होगी। लेकिन सकुटुम्ब रहने वालो के लिए भागने का कोई द्वार नही रहता। —रंगभूमि

खेद मे बैठकर घूरने के लिए बडे घुटे हुए आदमी की जरूरत होती है। —रंगभूमि

चोर को पकडने के लिए विरले ही निकलते है, पकड़े गए चोर पर पंचलत्तियाँ जमाने के लिए सभी पहुँच जाते हैं। —रंगभूमि

किसी आघात के लिए पहले से तैयार रहना इससे कही अच्छा है कि आकस्मिक रीति से सिर पर आ पड़े। —रंगभूमि

जिनके लिए अपनी जिन्दगानी खराब कर दो, वे भी गाढ़े समय पर मुँह फेर लेते है। —रंगभूमि

आलसियो को खिलाना पिलाना वास्तव मे उन्हे जहर देना है। जहर मे तो केवल प्राण निकल जाते है, पर खातिरदारी तो आत्मा का सर्वनाश कर देती है। —मानसरोवर-[illegible]

जिसके मिज़ाज का कुछ पता ही न हो, उसे कौन खुशी रख सकता है ?
—मानसरोवर-खुचड़

हीरे परखने की आशा जौहरी से ही की जाती है ।
—मानसरोवर-आगा पीछा

जानवर को भी जब घास भूसा नही मिलता, तो पगहा तुडाकर किसी के खेत मे पैठ जाता है । —मानसरोवर-प्रेम का उदय

मज़बूत दीवार को टिकौने की ज़रूरत नही । जब दीवार हिलने लगती है तब हमे उसे सँभालने की चिन्ता होती है ।
—मानसरोवर-प्रेम का उदय

शिकारी अपनी बन्दूक भर लेने के बाद चाहता है कि उसका शिकार सामने आये । —मानसरोवर प्रेम का उदय

जो देश को लूटते है, उनसे तो कोई नही बोलता, जो बेचारे अपनी गाढ़ी कमाई की रोटी खाते हैं, उनका गला काटने को पुलिस भी तैतार रहती है, क्योकि उसके पास किसी को नजर भेट देने के लिए पैसे नही होते । —मानसरोवर-प्रेम का उदय

जो मृत्यु को सम्मुख देख कर भी ससार के योग्य पदार्थों की ओर मन को चलायमान कर देती है, वही तीव्र लालसा है ।
—मानसरोवर-प्रेम का उदय

जो लट्ठा पहना कर खुश होता है, वह चुँदरी पहन लेने से खुश न होगा । मानसरोवर-सती

भरे पूरे घर मे दाने की कौन कदर करता है । जब घर खाली हो जाता है, तब मालूम होता है कि दाना क्या है । —मानसरोवर-सती

उद्गम को बन्द कर दो, जल प्रवाह बन्द हो जायगा ।
—रगभूमि

लिहाज भले आदमी का किया जाता है । ऐसे लुच्चो का लिहाज नही किया जाता, जो मुफ्त मे काम कराना चाहते हो । —कायाकल्प

अन्त कभी किसी का नही होता । जीव अनन्त है । —कायाकल्प

जो लड़ना नही जानते, वे ढकेलने से भी अखाड़े मे नही जाते ।

—कायाकल्प

मुलम्मे की जरूरत सोने को नही होती । —कायाकल्प

सूरज जलता भी है, रोशनी भी देता है । —कायाकल्प

सीधे का मुँह कुत्ता चाटता है । —कायाकल्प

नीच लातो के बगैर सीधा नही होता । —कायाकल्प

आशिक बनना मुँह का नेवाला नही है । —सेवासदन

मीठी नीद वालो को कठोरवाद अप्रिय लगता है । —सेवासदन

बडो के सामने न्याय और सिद्धात की बातचीत असगत सी जान पडती है । —सेवासदन

बसन्त मे मल्हार गाने वाले को कौन अच्छा कहेगा। कुसमय की कोई बात अच्छी नही होती । —सेवासदन

कोई वाद जब विवाद का रूप धारण कर लेता है तो वह अपने लक्ष्य से दूर हो जाता है। वाद मे नम्रता और विनय, प्रबल युक्तियो से भी अधिक प्रभाव डालती है । —सेवासदन

बाजार मे वही वस्तु दिखाई देती है, जिसके ग्राहक होते है और ग्राहको के न्यूनाधिक होने पर वस्तु का न्यूनाधिक होना निर्भर है ।

—सेवासदन

अभ्यास से सब कुछ हो सकता है । हाँ, योग्य गुरु चाहिए । योग से बडी-बडी सिद्धियाँ प्राप्त हो सकती हैं । —निर्मला

जाँत-पाँत केवल भिन्न-भिन्न काम करने वाले प्राणियो का समूह है ।

—प्रतिज्ञा

गुण्डे अगर किसी की जान ले सकते है, तो किसी के लिए जान दे भी सकते है । —प्रतिज्ञा

आत्मबल मृत्यु पर हँसता है और विपत्ति के दाँतो से खेलता है ।

—मानसरोवर-भा

जब अलग भी होते हैं तो जहाँ तक हो सके आपस मे मन मुटाव न

बिल्ली भी भागने की राह नही पाती तो शेर हो जाती है। —प्रेमाश्रम

आँधी का पहला वेग जब शात हो जाता है, तब वायु के प्रचण्ड झोके, बिजली की चमक और कडक भी बन्द हो जाती है और मूसलाधार वर्षा होने लगती है। —प्रेमाश्रम

उत्सव आपस मे प्रीति बढाने के लिए मनाए जाते हैं। जब प्रीति के बदले द्वेष बढे, तो उनका न मनाना ही अच्छा है। —कायाकल्प

लोहे को लोहा ही काटता है। कुमानुस के साथ कुमानुस बनने से ही काम चलता है। —कायाकल्प

जैसा मुँह होता है, वैसे ही बीडे मिलते है। —मानसरोवर-झाँकी

रहम, साफदिली और बेगरजी अमन के दिनो मे कौम और मुल्क को तरक्की के रास्ते पर ले जाती है, पर जग मे जबकि शैतानी जोश का तूफान उठता है, इन खूबियो की गुन्जाइश नही। उस वक्त तो उसी की जीत होती है, जो इसानी खून का रग खेले, खेतो खलिहानो को जलाए जगलो को बसाए, और बस्तियो को वीरान करे। अमन का कानून जग के कानून से जुदा है। —मानसरोवर-दिल की रानी

अपने पडौसियो की निन्दा सनातन से मनुष्य के लिए मनोरंजन का विषय रहा है। —मानसरोवर-लाँछन

पारस को छूकर लोहा सोना हो जाता है, पारस लोहा नही हो सकता। —मानसरोवर-मंदिर

निद्रा किसी हिंसक पशु की भाँति ताक लगाए बैठी रहती है, लेटते ही टूट पडती है। —मानसरोवर-कामना तरू

बिना तप के सिद्धि नही मिलती। —मानसरोवर-सती

रहस्य रोने की वस्तु नही, हँसने की वस्तु है।

—मानसरोवर-बहिष्कार

हयादार के लिए आँख का इशारा बहुत है।

—मानसरोवर-बहिष्कार

सम्पन्नता अपमान और बहिष्कार को तुच्छ समझती है । उनके अभाव मे ये बाधायें प्राणान्तक हो जाती हैं । —मानसरोवर-बहिष्कार

पेट पालना है, तो हुकुम मानना ही पडेगा ।

—मानसरोवर-बहिष्कार

शोहदे वशीकरण की कला मे निपुण होते हैं । ईश्वर न करे, इन बदमाशो की निगाह किसी भले घर की बहू बेटियो पर पडे ।

—मानसरोवर-लांछन

जो बेईमान है, दूसरो का गला काटते फिरते है, उनसे अल्लाह मियाँ भी डरते हैं जो सीधे और सच्चे होते हैं उन्ही पर आफत आती है ।

—मानसरोवर-लांछन

होली का त्योहार तमाशा देखने, अच्छी अच्छी चीजे खाने और अच्छे अच्छे कपडे पहनने का नाम नही है । यह व्रत है, तप है, अपने भाइयो से सहानुभूति करना ही त्योहारो का खास मतलब है और कपडे लाल करने से पहले खून को लाल कर लो । सफेद खून पर यह लाली शोभा नही देती । —मानसरोवर आँसुओं की होली

साधु संतो के सतसग से बुरे भी अच्छे हो जाते हैं ।

—मानसरोवर-अग्नि समाधि

अवज्ञा शारीरिक और आर्थिक दोनो ही दृष्टि से मँहगी पड़ती है ।

—मानसरोवर-अग्नि समाधि

वही तलवार, जो केले को भी नही काट सकती, सान पर चढकर लोहे को काट देती है । —मानसरोवर-सुजान भगत

जिस वियोग का अन्त जीवन की सारी विभूतियो को अपने साथ लायेगा, वह वास्तव मे तपस्या है । तपस्या के बिना तो वरदान भी नही मिलता । —मानसरोवर-सोहाग का शव

जब कोई हमसे अपना भेद खोल देता है तो हम उससे अपना भेद गुप्त नही रख सकते । —सेवासदन

बारात का लौटना लडको का खेल नही । —सेवासदन

आप धरती की ओर आकर्षित हो जाता है। —सेवासदन

हम आप झुक कर दूसरो को झुका सकते हैं, पर तन कर किसी को झुकाना कठिन है। —सेवासदन

पखहीन पक्षी पिंजर बद्ध रहने में ही अपनी कुशल समझता है।

—सेवासदन

उम्मीदवारी के दिनो मे हम जितने विनयशील और कर्तव्य परायण होते है, उतने ही अगर जगह पाने पर बने रहे तो हम देव तुल्य होजाये। —सेवासदन

चौकीदार के सामने चोर को घर मे घुसने का साहस नही होता।

मानसरोवर-सुहाग का शव

शृंगार भी इस जमाने मे एक विद्या है। पहले परिपाटी के अनुसार ही शृंगार किया जाता था। कवियो, चित्रकारो और रसिको ने शृंगार की मर्यादा सी बाँध दी थी। आँखो के लिए काजल लाजमी था, हाथो के लिए मेहदी, पाँवो के लिए महावर, एक एक अंग एक एक आभूषण के लिए निर्दिष्ट था। आज वह परिपाटी नही रही। आज प्रत्येक रमणी अपनी सुरूचि, सुबुद्धि और तुलनात्मक भाव से शृंगार करती है। उस का सौन्दर्य किस उपाय से आकर्षकता की सीमा पर पहुँच सकता है यही उसका आदर्श होता है। —मानसरोवर-एक्ट्रैस

बूढा बैल कभी जवान बछडे के साथ नही चल सकता है।

—मानसरोवर-एक्ट्रैस

वर्षाकाल मे बादलो की नयी नयी सूरत बनती है और फिर हवा के वेग से बिगड जाती है। — मानसरोवर-ईश्वरीय न्याय

अतिथि सत्कार एक पवित्र धर्म है। —मानसरोवर-ममता

अपने रोने से छुट्टी ही नही मिलती, दूसरो के लिए कोई क्यो कर रोये? —मानसरोवर-जेल

मर्द लज्जित करता है तो हमे क्रोध आता है। स्त्रियाँ लज्जित करती है तो ग्लानि उत्पन्न होती है। —मानसरोवर-जुलूस

सरकश वे कहलाते है जो डाके मारते है, चोरी करते हैं, खून करते हैं, उन्हे सरकश नही कहते, जो देश की भलाई के लिए अपनी जान हथेली पर लिए फिरते हो। हमारी बदनसीबी है कि जिनकी मदद करनी चाहिए उन का विरोध कर रहे हैं। यह घमंड करने और खुश होने की बात नही है, शर्म करने और रोने की बात है। —मानसरोवर-जुलूस

भलमनसी भले मानसो से निभाई जा सकती है। ऐसे धूर्तों के साथ भलमानसो का व्यवहार करना मूर्खता है।

—मानसरोवर-दुर्गा का मंदिर

संकट पड़ने पर हम धर्म भीरु हो जाते हैं, औषधियो से निराश होकर देवताओ की शरण लेते हैं। —मानसरोवर-दुर्गा का मंदिर

जिस तरह सूखी लकड़ी जल्दी से जल उठती है, उसी तरह क्षुधा से बावला मनुष्य ज़रा ज़रा सी बात पर तिनक जाता है।

—मानसरोवर-बड़े घर की बेटी

अपने उत्तरदायित्व का ज्ञान बहुधा हमारे संकुचित व्यवहारो का सुधारक होता है। जब हम राह भूलकर भटकने लगते हैं, तब यही ज्ञान हमारा विश्वासनीय पथ-प्रदर्शक बन जाता है।

—मानसरोवर-पंच परमेश्वर

पंच के पद पर बैठकर न कोई किसी का दोस्त होता है, न दुश्मन। न्याय के सिवा उसे और कुछ नही सूझता। उसकी जबान से खुदा बोलता है। —मानसरोवर-पंच परमेश्वर

जब दूसरे के पाँवो तले अपनी गर्दन दबी हुई है, तो उन पावो को सहलाने में ही कुशल है। —गोदान

सिंह का काम तो शिकार करना है, अगर वह गरजने और गुर्राने के बदले मीठी बोली बोल सकता, तो उसे घर बैठे मनमाना शिकार मिल जाता। शिकार की खोज मे उसे जंगल मे न भटकना पडता।

—गोदान

मुफ्त खोरी ने हमे अपंग बना दिया है, हमें अपने पुरुषार्थ पर लेश

मात्र भी विश्वास नही, केवल अफसरो के सामने दुम हिला हिलाकर किसी तरह उनके कृपापात्र बने रहना और उनकी सहायता से अपनी प्रजा पर आतक जमाना ही हमारा उद्यम है। —गोदान

ठोकर खाकर ही तो हम सावधानी से कदम उठाते है। —गोदान

जीतकर आप अपनी धोखेबाजियो की डीग मार सकते है, जीत से सब कुछ माफ है। हार की लज्जा तो पी जाने की वस्तु है। —गोदान

नाटक कोई भी अच्छा हो सकता है, अगर उसके अभिनेता अच्छे हो। अच्छे से अच्छा नाटक बुरे अभिनेताओ के हाथ मे पडकर बुरा हो सकता है। जब तक स्टेज पर शिक्षित अभिनेत्रियाँ नही आती, हमारी नाट्य कला का उद्धार नही हो सकता। —गोदान

गुड से मारने वाला जहर की अपेक्षा कही सफल हो सकता है।

—गोदान,

अगर माँस खाना अच्छा समझते हो तो खुलकर खाओ। बुरा समझते हो तो मत खाओ; लेकिन अच्छा समझना और छिपकर खाना यह मेरी समझ मे नही आता। मैं तो इसे कायरता भी कहता हूँ और धूर्तता भी, जो वास्तव मे एक है। —गोदान

आश्चर्य अज्ञान का दूसरा नाम है। —गोदान

लिखते तो वह लोग है, जिनके अन्दर कुछ दर्द है, अनुराग है, लगन है, विचार है, जिन्होने धन और भोग विलास को जीवन का लक्ष्य बना लिया, वह क्या लिखेंगे। —गोदान

विचार और व्यवहार मे सामंजस्य का न होना ही धूर्तता है, मक्कारी है। —गोदान

मुक्ति सभी चाहते हैं, पर ऐसे बहुत कम हैं, जो लोभ से अपना गला छुडा सकें। —गोदान

सारा आचार विचार परिस्थितियो के आधीन है। आज तुम दरिद्र हो, किसी मोटरकार को धूल उडाते देखते हो, तो ऐसा बिगडते हो कि उसे पत्थरो से चूर चूर कर दो; लेकिन क्या तुम्हारे मन मे कार की

लालसा नही है ? परिस्थिति ही विधि है, और कुछ नही। —गोदान

शेर के मांद मे घुसना कोई बहादुरी नही है, मूर्खता है। —गोदान

ज़रा से एहसान से बड़े बड़े काम निकल जाते है। —गोदान

व्यर्थ मे अपनी जान खतरे मे डालना बहदुरी नही है। —गोदान

चुनाव मे वही बाजी ले जाता है, जिसके पास रुपये हैं। रुपये के ज़ोर से उसके लिए सभी सुविधाएँ तैयार हो जाती हैं। बड़े बड़े पडित, बडे-बडे मौलवी, बड़े-बड़े लिखने और बोलने वाले, जो अपनी ज़बान और कलम से पब्लिक को जिस तरह चाहे फेर दे, सभी सोने के देवता के पैरो पर माथा रगड़ते हैं। —गोदान

पति की झाड मे सब कुछ जायज़ है। मुसीबत तो उसको है, जिसे कोई आड नही। —गोदान

दलाल लोग बडे प्रतिभावान होते हैं। जिस काम से कुछ मिलने की आशा हो, वह उठा लेगे, और किसी न किसी तरह उसे निभा भी देगें। किसी राजा की शादी किसी राजकुमारी से करा दी और दस बीस हज़ार उसी में मार लिया। यही दलाल जब छोटे छोटे सौदे करते हैं तो टाउट कहे जाते है और हम उनसे घृणा करते हैं। बडे-बड़े काम करके टाउट राजाओ के शिकार खेलता है और गवर्नरों की मेज़ पर चाय पीता है। —गोदान

पुरानी बात भी आत्मबल के साथ कही जाती है, तो नयी हो जाती है। —गोदान

वोट नये युग का मायाजाल है, मरीचिका है, कलंक है, धोखा है, उसके चक्कर मे पड़कर आप न इधर की होगी, न उधर की। कौन कहता है कि आपका क्षेत्र संकुचित है और उसमे आपको अभिव्याप्ति का अवकाश नही मिलता। हम सभी पहले मनुष्य हैं, पीछे और कुछ। हमारा जीवन हमारा घर है। वही हमारी सृष्टि होती है वहीं हमारा पालन होता है, वही जीवन के सारे व्यापार होते हैं, अगर वह क्षेत्र परिमित है, तो अपरिमित कौन सा क्षेत्र है ? क्या वह संघर्ष, जहाँ संगठित

अपहरण है ? जिस कारखाने मे मनुष्य और उसका भाग्य बनता है, उसे छोडकर आप उन कारखानो मे जाना चाहती है, जहाँ मनुष्य पीसा जाता है, जहाँ उसका रक्त निकाला जाता है ।

—गोदान

कुत्ता हड्डी की रखवाली करे तो खाये क्या ?

—गोदान

जो अपने को चाहे वही जवान हैं, न चाहे वही बूढा है ।

—गोदान

मजूरी करना कोई पाप नही है । मजूर बन जाय तो किसान बन जाता है ।

—गोदान

जो एक से दो का हुआ, वह किसी का नही रहता ।

—गोदान

आत्माभिमान को भी कर्त्तव्य के सामने सिर झुकाना पडेगा ।

—गोदान

मोक्ष और उपासना अहंकार की पराकाष्ठा है, जो हमारी मानवता को नष्ट किए डालती है । जहाँ जीवन है, क्रीडा है, प्रेम है, वही ईश्वर है, और जीवन को सुखी बनाना ही उपासना है और मोक्ष है ।

—गोदान

छोटी नदी को उमडते देर नही लगती ।

—गोदान

इस जमाने मे जव तक कडे न पडो, कोई नही सुनता । विना रोये तो वालक भी माँ से दूध नही पाता ।

—गोदान

मोटे वह होते हैं, जिन्हे न रिन* की सोच होती है, न इज्जत की । इस जमाने मे मोटा होना वेहयाई है । सौ को दुवला करके तव एक मोटा होता है । ऐसे मोटेपन मे क्या सुख है ? सुख तो जव है कि सभी मोटे हो ।

—गोदान

जिस तरह पुरुष के चित्त से अभिमान और स्त्री की आँख से लज्जा नही निकलती, उसी तरह अपनी मेहनत से रोटी कमाने वाला किसान भी मजदूरी की खोज मे घर से वाहर नही निकलता है । लेकिन हाँ पापी पेट, तू सव कुछ कर सकता है ! मान और अभिमान, ग्लानि और लज्जा ये सव चमकते हुए तारे तेरी काली घटाओ की ओट मे छिप जाते हैं ।

मानसरोवर-खून सफेद

* ऋण

देवी आती है तो बकरे का खून पीकर चली जाती है।

—मानसरोवर-गरीब की हाय

रूठने वाले को भूख आप ही मना लिया करती है।

—मानसरोवर-गरीब की हाय

गोबर का उपला जब जलकर खाक हो जाता है, तब साधु सन्त उसे माथे पर चढाते है। पत्थर का ढेला आग मे जलकर आग से अधिक तीखा और मारक हो जाता है। —मानसरोवर-गरीब की हाय

दाढी मर्द की शोभा और श्रृंगार है।

—मानसरोवर-गरीब की हाय

कुछ लोग परीक्षा मे दृढ रहते हैं और कुछ लोग इसकी हलकी आँच भी नही सह सकते। —मानसरोवर-बेटी का धन

उपहास और विरोध तो सुधारक के पुरस्कार हैं।

—मानसरोवर-धर्म संकट

नेत्रो का सुन्दरता से बडा घना सम्बन्ध है। घूरना पुरुषो का और लजाना स्त्रियो का स्वभाव है। —मानसरोवर-धर्म संकट

मनुष्य की आर्थिक अवस्था का सबसे ज्यादा असर उसके नाम पर पडता है। —मानसरोवर-बलिदान

भले दिन मनुष्य के चरित्र पर, सदैव के लिए अपना चिन्ह छोड़ जाते हैं। —मानसरोवर-बलिदान

मेले ठेले मे एक फालतू आदमी से बडे काम निकलते हैं।

—मानसरोवर-बोध

फूल भी सुन्दर है और दीपक भी सुन्दर है। फूल मे ठंडक और सुगन्धि है, दीपक मे प्रकाश और उद्दीपन, फूल पर भ्रमर उड़-उडकर उसका रस लेता है, दीपक पर पतंग जलकर राख हो जाता है।

—मानसरोवर-ज्वालामुखी

फूल की पंखुड़ियाँ हो सकती हैं, ज्वाला को विभक्त करना असम्भव है। —मानसरोवर-ज्वालामुखी

समय सफल चोर का सबसे बडा मित्र है। एक एक क्षण उसे निर्दोष सिद्ध करता जाता है। किन्तु जब वह रँगे हाथों पकडा जाता है तब उसे बच निकलने की कोई राह नही रहती। रुधिर के सूखे हुए धब्बे रग दाग बन सकते है, पर ताजा लहू आप ही आप पुकारता है।

—मानसरोवर-पशु से मनुष्य

चोर केवल दड से ही नही बचना चाहता, वह अपमान से भी बचना चाहता है। वह दड से उतना नही डरता है जितना अपमान से। जब उसे सजा से वचने की आशा नही रहती, उस समय भी वह अपने अपराध को स्वीकार नही करता। वह अपराधी बनकर छूट जाने से निर्दोष बनकर दंड भोगना बेहतर समझता है। —मानसरोवर-पशु से मनुष्य

स्वर्ग और नरक की चिन्ता मे वे रहते है—जो अपाहिज हैं, कर्त्तव्य हीन है, निर्जीव है, हमारा स्वर्ग और नरक सब इसी पृथ्वी पर है। हम इस कर्म क्षेत्र मे कुछ कर जाना चाहते है।—मानसरोवर-ब्रह्म का स्वाँग

फूल हम घर में भी सूँघ सकते हैं, परन्तु वाटिक मे कुछ और वास होती है।

—मानसरोवर-बूढ़ी काकी

जल के उद्वेग मे नौका को धागे से कौन रोक सकता है।

—मानसरोवर-हार की जीत

इन्तजार मे आशिक की जान भी नही निकलती।

—मानसरोवर-हार की जीत

पद के साथ उत्तरदायित्व का भारी बोझ भी सिर पर आ पडता हैं।

—मनसरोवर-आदर्श विरोध

हमे पग-पग पर सरकार के सामने दीन भाव से हाथ नही फैलाना चाहिए।

—मानसगेवर-आदर्श विरोध

भारत के उद्धार का कोई उपाय है तो वह स्वराज्य है।

—मानसरोवर-आदर्श विरोध

समृद्धि के शत्रु सब होते है, छोटे ही नही, बडे भी।

——मानसरोवर-विषम समस्या

रुई सी ... ...जार हो जाती है।

—मानसरोवर-सौत

आलसी आदमियों को अपने नियमित मार्ग से तिल भर भी हटना बड़ा कठिन मालूम पड़ता है। —मानसरोवर-सौत

सरलता और शालीनता का आत्मिक गौरव चाहे जो हो, उनका आर्थिक मोल बहुत कम है। —मानसरोवर-सज्जनता का दंड

इंजीनियरो का ठेकेदारो से कुछ ऐसा ही सम्बन्ध है जैसा मधु-मक्खियो का फूलों से। अगर वे अपने नियत भाव से अधिक पाने की चेष्टा न करे तो उनसे किसी को शिकायत नही हो सकती। यह मधुरस कमीशन कहलाता है। यह एक मनोहर वाटिका है, जहाँ मनुष्य का डर है, न परमात्मा का भय, यहाँ तक कि वहाँ आत्मा की छिपी हुई चुटकिओ का भी गुजर नही है। इसकी ओर बदनामी आँख भी नही उठा सकती। यह वह बलिदान है जो हत्या होते हुए भी धर्म का एक अंश है।

—मानसरोवर-सज्जनता का दंड

आलस्य वह राज रोग है, जिसका रोगी कभी नहीं सँभलता।

—मानसरोवर-शंखनाद

वैर का अंत बैरी के जीवन के साथ हो जाता है।

—मानसरोवर-वैर का अंत

बुझते हुए दीपक में तेल पड़ जाये तो ऐसा प्रतीत होता है मानो वह कुछ बढ गया है। —मानसरोवर-महातीर्थ

घास और कास स्वयं उगते हैं। उखाड़ने से भी नही जाते। अच्छे पौधे बड़ी देखरेख से उगते हैं। इसी प्रकार बुरे समाचार स्वयं फैलते हैं, छिपाने से भी नही छिपते। —मानसरोवर-विस्मृति

न्यायालय मे एक स्त्री का आना बाजार मे भानमती का आना है

—मानसरोवर-विस्मृति

काल का मरहम हृदय की दाह को शान्त कर देता है और व्यंग्य के विषैले घावो को भर देता है। —मानसरोवर-विस्मृति

अंधकार मे विलाप ध्वनि इतनी आशा-जनक नही होती जितनी प्रकाश की एक झलक। —मानसरोवर-प्रारब्ध

निरंकुशता का तर्क से विरोध रहता है।

—मानसरोवर-लोक मत का सम्मान

एकान्तवास शोक ज्वाला के लिए समीर के समान है।

—मानसरोवर-नैराश्य लीला

मनोरंजन नवीनता का दास है और समानता का शत्रु।

—मानसरोवर-नैराश्य लीला

माया-मोह से जितनी जल्दी निवृत्ति हो जाए उतना ही अच्छा है।

—मानसरोवर-नैराश्य लीला

माया-मोह का स्थान मन है, घर नही।

—मानसरोवर-नैराश्य लीला

बिना माँझी के नाव पार लगाना कठिन है, जिधर हवा पाती है, उधर ही वह जाती है। —मानसरोवर-नैराश्य लीला

सब घडी बराबर नही जाती, न जाने कब क्या हो जाये ?

—मानसरोवर-कौशल

बिना घर के भेदिए के कभी चोरी नही होती।

—मानसरोवर-कौशल

हम कडे से कडा घाव सह सकते है, लेकिन ज़रा सा भी व्यतिक्रम नही सह सकते। — मानसरोवर-आधार

नाम मात्र का प्रलोभन देकर अच्छी से अच्छी शहादते मिल सकती हैं, और पुलिस के हाथो मे पडकर तो निकृष्ट से निकृष्ट गवाहियाँ भी देव-वाणी का महत्त्व प्राप्त कर लेती हैं। —मानसरोवर-माता का हृदय

पूर्व सन्तान के लिए, यश के लिए, धर्म के लिए मरता है, पश्चिम अपने लिए। पूर्व मे घर का स्वामी सबका सेवक होता है, वह सबसे ज्यादा काम करता, दूसरो को खिला कर खाता, दूसरो को पहना कर पहनता है, किन्तु पश्चिम मे वह सबसे अच्छा खाना, अच्छा पहनना अपना

अधिकार समे... ...परिवार सर्वोपरि है, वहाँ व्यक्ति सर्वोपरि है। हम बाहर से पूर्व और भीतर से पश्चिम है। हमारे सत् आदर्श दिन-दिन लुप्त होते जा रहे हैं। —मानसरोवर-दीक्षा

कालिमा छूट जाती है, पर उसका दाग दिल से कभी नही मिटता।
—मानसरोवर-दीक्षा

मुख मानव शरीर का श्रेष्ठतम भाग है। अतएव मुख को सुख पहुँचाना, प्रत्येक प्राणी का परम कर्त्तव्य है। है या नही ? कोई काटता है हमारे वचन को ? सामने आये। हम उसे शास्त्र का प्रमाण दे सकते हैं।
—मानसरोवर-मनुष्य का परम धर्म

असहयोग एक हवा है, जब तक चलती रहे उसमे अपने गीले कपडे सुखा ले। —मानसरोवर-विचित्र होली

ऊख केवल धनदाता ही नही, किसानों का जीवन दाता भी है। उसी के सहारे किसानो का जाडा कटता है। गरम रस पीते हैं, ऊख की पत्तियाँ तापते हैं, उसके अगोड़े पशुओ को खिलाते हैं।
—मानसरोवर-मुक्ति मार्ग

डाक्टर किसी की कर्मरेखा तो नही पढे होते, ईश्वर की लीला अपरम्पार है, डाक्टर उसे नही समझ सकते। —मानसरोवर-उद्धार

ढिठाई मानवी दुर्बलताओ की पराकाष्ठा है।
—मानसरोवर-डिक्री के रुपये

हार की चोट बुरी होती है। —मानसरोवर-शतरंज के खिलाड़ी

वह मुस्कुराहट, जो अश्रुपात से भी कही अधिक करुणा हो, व्यथा पूर्ण होती है। —मानसरोवर-वज्रपात

विद्यालय मे विनोद की जितनी लीलाएँ होती रहती हैं, वे यदि एकत्र की जा सके, तो मनोरंजन की बड़ी उत्तम सामग्री हाथ आवे। वहाँ अधिकाश छात्र जीवन की चिन्ताओ से मुक्त रहते हैं। कितने ही तो परीक्षाओ की चिन्ता से भी बरी रहते हैं। वहाँ मटरगश्त करने, गप्पें उड़ाने और हँसी-मजाक करने के सिवा उन्हे और कोई काम नही रहता।

उनका क्रिया शील उत्साह कभी विद्यालय के नाट्य मंच पर प्रगट होता है, कभी विशेष उत्सवो के अवसर पर। उनका शेष समय अपने और मित्रो के मनोरजन मे व्यतीत होता है। वहॉ जहाँ किसी महाशय ने किसी विभाग मे विशेष उत्साह दिखाया और वह विनोद का लक्ष्य बना। अगर कोई महाशय बडे धर्म निष्ठ हैं, सध्या और हवन मे तत्पर रहते हैं, विला नागा नमाजे अदा करते हैं; तो उन्हे हास्य का लक्ष्य बनने मे देर नही लगती। अगर किसी को पुस्तको से प्रेम है, कोई परीक्षा के लिए बडे उत्साह से तैयारियाँ करता है, तो समझ लीजिए कि उसकी मिट्टी खराब करने के लिए कही न कही अवश्य षड्यत्र रचाया जा रहा है। —मानसरोवर-विनोद

वेग से चलती हुई गाड़ी रुकावटों को फाँद जाती है। --रंगभूमि

बचन से ज़बान नही कटती। लेख से हाथ कट जाता है।

—रंगभूमि

नाम के लिए तो गाय को माता कहने वाले बहुत है; पर ऐसे विरले ही देखें, जो गौ के पीछे जान लडा दे। —कायाकल्प

दुधारू गाय की लात किसे बुरी मालूम होती है। —निर्मला

कृतज्ञता हमारे से वह सब कुछ करा लेती है, जो नियम की दृष्टि मे त्याज्य है। यह वह चक्की है जो हमारे सिद्धान्तो और नियमो को पीस डालती है। आदमी जितना ही निःस्पृह होता है, उपकार का बोझ उसे उतना ही असह्य होता है। —रंगभूमि

अहिंसा का नियम गौओ ही के लिए नही, मनुष्यो के लिए भी होता है। —कायाकल्प

बड़ों की दुआएँ, सीधे अल्लाह के दरबार मे पहुँचती है, और तुरन्त सुनी जाती है। —मानसरोवर-ईदगाह

बडे-बूढो के आशीर्वाद निष्फल नही जाते। —कायाकल्प

रियायत राजनीति मे पराजय की सूचक है। —रंगभूमि

रियायत ... ...ात का घोषणा करना है। —रंगभूमि

दुश्मनो के साथ रियायत करना उनको सबसे बडी सजा देना है।

—कायाकल्प

राजनीति का क्षेत्र समर क्षेत्र से कम भयावह नही है। उसमे उतर-कर रक्तपात से डरना कापुरुषता है। —रंगभूमि

ज्योतिष मे बहुत कुछ पूर्व अनुभव और अनुमान से ही काम लिया जाता है। —कायाकल्प

यश लालसा से बढकर दूसरा नशा नही। —कायाकल्प

हम जीवन मे शाति की इच्छा रखते है, प्रेम और मैत्री के लिए जान देते हैं, जिसके सिर पर नित्य नगी तलवार लटकती हो, उसे शाति कहाँ?

—रंगभूमि

शाति राज्य मे नही, संतोष मे है। —कायाकल्प

मनुष्य के लिए वेकारी से बड़ा और कोई कष्ट नही है।

—कायाकल्प

बेकारी में जीवन नही कटा करता है। —मानसरोवर-प्रेरणा

बागी का दिल बालू का मैदान है। उसमे पानी की एक बूद भी नही होती, और न उसे पानी से सीचा जा सकता है। —कायाकल्प

बहरा आदमी मतलब की वात सुनते ही सचेत हो जाता है।

—रंगभूमि